मृत आत्माओं से सम्पर्क
और
अलौकिक साधनायें
तांत्रिक बहल

# मृत आत्माओं से सम्पर्क और अलौकिक साधनाएँ

तन्त्र क्षेत्र में की जा रही व्यापक खोजों से हम आश्चर्यचकित अवश्य हो जाते हैं लेकिन वह अभूतपूर्व नहीं हैं। ज्योतिषीय और विज्ञान के ज्ञान से आकाश को नापा जाता है तो पदार्थ व तत्व की सूक्ष्म अवस्था और प्रकृति से अध्यात्म ने, तन्त्र ने अन्तश्चेतना को जगाकर, साधनाएँ करके अनेकों उपलब्धियाँ पाईं। हमारे प्राचीन ग्रंथों में लुप्त हो चुकी कुछ ऐसी ही शीघ्र सिद्धि प्रदान करने वाली साधनाएँ खोजकर लाये हैं जाने-माने '**तांत्रिक बहल**'।

आप इस पुस्तक में एकत्रित सामग्री को और लेखक के अनुभव को पढ़कर समझ सकेंगे कि उन्होंने इस विषय में कितने गहरे पैठकर यह सब कुछ पाया है और कितनी लगन से संजोकर आपके लिए प्रस्तुत किया है।

# समर्पण

अपनी सहयोगिनी, मार्गदर्शिका एवं धर्मपत्नी श्रीमती शीला बहल के साथ-साथ उन तन्त्र साधकों को भी जिनका सारा जीवन अशान्त आत्माओं को शान्त करने में बीता है।

—लेखक

---

आत्मा कभी नष्ट नहीं होती, वह कभी नहीं मरती परंतु यहाँ 'आत्मा' शब्द के साथ 'मृत' शब्द का प्रयोग केवल इसलिए किया जा रहा है ताकि पाठक यह समझ लें कि जो लोग मर चुके हैं, उन दिवंगत आत्माओं से सम्पर्क का ही विधान बताया गया है।

—तांत्रिक बहल

# मृत आत्माओं से सम्पर्क और अलौकिक साधनाएँ

परलोक गमन कर चुके अपने प्रियजनों की आत्मा का आह्वान करने की विधियाँ तथा शीघ्र सिद्धि प्रदान करने वाली कृत्या साधना, यक्षिणी साधना, अपराजिता साधना, तिलोत्तमा साधना इत्यादि अलौकिक विषयों से ओत-प्रोत।


लेखक :

**तांत्रिक बहल**


मूल्य 



**रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार ( उ. प्र. )**

*प्रकाशक* : **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार
फोन : (01334) 226297

*वितरक* : **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

*दिल्ली विक्रेता* : **गगन बुक डिपो**
4694, बल्लीमारान, दिल्ली-110006

*जम्मू विक्रेता* : **पुस्तक संसार**
167, नुमाइश का मैदान, जम्मू तवी (ज.का.)

संस्करण : सन् 2011

*मुद्रक* : **राजा ऑफसेट प्रिंटर्स**, दिल्ली-92

---



---

**MRIT AATMAO SE SAMPARK AUR ALOKIK SADHNAYE**

**WRITTEN BY : TANTRIK BAHAL**
**PUBLISHED BY : RANDHIR PRAKASHAN, HARDWAR (INDIA)**

# अनुक्रमणिका

## प्रथम खण्ड

## मृत आत्माओं से सम्पर्क



## द्वितीय खण्ड



———

## तांत्रिक बहल की अन्य जनोपयोगी कृतियाँ :

# दो शब्द

मेरा जन्म ऐसे क्षत्रिय परिवार में हुआ, जिसका पुश्तैनी कार्य है—नौकरी! मैं एक विदेशी बैंक में लगभग २३ वर्ष तक निरन्तर नौकरी करता रहा, बाद में तंत्र-मंत्र के प्रति झुकाव होने के कारण नौकरी छोड़ दी। शायद यह मेरे पूर्व जन्म का संस्कार था या फिर मेरे पिताश्री की प्रेरणा। मैं इस ओर निरन्तर बढ़ता गया। पुस्तक लेखन भी मेरा व्यवसाय नहीं है। मैं कोई व्यवसायी तांत्रिक भी नहीं हूँ। जीवन में भटक-भटक कर परिश्रम पूर्वक जो भी ज्ञान एकत्रित किया वही प्रस्तुत कर रहा हूँ। अघोरियों, तांत्रिकों, अवधूतों में मेरी रुचि बचपन से ही थी, उनसे जो भी अनुभव समय-समय पर प्राप्त किया वही जनहितार्थ प्रस्तुत करता आ रहा हूँ।

खेद का विषय है कि आज तंत्र एक शुद्ध व्यवसाय हो गया है। आये दिन तांत्रिक होटलों में रुककर या अपने निवास स्थान पर रहकर धुंआधार विज्ञापन कराते हैं। अपने पास वेतन पर कर्मचारी रखते हैं, यह अलग बात है कि उन्हें अपना भक्त बतलाते हैं। स्थिति यह हो गई है कि हर नगर या कस्बे में कोई न कोई तांत्रिक मिल जायेगा। तंत्र के नाम पर व्यभिचार, लड़कियाँ भगाने, उनसे विवाह करने, रुपया ठगने की बातें आये दिन प्रकाश में आती हैं। आज तांत्रिक कहलवाना गर्व की नहीं वरन् शर्म की बात बन गई है।

इन्हीं कारणों से तन्त्र की सत्यता दबकर रह गई है। भारत की यह प्राचीनतम, पवित्र विद्या अत्यन्त कराह रही है। इसी साधना के बल पर तांत्रिकों ने ब्रह्माण्ड देखा, करोड़ों मील दूर के

ग्रहों, धूमकेतुओं, आकाशगंगा को नंगी आँखों से देखा उनका विवेचन किया। यह तंत्र की मानसिक यात्रा थी।

"तंत्र सार" में तांत्रिक का रूप इस प्रकार वर्णित है—सौम्य मुद्रा, आभामय मुखमण्डल कठोर साधना से तप गया कान्तिवान शरीर, मृदुवाणी, शान्त स्वभाव, सामान्य वेश, घमंड से दूर मन होता है तांत्रिक का। वह दिखावा, विज्ञापन नहीं करता। साधारण जीवन जीता है। आज के व्यवसायी तांत्रिक ने यह सब कुछ उठाकर ताक पर रख दिया है।

इन्हीं सब बातों को उजागर करने और सर्वथा वैज्ञानिक तंत्र विद्या का वास्तविक प्रामाणिक रूप प्रस्तुत करने के उद्देश्य से इस पुस्तक का लेखन किया गया है। एक बात और यह पुस्तक आपको अन्य पुस्तकों से कुछ हटकर अनुभव होगी, जिसका मुख्य कारण है मेरा लीक से हटकर लेखन। जिन प्रयोगों, साधनाओं, यन्त्रों को लगभग हर लेखक ने भाषा और क्रम बदलकर प्रस्तुत किया है, वह मैंने इसमें नहीं दिये हैं। पुस्तक को मैंने नाम के अनुरूप बनाने का प्रयत्न किया है। मेरा यह विनम्र प्रयास आपको कैसा लगा? विज्ञ सुधी पाठक अवश्य लिखें।

**—तांत्रिक बहल**
(तंत्र सबके लिए मिशन)
डी-४, राधेपुरी, कृष्णा नगर
(जमुनापार) दिल्ली-११००५१

प्रथम खण्ड

# मृत आत्माओं से सम्पर्क

## १. जीवन क्या है?

**जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्वतः।**
**त्यकवा देहं पुर्नजन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥**

हे अर्जुन! यदि कोई जन्म (जीवन) और कार्यों को समझ लेता है तो केवल ऐसा व्यक्ति समझने के कारण यह नश्वर शरीर छोड़ने के बाद भी परमधाम को प्राप्त करता है।

पढ़ने अथवा सुनने से जीवन का वास्तविक रूप उजागर नहीं होता है। वह कैसा है? इसका भेद उस वस्तु को देख लेने पर ही प्रकट होता है? इसलिए जान लेना अथवा समझ लेना ही ज्ञान कहा जाता है और ऐसा ज्ञान ही मोक्ष धाम तक पहुंचाता है। कारण और महाकारण सृष्टि में प्रकृति के अनेकों ऐसे गुप्त भेद हैं जो कहने, सुनने, समझने और लिखने में बिलकुल नहीं आते हैं। जब तक वह सब आँखों के समक्ष न आ जायें तब तक आत्मा मोक्ष या परमधाम की अधिकारी नहीं होती है क्योंकि सत्य ही शिव है और शिव ही सुन्दर है। इस संसार में ज्ञान योग की सहायता से जीव पहले इस लीला का भली प्रकार अनुभव करता है, फिर आनन्दमय होता हुआ निजधाम (मोक्ष) को प्राप्त करता है। यही जीवन मुक्ति

है। यही गति है। इसलिए कहा जाता है कि ज्ञान से मुक्ति मिलती है। यही सत्य है इसलिए सुन्दर भी है। वास्तविक ज्ञान प्राप्त होने के साथ-साथ अनुभव भी होना चाहिए, क्योंकि यही ज्ञान मुक्ति देता है।

इस स्थान की मुख्य साधना यह है कि आत्मा से जो किरण फूटकर नीचे चलती है वह सबसे पहले इसी कोश में फैलती है फिर बहती हुई मनोमय, प्राणमय और अन्नमय कोश को चली जाती है। जहाँ-जहाँ यह पहुंचती जाती है, वहीं-वहीं प्रकाश व गति देती जाती है। इसी की टक्कर से मन व इन्द्रियाँ गतिशील होती हैं। फिर मन बुद्धि को भी अपने साथ घसीटने का प्रयत्न करता है इसके कारण से बुद्धि में भ्रम उत्पन्न हो जाता है जिसकी वजह से बुद्धि न ठीक तौर पर निर्णय कर सकती है और न ठीक-ठीक किसी वस्तु को समझ सकती है। जब तक मन का प्रवाह जारी रहता है तब तक बुद्धि उसके प्रभाव में रहती है, ऐसी स्थिति में बुद्धि की शक्तियाँ निर्बल हो जाती हैं और अपना काम ठीक-ठीक नहीं चला सकतीं। ज्ञानमार्गी मन व इन्द्रियों को स्थिर करता है। मन निश्चल होने पर बुद्धि भी निश्चल हो जाती है, मन व बुद्धि के निश्चल होने पर शरीर शान्त हो जाता है। हृदय में व मस्तिष्क में भी शान्ति भर जाती है।

इसलिए ही गीता में कहा है, प्राणियों! अगर संकटों के अन्त करने की इच्छा हो, यदि इस दुःखमय आवागमन के चक्र को समाप्त करने की लालसा हो, यदि अपने निजधाम में पहुंच कर सुख व शान्ति का मधुर रस पीने की चाहना हो तो मेरी शरणागति पकड़ो, मेरी आज्ञाओं का पालन करो और हृदय से सारी वासनाओं

को दूर कर उसे स्वच्छ व सुन्दर बना लो, फिर मैं तुम्हें उठा लूंगा और अपनी गोद में सुला लूंगा। तुम कृत-कृत्य हो जाओगे, और कोई अन्य उपाय तुम्हारे मोक्ष का नहीं है। सारे ज्ञानों का इतना ही सार है, जीवन का यही मुख्य धर्म है और वेद की संहिता व उपनिषद भाग में इतना ही है।

संसार में आकर्षित करने वाली जितनी भी वस्तुयें हैं उनमें उसी का अंश है, उसी की सुन्दरता को लेकर वह सुन्दर बनी हैं। बुद्धिमान वही मनुष्य है जो उसकी तलाश में घूम रहा है। उसकी ओर देखते-देखते एक ऐसी अवस्था आती है जिसमें मनुष्य की बुद्धि थक कर बैठ जाती है, शक्ति कुछ काम नहीं करती। इसको ही "असम्प्रज्ञात और शून्य समाधि" कहते हैं, इसके आगे साक्षात्कार होता है। जिस समय लोक व परलोक दोनों की सुधि जाती रहे तब समझना चाहिए कि भजन व भक्ति हुई और प्रेम का उदय हुआ। संतों के मुख से एक यह बात भी सुनने को मिलती है कि जो मनुष्य दुनिया में फंसा रहता है भगवान से वह बहुत दूर रहता है।

साधक समाधि की प्राप्ति के लिए अनेक प्रयत्न करते हैं, घर-बार छोड़ते हैं पर 'समाधि' हाथ नहीं आती। इसी के लिए कोई आसन लगाता है, कोई प्राण खींचता है, कोई मुद्राओं में समय नष्ट करता है और शरीर को अत्यन्त कष्ट देता है। कोई आँख ऊपर को चढ़ाता, कोई कान बन्द करता, कोई जिह्वा को तालू में लगाता, कोई यम-नियमादि अष्टांग योग में अपने को अटकाता है, कोई कुण्डलिनी जागरण के पीछे जुड़ा रहता है इत्यादि, वह भूल जाते हैं कि वह किसी न किसी जन्म में रहेंगे ही।

पतंगें लाखों में एक-दो ही कटती हैं। इसी तरह सैकड़ों साधक साधना करते हैं, पर उनमें एक या दो ही भवबन्धन से मुक्त हो पाते हैं। "होमा" नामक चिड़िया बहुत ऊँचे आसमान में रहती है, धरती पर कभी नहीं उतरती। वह आसमान में ही अण्डा देती है। अंडा नीचे गिरते हुए शून्य में ही फूट जाता है, और उसमें से बच्चा निकलकर नीचे गिरने लगता है। पर वह समझ लेता है कि वह नीचे गिर रहा है और झट ऊपर की ओर अपनी माँ के पास उड़ने लगता है। शुकदेव, नारद, ईसा, शंकराचार्य जैसे महापुरुष होमा पक्षी की तरह होते हैं। बाल अवस्था में ही ये संसार के सभी बन्धनों से मुक्त हो सर्वोच्च ईश्वरीय ज्ञान के दिव्य ज्योतिर्मय राज्य में जा पहुंचते हैं। अगर हम इस सनातन तथ्य को समझ लें तो जीवन का रूप ही बदल जाये! रामकृष्ण परमहंस ने कहा है—

सूप का स्वभाव है थोथे और असार को फेंककर सारवान वस्तु को रख लेना। सत्पुरुषों का स्वभाव ही ऐसा ही होता है। अगर शक्कर और बालू मिली हुई हो तो चींटी उसमें बालू को छोड़ शक्कर को ही ग्रहण करती है। इसी तरह परमहंस और सत्पुरुषगण अच्छे और बुरे के मिश्रण में से अच्छे को ही ग्रहण करते हैं। इसी प्रकार जब वृक्ष पर बाज आकर बैठ जाता है तो डर के कारण वहाँ की सारी चिड़ियाँ उड़ जाती हैं उसी तरह प्रेम भाव के जन्म लेते ही हृदय के सारे विकार बिना किसी उद्योग के नष्ट हो जाते हैं। प्रेम रूपी सूर्य के उदय होते ही अन्धकार अपने आप छट जाता है। इसको ही 'समाधि' कहा जाता है जो प्रेम में बिना बुलाये ही आ जाती है। पहले इसे समझ लें वास्तविक अर्थ स्वयं ही समझ में आ जायेगा। समाधि का अर्थ है—व्यवहार व परमार्थ में

समता ले आना और यही साम्यावस्था 'समाधि' मानी जाती है, इसमें जड़ता व अज्ञानता नहीं रहती।

दूसरी समाधि वह मानी जाती है जिसमें मन व बुद्धि का संगम 'आज्ञा चक्र' में होता है। यहाँ से समाधि की शुरुआत होती है आगे इसके अनेक भेद हो जाते हैं। गीता कहती है—कि संसार के किसी भी पदार्थ में विशेषता दिखलायी दे तो उसको मेरी ही विभूति समझना चाहिये। जैसे तुम्हारी आँख ने एक सुन्दर रूप को देखा, उसका प्रभाव आँख के द्वारा दिल पर पड़ा, वह उस पर मुग्ध हो गया और उधर को खिंचने लगा पर समझ न सका कि यह क्या वस्तु है, इस ज्ञान को प्राप्त करने के लिए मन-बुद्धि की शरण में गया, वह भी अपना विवेक लिए हुए अपने स्थान से उतर कर आज्ञा चक्र में आई ताकि उसे समझे, मन भी उसके साथ आया और दोनों मिल के अपने-अपने निज कामों को त्याग उसी ओर आकर्षित हो गये, और थोड़ी ही देर में इतना खिंचे कि अपने को भूल बैठे। जीवात्मा तो मन के साथ बँधा ही हुआ था, वृत्ति के साथ ही वह अपना रूप बदलता रहता है यह जीव का गुण है। एक विद्वान ने कहा है—

एक बार भगवान का नाम सुनते ही जिसके शरीर में रोमांच उत्पन्न होता है और आँखों से प्रेमाश्रु की धार अविरल बहने लग जाती है, उसका यह निश्चित ही आखिरी जन्म है।

यह दृष्टान्त मैंने सांसारिक वस्तु का दिया है।

प्राय: लोग अपने कर्तव्य और सामर्थ्य पर गर्व रखते हैं इसलिए वह वस्तु उसके लिए दूर होती जाती है, ऐसे साधकों में प्रेम रस की जरा भी झलक नहीं होती, उनकी साधना नीरस होती

है। प्रेम न होने से आकर्षण उनमें नहीं फूटता ऐसे साधक अधिकतर प्राणमय और मनोमय से आगे नहीं बढ़ पाते और अटक कर रह जाते हैं। सूक्ष्म माया के रूप दिखाई दे जाते हैं और यह व्यर्थ ही है वह प्रभु को खींच कर ला नहीं सकती।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस के शब्दों में दुनिया में ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने बर्फ के बारे में सिर्फ सुना है, बर्फ को आँखों से देखा नहीं है, इसी प्रकार ऐसे अनेक धर्म प्रचारक हैं जिन्होंने ईश्वरीय तत्व के बारे में शास्त्र में पढ़ा भर है, अपने जीवन में उसका प्रत्यक्ष अनुभव नहीं किया। फिर ऐसे अनेक प्रचारक हैं जिन्हें ईश्वर की महिमा का दूर से थोड़ा सा आभास तो मिला है परन्तु उनके यथार्थ स्वरूप का बोध नहीं हुआ है। जिसने बर्फ खाई हो वही बर्फ के गुण-धर्म ठीक-ठीक बतला सकता है, इसी तरह जिसने शास्त्र, दास्य, सख्य, मधुर आदि विभिन्न सम्बन्धों के द्वारा ईश्वर को विभिन्न भावों में प्राप्त किया है, जो उनमें विलीन होकर एक हो गया है, वही उनके गुणों का यथार्थ रूप से वर्णन कर सकता है अन्य नहीं?

लोक परलोक की कोई वासना उसे नहीं सताती, केवल एक मिलन वासना शेष रहती है। 'सत्, रज, तम' का चक्र तो यहाँ भी रहता है। 'सत्' यहाँ प्रधान हुआ तो प्रभु के मुखड़े को देख आनन्द में मग्न हो गए और जब 'रज व तम' के बादल आ गए तो रोने चिल्लाने लगे प्रभु को यहाँ-वहाँ ढूँढ़ने लगे, जो एक बार जीवन से परे पहुंच गया वह मोक्ष को पाकर ही दम लेता है।

मोक्ष चाहने वाले प्राणी को समर्पण और प्रार्थना यह दो साधन करने होते हैं। जो कुछ अब तक जाना है, उसे भूल जाओ

और जो कुछ अपने को सामर्थ्यवान समझते हुए अब तक कर रहे हो उसे छोड़ बैठो, केवल आश्रय ले लो और बारम्बार श्रद्धा व विश्वास के साथ सच्चे हृदय से विनती करते रहो।

गीता में भगवान कृष्ण अर्जुन को उपदेश दे रहे हैं—

**चैतसां सर्व कर्माणि मयि संन्यस्य मत्परः।**
**बुद्धियोग मुपाश्रित्य मन्चितः सनतं भव॥**
**दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धि योगाद्धनंजय।**
**बुद्धो शरणमन्विच्छ कृपणाः फल हेतवः॥**

हे धनंजय! तू जो कुछ भी करे मेरे ही निमित्त कर और मेरा ही ध्यान हर समय रख, अपने लिए कुछ न कर इस बुद्धियोग का तू आश्रय ले, यह कल्याण का मार्ग है। बुद्धियोग से कर्मयोग बहुत ही निचला है। तुम फल की ओर देखो, हानि-लाभ में हार-जीत में समान बुद्धि रखकर अपना कर्तव्य पालन किये जाओ, यह सारे साधनों से ऊँचा साधन है। इसी का नाम 'बुद्धियोग' है।

जीवन क्या है? इस प्रश्न का उत्तर है—

शरीर का संयम, प्राण का संयम और, बुद्धि का संयम। शरीर संयमी बनाने की स्थिति का दूसरा नाम जीवन है। शरीर में जब तक प्राण हैं तब तक जीवन है, अन्यथा मृत है।

**प्राण क्या है?**

जिस अन्न को हम खाते हैं वह पेट में चला जाता है वहाँ पर नाभि में रहने वाली जठराग्नि उसे पकाती है और चन्द घण्टों के अन्दर उस अन्न का स्थूल भाग मल-मूत्र, पसीने इत्यादि के द्वारा बाहर चला जाता है और उसका वास्तविक तत्व भीतर रह जाता है उसी जठराग्नि के द्वारा शक्ति के रूप में बदल जाता है और प्राण

वही स्रोतों द्वारा शरीर के सारे अंगों में प्रवाहित होता रहता है। साधारण लोग प्राण का अर्थ वायु कहते हैं, चूंकि हवा हमारे जीवन के लिए सबसे आवश्यक है इसलिए अगर हम उसे प्राण के नाम से पुकारने लगे तो कोई बुराई नहीं है परन्तु प्राण उस शक्ति का नाम है जो हमें जीवन देती है, इसी को 'जीवनी शक्ति' कहते हैं।

जीवनी शक्ति का बहुत बड़ा भण्डार इस ब्रह्माण्ड की चोटी पर है वहाँ से सीधी ब्रह्मरन्ध्र के द्वारा पिंड में प्रवेश हो अपने-अपने केन्द्र पर इकट्ठी होती है, इसी को सुरति, कुण्डलिनी शक्ति और आद्याशक्ति इत्यादि कहते हैं। मुख्य प्राण शक्ति इसी का नाम है।

आगे वही धार चलती हुई पिंड में आती है और पांव तक चली जाती है।

यह जीवन शक्ति ब्रह्माण्ड से जब पिण्ड में उतरती है तो वह चोटी के स्थान से प्रवेश हो उसके एक इंच नीचे अपना एक केन्द्र बनाती है फिर वहाँ से चलकर मस्तिष्क में कई स्थानों पर ठहरती हुई यौगिक तक आती है। नाड़ियों की संख्या ऋषियों ने बहत्तर लाख बतलाई है। इन नाड़ियों में तीन नाड़ी मुख्य मानी जाती हैं जिनके नाम हैं—इड़ा, पिंगला व सुषुम्ना। यह तीनों नाड़ियां मस्तिष्क के केन्द्र से निकल के मेरूदण्ड (रीढ़ की हड्डी) में गुथी हुई नीचे को गुदा के स्थान तक चली गई हैं और वहाँ मिल के तीनों एक ग्रन्थि की शक्ल में आ गई हैं आगे इनका बहाव रुक जाता है और इनके भीतर से अनेकों छोटी-छोटी नाड़ियां नीचे पांवों की ओर चली जाती हैं।

साधारण स्थिति में प्राण का बहाव इड़ा व पिंगला में ही रहता है, योग साधन करने पर कुण्डलिनी की धार सुषुम्ना में आ जाती है। पिंगला में प्राण जाने पर हृदय व इन्द्रियों में रजोगुणी प्रभाव उठ खड़ा होता है और इड़ा में बहाव होने पर तमोगुण आच्छादित हो जाता है। पिंगला का नाम सूर्य नाड़ी और इड़ा का नाम चन्द्र नाड़ी है। यह नाड़ी विद्वानों के अनुसार नील वर्ण की है। यहाँ बीज अक्षर 'र' है जिसका वाहन 'मेढा' है। प्रधान तत्व 'अग्नि' है। अग्नि वायु से मिल के मेढ़े की चाल चलके 'र' शब्द पैदा करती है। यह चक्र त्रिकोण है। यहाँ के दस दलों से 'ड' से 'फ' तक वर्णमाला के दस अक्षर निकलते हैं। यहाँ का चैतन्य अधिष्ठाता विष्णु और अधिष्ठात्री शक्ति वैष्णवी के नाम से जानी जाती है।

माया का चौथा ठहराव लिंग में है। इसको 'स्वाधिष्ठान कहते हैं।' इस चक्र का रंग गुलाबी बनावट अर्धचन्द्राकार है। बीज अक्षर 'ब' है। वाहन 'मगर' प्रधान तत्व 'जल' है। 'ब' शब्द उत्पन्न करती है। यहाँ का रंग चन्द्रमा की तरह श्वेत है, इसके दलों से 'ब' से लेकर 'ल' तक के अक्षर सुनाई देते हैं। यहाँ का अधिष्ठाता देव 'ब्रह्मा' और अधिष्ठात्री देवी 'ब्राह्मी शक्ति' बोली जाती है। उत्पत्ति का सिलसिला यहाँ से ही सम्बन्ध रखता है।

यहाँ पाचवाँ स्थान गुदा और अण्डकोष के बीचों-बीच पीछे की ओर है। यहाँ का प्रधान तत्व पृथ्वी है। रंग मटमैला पीला है। इसमें चार दल हैं इसलिये इसको 'मूलाधार' कहा जाता है। इसका बीज अक्षर 'ल' है, वाहन हाथी है। इसके दलों से चार अक्षर 'ब' से लेकर 'स' सुनाई देते हैं। यहाँ का अधिष्ठाता देव 'गणेश' और

अधिष्ठात्री देवी 'डाकिनी' बोली जाती है। यह स्थान दोनों भृकुटी के मध्य में है इसका नाम 'आज्ञा चक्र' है। यह आधा स्थूल है और आधा सूक्ष्म है। इसका वर्ण श्वेत शुक्र तारे की तरह गोल है। इसमें ऊपर नीचे दो दल हैं जिससे 'ह' और 'क्ष' दो अक्षर निकलते हैं।

यह वह खिड़की है जिसमें होकर जीवात्मा पिंड में उतरता है। मुसलमान सूफी इसको 'नफ्स नातिक' का स्थान मानते हैं। हठयोग के ग्रंथ यहां से ॐ शब्द का निकलना बतलाते हैं परन्तु सन्तमत ॐ का स्थान त्रिकुटी में बतलाता है जो सहस्त्रदल कमल से ऊपर विज्ञानमय कोश में है। अभ्यास करने में यहाँ पर घण्टे का नाद सुनाई देता है। इसके बाद परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी। परा संकेत मात्र होती है। पश्यन्ती हृदय की आवाज है जो सूक्ष्म रूप से विचार की शक्ल में भीतर ही उठती है, मध्यमा कंठ में अपना रूप धारण कर शब्द का सूक्ष्म रूप बनाती है और वैखरी जिह्वा पर स्थूल शब्द धारण कर बाहर जगत में प्रकट हो जाती है। यह आध्यात्मिक रहस्य है पर अगर साधक को कोई दुष्ट स्त्री अपने मोहजाल में फंसा ले तो क्या होगा? जिस प्रकार पके आम को जोर से दबाने पर गुठली और गूदा फट से निकलकर दूर तक छिटक जाता है, हाथ में केवल छिलका ही रह जाता है उसी प्रकार, ऐसी स्त्री के हाथ पड़ते ही साधक का मन झट ईश्वर से हट जाता है, देह भर पड़ी रह जाती है।

इसको ही मृत्यु कहते हैं और इससे पहले का समस्त समय 'जीवन' है, मृत्यु और जीवन के मध्य आने वाले समस्त पड़ाव अनुभव हैं। यह सत्य है सबके अनुभव समान नहीं हो सकते, अपने-अपने तरीके से अनुभव प्राप्त करना ही 'जीवन' है।

## २. क्या मृत्यु के बाद जीवन है?

**अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण से प्रशन किया—प्रभु! आपका जन्म तो अभी हुआ है और सूर्य का जन्म बहुत दिन पहले हुआ था, मैं किस प्रकार मानूं कि सूर्य को वह योग आपने ही बतलाया था?**

> कृष्ण बोले—हे पार्थ! मेरे व तुम्हारे अनेक जन्म हो चुके हैं, मुझे वह सब याद हैं और तुम भूल गये हो। मैं अजन्मा, अविनाशी, सम्पूर्ण प्राणियों का स्वामी और अपनी प्रकृति से स्थित हूँ तथा अपनी माया से जन्मता हूं। जो मेरे इस अलौकिक रूप, जन्म और कर्म का तत्व जानता है वह मृत्यु होने पर फिर जन्म नहीं लेता और मुझमें ही लीन हो जाता है!

गीता विश्व का सबसे प्राचीन और सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक ग्रंथ माना गया है। यह महाभारत का ही एक अंश है। कब महाभारत हुई? कब महाभारत के अन्तर्गत गीता का लेखन हुआ, यह सब विवादास्पद है। पर हजारों वर्ष पूर्व की बात अवश्य प्रमाणित होती है। गीता की मूल रचना संस्कृत में हुई है। संस्कृत कैसी समृद्ध और उन्नत भाषा थी। कब उसका विकास हुआ और कितने समय तक उसका एक छत्र प्रचलन रहा? इसका इतिहास तो महाभारत से भी पीछे जाता है।

आशय यह है कि हजारों वर्ष पहले ही इस देश के तपस्वियों

एवं मनस्वियों ने 'आत्मा' का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। उनके मतानुसार आत्मा, अजर, अमर, अदृश्य, अकाट्य है। मृत्यु केवल परिवेश (चोला) परिवर्तन है अर्थात् मृत्यु के बाद जीवन का अस्तित्व हजारों साल पहले ही यहाँ के तपस्वीगण स्वीकार कर चुके थे। आज भी इस पर बहस है कि क्या मृत्यु के बाद भी जीवन है? इस प्रश्न का उठना स्वाभाविक है। कारण कि यह जिज्ञासा हर एक में एकदम स्वाभाविक है कि मरने के बाद आखिर होता क्या है? मृत्यु अनिवार्य है, प्रत्येक जीव-जन्तु सजीव या निर्जीव (अचल-स्थिर) की मृत्यु अनिवार्य है। कछुआ सैकड़ों साल जीता है। सर्प हजारों साल, पेड़-पौधे अपनी-अपनी किस्म के अनुसार, पहाड़, घाटियाँ, नदियाँ लाखों वर्ष के बाद समाप्त हो दूसरा रूप धारण करती हैं। कुछ जीवों का जीवन दो-चार क्षणों का ही होता है। सब का अपना एक निश्चित समय है। आशय यह है कि मृत्यु सब की अनिवार्य है। कुछ अपवाद अवश्य हैं। हिमालय करोड़ों वर्षों से खड़ा है और प्रयागराज का अक्षयवट पृथ्वी के उद्गम समय से है। इनकी आयु का ही पता नहीं। जो भी हो मृत्यु तय है, पर उसके बाद क्या होता है? इस पर चर्चा बराबर चली आ रही है।

आत्मा अजर, अमर, अकाट्य है। शरीर छोड़कर (मृत्यु होने पर) वह कहाँ चली जाती है? क्या होता है? काफी गहन छानबीन के बाद भी वैज्ञानिक इन प्रश्नों का उत्तर नहीं पा सके हैं। आत्मा क्या है? कैसी है? कुछ पता नहीं चल पा रहा है। गीता में जिस प्रकार का वर्णन किया गया है, शायद वैसी ही है।

उसके रूप-रंग, आकार-प्रकार, वजन, गति, क्रिया-कलाप

आदि का कोई भी प्रमाण न होने के बावजूद इस आत्मा का अस्तित्व सभी दृष्टिकोण से प्रमाणित है, आत्माओं के अस्तित्व का सबसे सबल प्रमाण पुनर्जन्म है। पुनर्जन्म के प्रमाण सैकड़ों हैं। यह प्रमाण आत्मा का अस्तित्व प्रमाणित करते हैं। पुनर्जन्म की यह घटनाओं पर काफी अनुसंधान किया जा चुका है और जब भी कोई ऐसी रोमांचक घटना होती है, तो विश्व के जाने-माने परामनोवैज्ञानिक अनुसंधान करते हैं। उनके अनुसंधान पुनर्जन्म को प्रमाणित करते हैं। तिब्बती लामा तो अपने अस्तित्व से ही पुनर्जन्म मानते आये हैं। जब भी उनका गुरु (दलाई लामा) मृत्यु को प्राप्त होता है। वह उसकी खोज प्रारम्भ कर देता हैं कि कहाँ उसने जन्म लिया है। इसका पता लामागण बड़ी ही विचित्र विधि से करते हैं। पहले तो वह दलाई लामा के मरने पर दिशा का ज्ञान करते हैं। यह कार्य वह अपने हस्तलिखित धार्मिक ग्रंथों के आधार पर करते हैं। दिशा ज्ञान होने पर वह उस दिशा की ओर निकलते हैं। इसके लिए भी वह एक निश्चित दिन और समय चुनते हैं। इसके बाद वह उस समय में जन्मे शिशुओं की तलाश करते हैं, जब कि लामा गुरु ने प्राण त्यागे होते हैं। इस मुहूर्त में जन्मे शिशुओं का वह सूक्ष्म निरीक्षण करते हैं। मुखाकृति और हाव-भाव देखते हैं। इस प्रकार केवल कुछ ही शिशु रह जाते हैं, जिनमें से वह अपने गुरु को खोजते हैं। इस प्रकार चुने गये शिशुओं के आगे (एक-एक शिशु करके) वह मृत लामा गुरु की पवित्र वस्तुएँ रख देते हैं और देखते हैं कि शिशु पहले किस वस्तु को उठाता है। जपमाला को सबसे पहले उठाने वाला शिशु ही उनके गुरु का पुनर्जन्म का होता है। माला को उठाकर श्रद्धा से देखने

वाले बालक को ले आते हैं। इस प्रकार लामाओं का अपना सिद्धांत है और वह प्राचीन काल से ही इस सिद्धांत पर अमल करते आये हैं।

जब पुनर्जन्म है तो, अवश्य ही मृत्यु के बाद जीवन है। जीवन है तभी तो वह आत्मा फिर नया शरीर धारण करती है। बिना जीवन के यह संभव नहीं है। अब प्रश्न यह है कि मृत्यु के बाद और पुनः जन्म लेने के बीच का जो समय है, जीवन है, वह क्या है? कैसा है? इस पर अभी भी रहस्य का पर्दा पड़ा है।

पुनर्जन्म की सुप्रसिद्ध घटना सुख संचारक क. (प्रा) लि. मथुरा उ. प्र. की है। यह औषधि निर्माण करने वाली एक प्रमुख कम्पनी है। इसके संचालक की छुरा मारकर हत्या कर दी गई। चार साल बाद एक बालक ने स्वयं को इस कम्पनी का मालिक बतलाना शुरू कर दिया। उसने पूर्व जन्म की सारी कथा सुना दी। मथुरा आकर सब कुछ पहचान लिया। उसके शरीर पर जन्मजात छुरे के घाव के चिह्न थे। ठीक वहीं थे, जहाँ उसको छुरा मारा गया था। पुनर्जन्म का यह अत्यन्त प्रामाणिक मामला था। वह बालक यह न बतला सका कि मरने के बाद कहाँ रहा और कैसे आया? इसी प्रकार कानपुर के एक डाक्टर ने अपनी पत्नी की हत्या कर उसको संदूक में बंद करके रेल से फेंक दिया। दुर्भाग्य से ट्रंक पुल के रेलिंग पर अटक गई। नदी में जाकर न गिरी। लाश पुलिस के हाथों पड़ गई। डाक्टर पकड़ा गया। मुकदमा चला। सर्वोच्च न्यायालय तक मुकदमा गया। काफी समय लग गया। इसी मध्य एक लड़की ने जन्म लेकर अपनी राम कहानी सुनानी शुरू कर दी कि किस प्रकार उसे मारकर संदूक में बंद कर फेंका गया। उसने

अपने शरीर के चिह्न भी दिखलाये इसी आधार पर डाक्टर को सजा हो गई।

यह घटना पुनर्जन्म का सबसे सबल प्रमाण है। आशय यह कि पुनर्जन्म प्रमाणित है। सभी प्राणी मरने के बाद जन्म लेते हैं, पर पता करोड़ों, लाखों में एक-दो का लग पाता है। इसका अपना कारण और सिद्धांत है। इसकी व्याख्या हिन्दू धर्म में भली-भांति की गई है। संसार में कुछ ८४ लाख जीव योनियाँ चींटी से लेकर हाथी तक बतलाई गई हैं और प्रत्येक जीव अपने-अपने कर्मानुसार और अपने जीवन की अन्तिम क्रिया स्वरूप ( वासना) पुन: जन्म ग्रहण करता है। अतएव यह आवश्यक नहीं है कि मनुष्य योनि में ही उसका पुन: जन्म हो। मनुष्य जीवों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इसका कारण हिंदू धर्म में कहा गया है कि मनुष्य जन्म बड़े पुण्य और तपस्या से मिलता है। इस कारण प्रत्येक मरने वाला मनुष्य पुन: मनुष्य योनि में ही जन्म ले, यह नियम बनता नहीं है। लामा गुरु अपने कर्मों के कारण पुन: मनुष्य रूप लेते हैं। अतएव उनको खोज लिया जाता है। दूसरे किस योनि में पड़ते हैं, क्या पता? पर यह निश्चित है कि पुनर्जन्म होता है। यही पुनर्जन्म इस बात को प्रमाणित करता है कि मृत्यु के बाद जीवन है। मृत्यु और पुनर्जन्म के बीच का समय विवादास्पद है, पर कुछ न कुछ जीवन तो है।

पुनर्जन्म के सम्बन्ध में एक तथ्य यह है कि जातक जब तक अबोध रहता है, तब तक उसे अपना पूर्व जन्म का लगभग सारा ज्ञान हो जाता है पर संसार के सम्पर्क में आते ही चेतना ज्ञान बढ़ते ही वह सब कुछ भूल जाता है। नवजात शिशु की मुद्राएं भी बड़ी आश्चर्यजनक हैं। किसी भी निद्रामग्न नवजात शिुश (जब तक

वह केवल माँ का दूध पीता है, केवल तब तक) का चेहरा देखो। रोता, हँसता, मुस्कुराता दिखलाई पड़ेगा। उसके मासूम चेहरे पर एक के बाद एक नाना प्रकार के भाव आते-जाते स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ेंगे। वह चौंकता, घबराता भी दिखेगा, पर जैसे ही वह सांसारिक अन्नजल ग्रहण करने लगता है, उसके सारे हाव-भाव स्वयं लुप्त हो जाया करते हैं। वह स्वप्न अवश्य ही देखता है, पर चेहरे पर भाव नहीं आते हैं। लगता है वह अपने पूर्वजन्म के दुख-सुख का स्मरण कर हँसता-रोता है। साँसारिक सम्पर्क (अन्नप्राशन) होते ही अपने पूर्व जन्म की, स्मृतियों से वह मुक्त हो जाता है। करोड़ों, लाखों में से कोई दो-एक याद रख पाते हैं।

आत्मा का अपना अस्तित्व है। वह अपना शरीर बदलती रहती है।

शरीर बदलने का यह क्रम भारतीय संस्कृति में कर्मानुसार माना गया है आश्चर्य की बात यह है कि हजारों-लाखों साल पहले ही भारतीय चिंतकों ने आत्मा का अस्तित्व स्वीकार कर लिया था और पुनर्जन्म की रहस्यमयी प्रक्रिया को भी जान लिया था। अवतारवाद भी तो पुनर्जन्म का एक रूप है। धर्म की स्थापना और अधर्म के नाश के लिए विष्णु ने अनेक प्रकार के अवतार एक प्रकार से पुनर्जन्म की ही पुष्टि करते हैं।

प्रत्येक दृष्टिकोण से यह प्रमाणित है कि आत्मा अमर है। प्रत्येक जीव की आत्मा शरीर के जर्जर होने पर उससे निकल कर दूसरे जीव शरीर में प्रवेश कर जाती है। इसी प्रक्रिया को पुनर्जन्म कहा है। सृष्टि में यह सनातन प्रक्रिया अहर्निश चल रही है। प्रतिक्षण जन्म-मरण, शरीर परिवर्तन का चक्र गतिशील है। सबसे

रहस्मय बात यह है कि जब आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में जाती है, तो दूसरा शरीर धारण करने से पूर्व अर्थात् मृत्यु के तत्काल बाद का जीवन या प्रक्रिया क्या है? मरने के बाद और जन्म से पहले की दुनिया कैसी है? कितनी (समय) है? क्या आत्मा शरीर त्याग करते ही दूसरे शरीर में चली जाती है, या फिर उसमें कुछ समय भी लगता है? समय लगता है, तो कितना? मृत्यु के बाद जीवन के यही रहस्यमय प्रश्न हैं।

भारतीय अध्यात्म के अनुसार प्रत्येक आत्मा को एक निश्चित दौर से गुजरना पड़ता है। इसलिए स्वर्ग और नरक का वर्णन सर्वत्र भारतीय प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। कर्म का फल अवश्य भोगना पड़ता है। भारतीय अध्यात्म में सात प्रकार के नर्क बतलाये गये हैं। 'गरुड़ पुराण' में इसका विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। कुछ चित्रों में भी कर्म का फल दिखाया गया है। मरने के बाद सजा भोगनी पड़ती है। लगभग इसी कारण संसार के सभी धर्म ग्रंथों में स्वर्ग-नर्क, जन्नत-दोजख, हेल और हेवन का उल्लेख अवश्य है।

क्या वास्तव में स्वर्ग-नर्क है? क्या वास्तव में आत्मा को अपने कर्मों का फल भोगने के बाद कर्मानुसार योनि में जाना पड़ता है? यह एक रहस्यमय गूढ़ प्रश्न है। और जो स्थिति मृत्यु के बाद की है वह यमराज की है। प्रत्येक व्यक्ति (जीव) को लेने यमराज के दूत आते हैं। यमराज का यह अस्तित्व संसार के सभी धार्मिक ग्रंथों में किसी न किसी रूप में मिलता है। यमदूत मनुष्य के 'प्राण' हरण करते हैं। यह एक ऐसा विश्वास है, जो संसार की सभी जातियों में पाया जाता है।

क्या सचमुच ऐसा कुछ है? यह ऐसा प्रश्न है, जो आज तक प्रमाणित नहीं हो सका है। इस प्रश्न का उत्तर सोचने से पहले आवश्यक है कि कुछ बातों का स्पष्टीकरण दिया जाये।

आज विज्ञान इतना आगे बढ़ गया है कि मानव शरीर के रोम-रोम का उसे ज्ञान है कि कहाँ क्या है? इसी आधार पर शल्य चिकित्सा (सर्जरी) के एक से एक चमत्कार सामने आ रहे हैं। इतना सब ज्ञान प्राप्त कर लेने के बावजूद यह विज्ञान 'आत्मा' के अस्तित्व को प्रमाणित रूप से नहीं पकड़ पाया है कि यह कहाँ है? विज्ञान यह नहीं कह सकता है—देखो, यह आत्मा है। उसका रूप-रंग, आकार-प्रकार, वजन, नाप-तोल बतला सके। विज्ञान इतना अवश्य स्वीकार करता है कि मनुष्य में कुछ है और वह 'कुछ' मृत्यु के तुरन्त बाद निकल जाता है।

यह 'कुछ' क्या है? विज्ञान आज तक नहीं पकड़ पाया है। जबकि यह कुछ मानव शरीर के लिए सब कुछ है। शरीर रचना में वर्णन मिलता है कि अमुक-अमुक है, पर जीव, आत्मा, प्राण का कोई वर्णन नहीं है। जीव, प्राण, आत्मा शरीर में कहाँ है? न उनका आकार है, न प्रकार।

एक उलझन और भी है।

जीव, आत्मा, प्राण। यह तीन शब्द बार-बार संसार के सभी आध्यात्मिक ग्रंथों में मिलते हैं। यह तीनों क्या एक हैं?

'आत्मा' की परिभाषा धार्मिक ग्रंथों में है। उसके अनुसार वह निर्मल निष्कलंक, शुद्ध मानी गई है। आत्मा को ही परमात्मा स्वरूप माना गया है। परमात्मा को पिता स्वरूप माना गया है। अतएव मनुष्य के समस्त कर्मों का फल 'आत्मा' भोगती है। यह

गलत है। कर्मों का फल आत्मा नहीं भोगती। तब कौन भोगता है? जीव। इस व्याख्या से स्पष्ट है कि आत्मा अलग है, जीव अलग है। प्राण, जीव को हम एक नहीं समझ सकते हैं। यह तीनों तत्व अलग-अलग हैं। यह तीनों तत्व मनुष्य के शरीर में विद्यमान हैं।

'प्राण' का अर्थ है, मनुष्य की वायु क्रिया और शरीर का संचालन। प्राण शरीर को गतिशील रखता है, इसी कारण प्राण निकल जाते हैं, तो शरीर निश्चेष्ट, निश्चल हो जाता है और उसका अंतिम संस्कार कर दिया जाता है। और अगर न किया जाये तो ये पार्थिव शरीर बदबू मारने लगता है। आम बोलचाल की भाषा में कहा भी जाता है, प्राण छूट गये।

'जीव' कुछ अलग ही तत्व है। इसी तत्व को अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है। इसी के लिए स्वर्ग-नर्क बनाया गया है। प्राण एक क्रिया है, जो शरीर जर्जर होते ही मिट जाती है। जीव प्राणी का अपना है इसे ही स्वर्ग-नर्क देखना पड़ता है।

'आत्मा' उनके साथ सम्बद्ध है, पर वह निष्प्रभावित रहती है। जिस प्रकार सूक्ष्म कण में और+और प्रोट्रोन रहते हैं। उसी प्रकार जीव और आत्मा संयुक्त हैं। अब इनमें कौन न्यूट्रान और कौन प्रोट्रोन अर्थात कौन-और कौन है, कहना कठिन है। जीव आत्मा संयुक्त है। जीव फल भोगता है और आत्मा निर्विकार अप्रभावित रूप में संयुक्त रहती है। आत्मा को हवा में ठंडक, धूप में गर्मी की तरह केवल अनुभव किया जा सकता है, देख पाना संभव नहीं है।

मृत्यु के बाद का जीवन कैसा है? इसको जानने के लिए वैज्ञानिकों, परामनोवैज्ञानिकों ने कोई कसर बाकी नहीं रखी है।

प्रत्येक सम्भव उपाय अपनाये हैं। हमारे परावैज्ञानिक (तांत्रिक) भूत-प्रेत, चुड़ैल, राक्षस जैसी वायवी हलचलों के पीछे आत्मा को मानते हैं। वह इसे आत्मा का छोटा-सा करिश्मा कहते हैं।

इस संसार में चमत्कार भी कम नहीं होते हैं। कुछ चमत्कार तो वैज्ञानिकों को भी आश्चर्य में डाल देते हैं। इस संसार में असंभव जैसा कुछ भी नहीं है। अनेक घटनाएँ इस प्रकार की घट जाया करती हैं कि अमुक व्यक्ति मर गया। डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। उसकी अर्थी उठाई गई। उसे श्मशान ले गये। चिता पर रखते ही उठकर बैठ गया। प्राण वापस आ गये। ऐसे लोगों से गहरी पूछताछ की गई। सबके अलग-अलग कथन थे। कुछ ने कहा—कुछ पता नहीं। शायद मैं सो गया था। मैं गहरी नींद में था। कुछ नहीं जानता। उठकर बैठ गया। आशय यह है कि निष्कर्ष पूर्णतः प्रमाणित नहीं है। यमराज, यमदूत, अदालत, स्वर्ग-नर्क भावना या हमारे अन्य संस्कारों का फल हो सकते हैं। मन में संस्कारों के कारण जम गया, इसी भावना के कारण जीव बेहोशी में यह सब देखता है। इस प्रकार की घटनाएँ प्रति हजार का ००.७ है। सबके अनुभव एक से एक विचित्र हैं। कोई समानता नहीं और कोई वैज्ञानिक आधार नहीं।

जो भी हो, पर कुछ न कुछ हलचल कुछ न कुछ क्रिया-कलाप अवश्य ही है। मृत्यु के बाद कुछ न कुछ अवश्य होता है। इसी हलचल का नाम जीवन है। अतएव यह सत्य प्रमाणित है कि मृत्यु के बाद जीवन है। यह क्या है? कैसा है? कहाँ है? इस पर विवाद है, पर जीवन का अस्तित्व अवश्य ही है। इस पर सब एक मत हैं।

# ३. मृत्यु और अकाल मृत्यु

**अग्नि पुराण का कथन है—अन्न, दही, शहद और उड़द से पिंड की पूर्ति करनी चाहिए। अगर एक वर्ष के भीतर अधिक मास हो जाए तो उसके लिए एक पिंड अधिक देना चाहिए।**

प्रेत पिंड तीन भाग करके उन्हें क्रमशः पिता, पितामह और प्रपितामह के पिण्डों में जोड़ दें। जो लोग पर्वत से कूद कर, आग में जलकर, गले में फाँसी लगाकर या पानी में डूबकर मरते हैं, ऐसे आत्मघाती और पतित मनुष्यों के मरने का अशौच नहीं लगता है। इसे एक सौ एक वीं मृत्यु अर्थात अकाल मृत्यु कहते हैं।

उपनिषद् एवं पुराणादि के अनुसार मनुष्य की मृत्यु या देह में निवास करना उसका समय निर्धारित होता है। कहने का उद्देश्य यह है योनि मानव का कर्म क्षेत्र है, और वह भोगने के विषय में ईश्वराधीन है। इसे भोगने के क्रम में मानव नया कर्म कर सकता है—यही योनि का फल है। मृत्यु का समय पूर्व निश्चित है, क्योंकि मानव जीवन समय से बंधा है। तब क्या अकालमृत्यु की भी एक सुनियोजित व्यवस्था है। नहीं? अगर अकाल मृत्यु की एक सुनियोजित व्यवस्था होती हो उसका नाम भी केवल मृत्यु होता 'अकाल' जुड़ने का मतलब ही अचानक है। मृत्यु के केवल

चार कारण हैं। इनमें तीन स्वाभाविक हैं, चौथा कारण 'अकाल' है। बौद्ध शास्त्रों के अनुसार मृत्यु इसलिए होती है कि आयु का क्षय हो गया है।

मनुष्य के पूर्व संचित कर्म और वासनांयें बीज रूप में सदैव विद्यमान रहती हैं। इसीलिए मानव देह प्राप्त होती है—ऐसा होना असंभव है कोई नरक से सीधे स्वर्ग में चला जाय अथवा स्वर्ग से नरक में चला जाय। यह सत्य है भविष्य को किसी ने देखा नहीं, पर हमें जीवन में जो सुख-सुविधा-सफलता मिल रही है, उसके पीछे कोई ना कोई कारण अवश्य रहा होगा। यह अन्तर क्या है? यह रहस्य जो सामान्य दृष्टि से समझ में नहीं आ सकता। इस रहस्य को जानने के लिए हमारे ऋषि मुनियों ने एक क्या अनेक जन्म स्वाहा कर दिये। क्या हम इतनी सरलता से समझ सकते हैं। नहीं! कदापि नहीं।

जिन लोगों की मृत्यु कष्टकर होती है, उनके विषय में यह अनुमान लगाया जाता है कि ऐसे बिन्दु से उनकी यात्रा का प्रारम्भ हो रहा है जो उनकी अकाल मृत्यु है, अशुभ है। प्राचीन काल में मानव की आयु लगभग सौ वर्ष मानी जाती थी, लेकिन असद् आचरण एवं पाप के कारण हमारी आयु का लगातार ह्रास होता गया। व्यक्ति जैसा होता है वैसा ही उसका आचरण एवं साधना शैली होती है।

मनुष्य के परलोक गमन की स्थितियों का अनुमान उसकी मृत्यु के समय से किया जाता है। जैसे पुण्यात्मा का जन्म अच्छे मुहूर्त में होता है, उसी प्रकार सत्कर्मियों की मृत्यु भी मोक्षप्रद ग्रहों के रहने पर हुआ करती है।

स्वर्ग सुन्दर है, नरक वीभत्स है। गर्मी दुःख का और तृप्ति सुख की सूचक है। नरक में अंधकार है और स्वर्ग में प्रकाश है। ऋग्वेद कहता है—"द्वे सृती अश्रृणवं पितृणामाहं देवानामुत मर्त्तानां ताभ्यामिदं विश्वमेजत् समेति यदंतरा पितरं मातरं च" अर्थात् मनुष्यों के स्वर्गारोहण मार्ग सुने हैं—एक पितरों का, दूसरा देवों का। सारे मनुष्य इन दो मार्गों से ही जाते हैं। मृत्यु के पश्चात् पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेंद्रियाँ, पाँच प्राण, मन और बुद्धि ये सत्रह अंग मिलकर एक सूक्ष्म शरीर बनता है, इसमें मन की प्रमुखता रहती है, बुद्धि सुप्त रहती है। मन अनुभव करने में सक्षम होता है।

पितृलोक भोग करके मनुष्य को फिर मनुष्य देह में आना पड़ता है, अर्थात् पितृलोक में निवास की अवधि समाप्त हो जाने पर वे आकाश में आयेंगे, आकाश से वायु में आयेंगे, फिर अभ्र से मेघ सदृश होकर वर्षा बिन्दुओं के जरिये पृथ्वी पर आ जाते हैं। पृथ्वी पर आकर वे धान्य में अंकुरित होकर मनुष्य के शरीर में जाकर वीर्य कण के रूप में परिणत होकर स्त्री के गर्भाशय में प्रकट होते हैं। यहीं से कर्म देह का निर्माण होता है। उपनिषद् का कथन है—मृत्युरपानो भूत्वा शिश्नं प्राविशत् अर्थात् मृत्यु अपान का रूप होकर मनुष्य के शिश्न में प्रवेश कर गया वैसे भी वायु–मलद्वार और उपस्थ मूत्रद्वार अपानवायु के ही अधिकार क्षेत्र हैं। मृत्यु के समय अपान ही सक्रिय होता है। वेदों ने एक सौ एक प्रकार की मृत्यु बतलाई है, विकृति को मृत्यु का सूचक माना है। यहाँ विषय के विस्तार के कारण हम सबका विवरण नहीं देंगे। इनमें एक सौ एकवीं मृंत्यु अकाल मृत्यु है। आप केवल इतना ही समझ लें।

भगवान वेद व्यास विष्णु पुराण में कहते हैं कि 'मृत्यु' भीख नामक अप्सराओं का अनुष्ठान एवं कार्य है।

मृत्यु प्रकृति की स्वाभाविक व्यवस्था है, परिवर्तन सृष्टि का रहस्य है। गति जीवन का लक्षण है। प्रकृति नये का निर्माण करने के लिए पुराने को समाप्त करना चाहती है, अगर संसार में यथास्थिति ही रहती है तो विकास नहीं होता तो विनाश भी नहीं होता और विनाश नहीं होता तो नया निर्माण कहाँ से होगा, इसलिए संसार को गतिशील रखने के लिए जन्म जितना आवश्यक है मृत्यु उतनी ही महत्वपूर्ण है।

गीता कहती है—जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य चः। मनुष्य देह को आधार मानकर चौदह भुवन माने गये हैं। इनका वर्गीकरण सत्व, रज और तमोगुण की प्रखरता या अनुपातिक मिश्रण के आधार पर किया गया है। इनमें सत्वगुण चेतन है, तमोगुण अर्ध-चेतन है और तमोगुण अचेतन है।

मनुष्य से आगे पिशाच योनि आती है। यही स्थिति राक्षस की है किन्तु राक्षस में रजोगुण अधिक होता है। देह पंच महाभूतों से पृथ्वी और जल से सम्पर्क रखते हैं इसलिए उसे सिद्धियाँ प्राप्त नहीं होतीं। मनुष्य या उससे नीचे के देह योनिज हैं, मातृगर्भ में नियतकालिक वास करने के पश्चात् उनका योनिमुख से निर्गमन होता है। इससे आगे के देहों के लिए इस प्रकार की व्यवस्था नहीं है। आठ सिद्धियाँ—अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, व्याप्ति, प्राकाम्य, ईशत्व, वशित्व है। इनके अलावा नौ प्रकार की तुष्टियां होती हैं जिनमें वर्तमान भूत, भविष्य को देखने की क्षमता, दूरदृष्टि, दूरश्रुति, कायव्यह, परकाया प्रवेश इत्यादि हैं।

जैसा मेरे निजी अनुभव में आया है—पिशाच, राक्षस, यक्ष, किन्नर और गंधर्वों को भी इन सिद्धियों और तुष्टियों में से कतिपय, उनके स्तर के अनुसार मिली रहती हैं। रजौविशाल या रजोगुण बहुल सृष्टि अर्धचेतन आती है। वनस्पति वर्ग। नरक में यातना के निम्न रूप हैं रौरव, महारौरव, कुम्भीपाक, कालसूत्र, तपन, असिपत्र, संघात और अवीचि आगे इनके भी अनेक भेद हो जाते हैं।

आज के नवीन परिप्रेक्ष्य में हम नरक या स्वर्ग की चर्चा करें तो यह पिछड़ेपन की बात होगी और कोई भी इन पर विश्वास नहीं करेगा। फिर भी हम इन पर विश्वास रखते हैं औरों के लिए यह काल्पनिक बात हो सकती है पर हमारे लिए यह ब्रह्म वाक्य है।

पाप का फल नरक और पुण्य का परिणाम स्वर्ग होता है। वेदव्यास जी ने इसके लिए कहा है—परोपकार: पुण्याय पापाय परपीडनम्।

गरुड़ पुराण एवं मार्कण्डेय पुराण के अनुसार नरक का विवरण प्रस्तुत है।

महावीची नरक रक्त का कुण्ड है। गौ-हत्या करने से यह नरक मिलता है। कुम्भीपाक खूब गर्म होता है। किसी की जमीन हड़पने वाले, ब्राह्मण की हत्या करने वाले इसी नरक में ढकेले जाते हैं। रौरव एक गड्ढे के रूप में है। झूठी गवाही देने वाले इसमें डाले जाते हैं। मंजूषा नरक लोहे की गर्म पेटी है। अप्रतिष्ठ नरक वह है जिसमें विष्ठा, मूत्र व पीव भरे रहते हैं। विलेपक नरक लाख की आग से जलता है। नशा करने वाले ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इसमें जलते हैं। महाप्रभ नरक में एक शूली होती है पति-

पत्नी में या अन्य स्वजनों में वैर कराने वालों को यह सजा दी जाती है। पश्यन्ती नरक में लोहे की जलती हुई बड़ी भारी शिला होती है जिसमें परस्त्री गमन करने वाले को दबाया जाता है। शाल्मली नरक में तीव्र नोंक वाले मजबूत कांटे होते हैं। इसमें पर पुरुष गामिनी स्त्रियों को डाला जाता है।

महारौरव नरक रौरव से अधिक भयंकर आग से तपता रहता है। दूसरे के मकान आदि में आग लगाने वाले इसमें डाले जाते हैं। तामिस्त्र नरक में अन्धकार छाया रहता है। चोरी करने वालों को यह नरक मिलता है। महातामिस्त्र नरक में घोर अन्धकार रहता है। माँ, बाप व मित्र की हत्या करने वाले विश्वासघाती लोगों को यह मिलता है। असिपत्र नरक में तलवार की धार के समान तीव्र धार वाले पत्तों के पेड़ रहते हैं। मित्रघाती इसमें पटके जाते हैं। करम्भबाल एक विशाल कुएँ के समान होता है। इसमें वध करने वाले डाले जाते हैं। काकोल नरक अपवित्र वस्तुओं से, विष्ठा, मूत्र व पीव आदि से भरे रहते हैं।

महाभीम नरक में सड़ाँध माँस और खून भरा रहता है। महावट नरक के भागी वे लोग होते हैं जो अपनी पुत्री का विक्रय करते हैं। तिलपाक नरक में तवे पर तिलों को सेंकने की तरह सेंका जाता है जिसमें दूसरों को पीड़ा देने वाले गिरते हैं। तैलपाक में खौलता हुआ तेल बहता है। मित्रों और शरणागत की हत्या करने वाला इसमें पकाया जाता है। वज्रकपाट में दूध में या अन्य खाद्य पदार्थों में मिलावट करके बेचने वालो को पीड़ा दी जाती है। निरुच्छवास नरक में हवा नहीं रहती। जो किसी को दिए जा रहे दान में बाधा डालता है वह इसमें डाला जाता है। अंगारोपचय में

दहकते हुए अंगारे रहते हैं। जो दान करने का वचन देकर नहीं करते वे इसमें गिराये जाते हैं।

महापापी नरक में मिथ्याभाषी लोग जाते हैं। पाप में मन लगाने वाले इस नरक के भागी होते हैं, क्रेकच नरक में बड़े-बड़े धारदार आरे होते हैं, जिनसे प्राणियों को चीरा जाता है। स्त्री से अनाचार करने वाले इसमें गिरते हैं। क्षुरधार में चारों तरफ और नीचे भी उस्तरे लगे रहते हैं। किसी गरीब या ब्राह्मण की भूमि हड़पने वाले इसमें गिराए जाते हैं। पेड़ों को काटने वाले वज्रकुठार नरक में जाते हैं। पेड़ों को काटने वाले और खाद्य पदार्थों में मिलावट करने वाले परिताप नरक में जाते हैं।

कालसूत्र नरक में वज्र के समान लोहमय सूत बिछा रहता है। नष्ट पितरों को पिण्ड न देने वाले और श्राद्ध न करने वाले भयंकर दुर्गन्ध और कुत्सित पदार्थों से भरे उग्रग्रन्थ नरक में तथा मांस भोजी गन्दगी से भरे कश्मल नरक में गिराये जाते हैं। किसी को विवशता का अनुचित लाभ उठाने वाले किसी को विषय समय में उत्पन्न आवश्यकता का नाजायज ब्याज लेने वाले दुर्धर नरक में जाते हैं। दूसरों के धन का हरण करने वाले वज्र महापीड़ नरक में जाते हैं।

उद्देश्य यह है कि असत्य भाषण, असत् भक्षण, व्यभिचार चोरी, परपीड़न और शोषण के परिणाम बुरे होते हैं। मरने के बाद तो विविध प्रकार की यातनाएँ दी जाती हैं, इसके अतिरिक्त इस जीवन में भी कई प्रकार के कष्ट भोगने पड़ते हैं। हमारी मान्यता के अनुसार पूर्वजन्म के पाप ही इस जीवन में रोग के रूप में आते हैं।

पुराण कहते हैं—जो लोग परोपकार करके सुखी होते हैं,

वह स्वर्ग भोग करके मानव योनि में आये हैं। हमारी प्रकृति सिद्धान्त से बंधी हुई है। शारीरिक कष्ट भोग रहे व्यक्तियों को देखकर इस बात की कल्पना कर सकते हैं कि नरक भी ऐसी ही यातना के प्रतीक हैं। इस संसार के दो रूप हैं एक है स्थूल जिसमें पाँच तत्वों का रूप है, दूसरा है सूक्ष्म जिसमें ये तत्व समाप्त हो जाते हैं तात्विक दृष्टि से देखा जाए तो स्वर्ग और नरक एक सी स्थितियों के नाम हैं। क्योंकि दोनों में भोग है। यह अलग बात है कि एक को हम दुःख मानते हैं, दूसरी को सुख।

यद्यपि सांसारिक आग्रहों से मुक्त होना सरल नहीं है। तथापि हभ इस रहस्य को जानने का प्रयत्न करें तो जान सकते हैं। हमारे प्राचीन ग्रंथों ने इस सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा है, आवश्यकता केवल उसे समझने की है। हम इस मार्ग को समझने की चेष्टा कर लें तो सारा रहस्य स्वयं ही खुल जायेगा।

# ४. श्मशान प्रकरण

ओं ह्रीं चामुण्डे देवि! आप घोर धधकते श्मशान में वास करने वाली हैं। आपके हाथ में शस्त्र और कपाल शोभा पाते हैं। आप महान प्रेत पर आरूढ़ हैं। आप ही कालरात्रि हैं। आपका मुख विशाल है। अनेक भुजायें हैं। घण्टा, डमरू और घुंघरू बजाकर विकट अट्टहास करने वाली देवि! शक्ति दीजिए। शक्ति दीजिए। ओं हुँ फट्! शत्रुओं के माँस और रुधिर से पुष्ट हुई देवि! आपकी भयानक लाल जिह्वा लपलपा रही है। महाराक्षसि! आपका अट्टहास बड़ा भयानक है,

**आप भूत-प्रेतों से रक्षा हेतु चलिए! चलिए! ओं चकोर नेत्रे। चिलि, चिलि। ओं लाल जिह्वे। ओं मी। किलि किलि। ओं रूधिर माँस मद्यप्रिये! ओं किलि किलि! ओं खिलि खिलि। विलि ओं! आप नरमुण्डों की माला से वेष्टित जटा मुकुट में चन्द्रमा को धारण करने वाली देवी! आप मेरे समस्त कार्यों को सिद्ध करें।**

## भूत-प्रेतों का संसार

प्रेत शब्द का अर्थ 'गत'। 'प्र' और 'इत' में गुणसन्धि करके प्रेत शब्द बनता है। भूत शब्द, जो लगभग प्रेत का पयार्य बन गया है व्याकरण की दृष्टि से इसका सूचक नहीं बनता, किन्तु आम बोल चाल में यह शब्द प्रेत का वाचक बन गया है।

मृत्यु एक प्रकृति प्रदत्त स्वाभाविक प्रक्रिया है जिसकी हम सभी प्रतीक्षा करते रहते हैं। पुराणों और उपनिषदों में मृत्यु का विशद् वर्णन मिलता है वास्तव में हमारे जीवन का अस्तित्व हमारे भीतर विद्यमान उन चक्रों की सक्रियता पर आधारित है, जो तत्वों का प्रतीक होने के कारण नियामक स्थिति प्राप्त किये रहते हैं। उनमें अवरोध आने पर ही देह के व्यापार रुकते हैं। इन चक्रों को बाहर का कोई भी प्रयास प्रभावित नहीं कर सकता इसलिए मृत्यु पर अब तक विजय नहीं पाई जा सकी है।

हमारे जीवन की घड़ी श्वासों पर ही चलती है। ज्योतिष इसी आधार पर आयु का निर्णय किया करता है। बचपन में श्वाँस की गति तीव्र होती है, श्रम के कार्य करने पर श्वास अधिक पड़ते हैं,

इन सारे कार्यकलापों और प्रक्रियाओं को ध्यान में रखकर ही आयु का निर्णय किया जाता है।

शरीर का अन्त जब होता! है तो हृदय अपना काम करना बन्द कर देता है यही 'मृत्यु' है। प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान ये पाँच नाम वातदोष के हैं जो हमारे शरीर में विद्यमान हैं। इनमें बाहरी जगत से सम्बन्ध रखने वाली केवल वायु है जो श्वांस के रूप में आती जाती है। मृत्यु के समय शेष अंग प्राण में सिमट आते हैं, क्योंकि निकलने के लिए प्राण ही तैयारी करता है। मृत्यु के समय प्रायः कष्ट नहीं होता है। हाँ, कष्टकर स्थिति दो कारणों से होती है—एक तो प्राण और अपान के बीच में समान वायु का स्तर रहता है दूसरा कारण यह कि दोनों स्थिति में एक वायु को विपरीत मार्ग से निकलना पड़ता है। यही कष्ट का कारण बनती है और हमें बेहतर कष्ट होने लगता है।

विश्वास किया जाता है कि ऊर्ध्व वायु के मार्ग से जिनका जीव निकलता है वे ऊर्ध्व लोक में जाते हैं और अपान वायु के मार्ग से जिनका जीव प्रस्थान करता है वे अधोलोक में जाते हैं। ऊर्ध्वांग से जिनका जीवन निकलता है उनके वे अंग खुले रह जाते हैं और अपान वायु के रास्ते से प्राण निकलने पर व्यक्ति के मल-मूत्र आ जाता है। ऐसा कोई पुण्यवान होता है जिसके प्राण ब्रह्म रन्ध्र को भेद कर प्रस्थान करते हैं।

हमारे यहाँ मृतक के संस्कार कराने की एक पुरानी परंपरा है। मृतक का सम्बन्ध मरते ही समाप्त नहीं हो जाता, उसके बाद श्राद्ध की मर्यादा प्रचलित है। हम दूब की तरह वंश परम्परा में बंधे हुए हैं।

इस संसार के चौदह लोक माने गये हैं। इनमें सात अधोलोक और सात ऊर्ध्व लोक होते हैं। गायत्री मन्त्र में 'भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम्' यह व्याहृतियाँ सात लोकों के ही नाम हैं अधोलोकों में तल, अतल, वितल, सुतल, तलातल, पाताल ये लोक हैं। अधोलोक धरती के नीचे हैं और ऊर्ध्वलोक आकाश में हैं। ऊर्ध्वलोक हो या अधोलोक, इनमें पहुंच कर हमारी देह का अस्तित्व निरर्थक हो जाता है।

पुराण का कथन है, नरक लोक धरती और वरुण लोक सागर के बीच में है। इस बात को केवल अनुभव से ही जाना जा सकता है और अनुभव के बाद बतलाने की शक्ति शेष कहाँ रहती है?

प्रेत लोक के वासियों की हमारे जैसी आँखें नहीं होतीं किन्तु उनमें अन्य क्षमताएँ अवश्य होती हैं। यह एक प्राकृतिक नियम है। जलचरों की देह जल के उपयुक्त बनी होती होती है तो नभचरों की उस वातावरण के अनुरूप रहती है। हमारा भू-लोक मध्यवर्ती है। इससे नीचे वाले लोकों के तीछे तल लगता है किन्तु ऊपर के लोकों में यह शब्द कभी नहीं लगता है।

प्रेत के साथ ही पितर योनि भी मानी जाती है। किंवदन्ती के अनुसार पितरों का भी एक लोक है। यह स्वर्ग और पृथ्वी के बीच का लोक है जिसे भुवलोक कहते हैं। वैसे जिन लोगों को सर्प योनि मिलती है वे भी पितर कहे जाते हैं। पितर शब्द पितृ का बहुवचन है। पितर योनि वाली आत्माएँ प्रभु के नाम से दुःखी होती हैं। उनका लोक भी भू और नरक के बीच रहा करता है। पितरों की स्थिति इसके विपरीत होती है। गन्दे स्थान या गन्दे

वातावरण में वे नहीं आते। देवता के स्थान पर या देव मन्दिर के आस-पास ही वे निवास करते हैं।

शक्ति की दृष्टि से दैत्यों और देवों में कोई अन्तर नहीं है। राक्षस या प्रेत एक ही योनि है, एक ही स्तर है। यह सत्य है प्रेतलोक होता है किन्तु इस लोक की एक निश्चित मर्यादा रहती है इसी मर्यादा के कारण इनका अलग नामकरण हुआ है।

मैं एक व्यावहारिक तान्त्रिक हूं, भूत-प्रेतों पर विश्वास करना और करवाना मेरा कर्त्तव्य है, फिर भी मुझे वह लोग प्रिय हैं जो प्रेत के अस्तित्व को नकारते हैं। मैं उनकी इस बात को खुले दिल से स्वीकार करता हूं और सोचता हूं उन्होंने मुझे कुछ कर दिखाने का अवसर तो दिया। प्रेत बाधा से पीड़ित लोग सहानुभूति के पात्र हुआ करते हैं। प्रेत-पीड़ित व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन यातनामय हो जाता है। मेरे जीवन में अनेक ऐसे व्यक्ति आए जो भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त थे या फिर किसी शापित स्थान पर रहते हुए नारकीय जीवन व्यतीत कर रहे थे। जब मैंने उन्हें ऐसा जीवन व्यतीत करने का कारण पूछा तो उन्होंने कहा कौन भूत-प्रेत शान्ति के चक्कर में पड़े कुछ जीवन गुजर गया है शेष भी यूंही गुजर जाएगा। मैं यह सुनकर मौन रह गया। साधारण स्तर के प्रेत अपनी सीमा लाँघ कर नहीं जाते। इनमें संकीर्णता भी होती है इसलिए परस्पर झगड़ते रहते हैं। लोगों को सताने में अपना मनोरंजन समझते हैं। इस योनि में अधिक समय रहने के बाद इनको थोड़ी छूट भी मिल जाती है। योनि में रहने के कारण मानव जाति के सम्पर्क में आकर उत्पात करने लगते हैं। कभी-कभी कोई प्रेत मानव समाज में प्रकट हो जाया करता है। कई बार तांत्रिक उसे तंत्र-बल से सिद्ध करके

अपने अधीन कर लेते हैं। प्रेतों को सिद्ध करने वाले 'तांत्रिक' कहलाते हैं। वह अकाल मृत्यु से मरने वाले को सिद्ध करने के लिए श्मशान जाते हैं। हमारे यहाँ मृत व्यक्ति का दाह संस्कार करने के बाद कपाल क्रिया की परम्परा के पीछे यही कारण है कि ऐसा करने से कोई तांत्रिक उसे सिद्ध करके नहीं ले जा सकता।

मनोरंजन के लिए या अपनी शेखी बघारने के लिए मजमेबाज काल्पनिक किस्से गढ़कर सुनाया करते हैं। हमें इनसे सावधान रहना चाहिए और कभी भी भूत-प्रेत से सम्बन्धित भ्रम नहीं पालना चाहिए।

अब मैं आपके समक्ष शव के संस्कार, पितरों का श्राद्ध एवं आत्मा की शान्ति हेतु शास्त्र सम्मत नियम प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा है आप इन्हें श्रद्धा, विश्वास एवं सावधानीपूर्वक सम्पन्न करेंगे, मृत्यु के बाद संस्कार पुराणों के विभिन्न अध्यायाओं और वंश प्रमुखों के अनुभवों से लिए गए हैं, इस तथ्य को आप सदैव स्मरण रखें।

## मृत्यु के बाद के कर्त्तव्य

अब मैं आपके समक्ष प्रेत अथवा अशान्त आत्मा शुद्धि एवं सूतिका शुद्धि का विवरण प्रस्तुत करूँगा! शास्त्र कहते हैं सपिण्डों में अथवा मूल पुरुष की सातवीं पीढ़ी तक की सन्तानों में मरणशौच लगभग दस दिन तक रहता है! जनन शौच भी इतने ही दिनों तक रहता है। मरण शौच से क्षत्रियों बारह दिन, वैश्य पन्द्रह दिन तथा क्षूद्रवर्ग एक माह में शुद्ध होता है। अगर शिशु दाँत निकलने से

पूर्व ही मृत्यु को प्राप्त हो तो उसके जनना शौच की सद्यः शुद्धिः स्वीकार की गई है। दाँत निकलने के पश्चात् चूड़ा करण से पहले तक की मृत्यु में केवल एक रात का अशौच होता है। यज्ञोपवीत के पहले तक तीन रात का तथा उसके उपरान्त दस रात का अशौच होता है। तीन वर्ष से कम का शिशु अगर मृत्यु को प्राप्त होता है, तब पाँच दिन का अशौच बतलाया गया है, तीन वर्ष के उपरान्त बारह दिन के बाद शुद्धि होती है। छः वर्ष के बाद मरण अशौच की निवृत्ति एक माह के बाद होती है। कन्याओं में जिनका मुण्डन अभी नहीं हुआ हो उनके अशौच की शुद्धि एक रात्रि में होती है और जिनका मुण्डन हो चुका हो उनकी मृत्यु होने पर तीन दिन के बाद शुद्धि होनी बतलाई गई है। शास्त्र कहते हैं जिन कन्याओं का विवाह हो चुका है, उनकी मृत्यु का अशौच पिता के परिवार को नहीं लगता है। इसके अतिरिक्त जो स्त्रियाँ अपने पिता के घर से शिशु को जन्म देती हैं, उनके सूतक की शुद्धि केवल एक रात में होती है। यह स्मरण रखें जन्म देने वाली माता की शुद्धि दस रात में होती है।

अगर गर्भवती का गर्भ गिर जाए तो जितने माह का गर्भ हो, उतनी ही रातें व्यतीत होने पर शुद्धि होती है।

प्रेत अथवा पितरों के श्राद्ध में उच्छिष्ट के समीप ही वेदी बनाकर, उसका विधिपूर्वक संस्कार करके, उसके ऊपर कुशा का नया आसन बिछाकर, उन पर कुशा से ही पिण्डदान करे। शास्त्रों द्वारा यही नियम दिया गया है।

अन्न, दही, शहद और उड़द से पिण्ड की पूर्ति की जानी चाहिए। ब्राह्मण वर्ग के भोजनादि से निवृत होने के उपरान्त नाम

गोत्र के उच्चारण पूर्वक गंगाजल एवं चावल छोड़े जावें। इसके उपरान्त चार अंगुल चौड़ा, उतना ही भीतर से गहरा तथा एक बालिस्त लम्बा गड्ढा खोदा जाए। वहाँ पर तीन उपले के बराबर स्थान बनाया जाए और तीन स्थान पर अग्नि प्रज्वलित की जाए। उनमें क्रमशः सोमाय स्वाहा, बहजो स्वाहा, यमाय स्वाहा का सस्वर उच्चारण कर सोम, अग्नि एवं यम के लिए सार रूप में चार-चार अथवा तीन-तीन आहुतियाँ देनी चाहिए। फिर अलग-अलग पिण्डदान करना अभीष्ट है, सपिण्डी करण श्राद्ध के समय प्रेतयोनि को पृथक पिण्ड देकर उसकी तीन पीढ़ियों के पितरों को तीन पिण्डदान करने चाहियें। प्रेत पिण्डों के तीन भागों को क्रमशः पिता, दादा और परदादा के पिण्डों में जोड़ देना चाहिए।

शास्त्रों का कथन है पितरों का श्राद्ध एक साल में अवश्य करना चाहिए। प्रेतों के लिए सन्नोदक, कुम्भदान एक साल तक करना अनिवार्य है। मैंने यह अनुभव में पाया है, प्रेत-योनि को प्राप्त हुई आत्मा चाहे वह स्वर्ग में हो अथवा नरक में वह परिजनों द्वारा किये गए श्राद्ध कर्म को अवश्य ही प्राप्त करती है। एक तांत्रिक होने के नाते मैं यह परामर्श दूँगा। परिजन चाहे स्वाभाविक मृत्यु को प्राप्त हुआ हो अथवा अकाल मृत्यु को हमें उसका शोक न करते हुए उसका पिण्डदान एवं श्राद्ध कर्म अवश्य करना चाहिए। पर्वत से कूदकर, गले में फाँसी लगाकर, आग में जलकर, बिजली गिरने अथवा लगने से, शस्त्राघात से, पानी में डूबकर मरने वाले अकाल मृत्यु को प्राप्त होते हैं, वैसे इनका पातक परिजनों को नहीं लगता है, फिर भी किसी तांत्रिक से गति एवं शुद्धि करा लेनी चाहिए। यही अभीष्ट है।

मैं परामर्श दूंगा कि अकाल मृत्यु को प्राप्त व्यक्ति की शव यात्रा में जाने वाले को जलते हुए शव का धुँआ शरीर पर लग जाने पर तुरन्त स्नान कर लेना चाहिए। मैंने स्वयं देखा है कई परिजन केवल गंगाजल छिड़क कर शुद्धि प्राप्त करने की असफल चेष्टा करते हैं। यह सर्वथा गलत है। आप ऐसा कदापि न करें। ऐसा करने पर आप दोष के भागी ही बनेंगे।

अब मैं आपको शवदाह के विषय में कुछ महत्वपूर्ण बातें बतलाऊँगा। अनाथ शव का दाह कर्म करने पर स्वर्ग प्राप्त होता है। अकाल मृत्यु को प्राप्त शव को लकड़ी देने वाला विजयश्री को प्राप्त करता है। ब्राह्मण के शव को प्रणाम करने पर आध्यात्मिक सुख की प्राप्ति होती है।

अकाल मृत्यु को प्राप्त शव को अग्नि देने के बाद वस्त्र सहित स्नान करना अनिवार्य है। प्रेत के निमित्त तीन बार जल अर्पण करें। घर के दरवाजे पर लगे किसी पत्थर पर पैर रखकर अग्नि में चावल अर्पण करें और नीम की पत्ती चबाकर ही अकाल मृत्यु को प्राप्त व्यक्ति के घर प्रवेश करें। भूत-प्रेत बाधा से बचने के लिए सरसों का तेल और काले तिल कों मिलाकर तिलक करने से भूत-प्रेत का प्रकोप नहीं होता है, बाधा शमन भी होती है और सुरक्षा भी होती है।

दो वर्ष अथवा दो वर्ष से कम आयु वाले शिशु के दाह संस्कार अथवा जल प्रवाहित करना अथवा जलांजलि देना वर्जित है, लेकिन कुछ विद्वान इसका समर्थन भी करते हैं, मेरे निजी विचार में उपरोक्त कर्म करके हम जीवात्मा पर उपकार ही करते हैं।

अब मैं पाठकों के ज्ञानवर्द्धन हेतु दत्तक, औरस, भिन्न क्षेत्रज सन्तान के विषय में बतलाऊँगा, इनमें वह स्त्रियाँ भी हैं, जो अपने पहले पति को छोड़कर अथवा उसकी मृत्यु के उपरान्त भार्या के रूप में रहती हों, उनके मरने पर केवल तीन रात में ही पातक की निवृत्ति होती है, परिजनों को चाहिए कि धर्म का त्याग करने वाले, नपुँसक, संन्यासी, विषपान के द्वारा जो प्राण त्याग करते हैं, उन्हें जल अर्पण न करें। इसके अतिरिक्त विदेश में रहने वाले परिजन अथवा जिसके अभी दाँत न निकले हों ऐसे जातक की मृत्यु हो जाये तब तुरन्त स्नान करके पातक से मुक्ति मिल जाती है। इसके अतिरिक्त जो स्त्री अथवा पुरुष क्रोध, अपमान, तिरस्कार, भय अथवा अत्यधिक स्नेह के कारण आत्महत्या करते हैं, उन्हें हजारों वर्ष तक घोर नरक में रहना पड़ता है।

इसी प्रकार मृत शरीर का स्पर्श करने पर अथवा अशान्त आत्मा का स्पर्श होने पर अग्नि का स्पर्श कर शुद्ध घृत खाले तो पातक नष्ट होता है, साथ ही आत्मा का प्रकोप भी शान्त होता है। देवल स्मृति में स्पष्ट लिखा है—अपवित्र अग्नि, पतित के घर की अग्नि, चाण्डाल की अग्नि, चिता की अग्नि का स्पर्श किसी भी अवस्था में नहीं करना चाहिए।

शव को श्मशान में ले जाते समय शव को नहलाना अनिवार्य है, साथ ही नवीन वस्त्र भी पहना दें, फूलों से उसका पूजन करके ही श्मशान की ओर प्रस्थान करना चाहिए। श्मशान में पहुंचने के उपरान्त शव को दुबारा स्नान करावें, चिता स्थल पर केवल सगोत्र पुरुष ही रहें। इसके बार अचारज को चाहिए कि वह विधि विधान के साथ आह्वनीय, गार्हपत्य एवं दक्षिणाग्नि का आवाहन कर शव

को अग्नि दिलावे।

"अस्मात् त्वमभिजातोऽसि त्वदयं जायताँ पुनः।
असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा॥"

इस मन्त्र का उच्चारण कर पुत्र अपने पिता को मुखाग्नि प्रदान करे। इसके अतिरिक्त ज्येष्ठ पुत्र पिता के लिए दस दिनों तक नियमित "अपो नः शीशुचद् अयम्" का जाप करे और जल अर्पण करे। शव का दाह संस्कार करके जब आवें तो सब से पहले दरवाजे पर खड़े होकर नीम की कोमल पत्तियाँ चबायें फिर गंगाजल का आचमन करके अग्नि, जल, गोबर (गाय का) तथा पीली सरसों का स्पर्श करें। उस दिन परिजनों को नमक का प्रयोग वर्जित है।

एक और भी स्थिति बनती है मान लें जन्म सूतक में, मरण पातक पड़ जाए अथवा मरण पातक में जन्म सूतक पड़ जाये, तो शास्त्र कहता है कि दोनों अशौचों को एक ही दिन एक ही समय समाप्त कर देना चाहिए। यह भी स्मरण रखें। सूतक हो अथवा पातक परिजनों का दान का अधिकार शुद्धि होने तक स्थगित रहता है।

परिजनों को चाहिए कि वह मृतक की अस्थियों को केवल गंगा में ही प्रवाहित करें, क्योंकि जब तक वह अस्थियाँ गंगा में रहती हैं, उनका स्वर्गलोक में निवास बना रहता है। प्रेत शुद्धि हेतु "नारायण बलि" अनिवार्य कर्म है।

धर्मराज का कथन है—यमलोक का मार्ग सबके लिए अलग-अलग है। हम सबने एक दिन मृत्यु को प्राप्त होना है केवल पतिव्रता पत्नी को छोड़कर और कोई साथ नहीं जा सकता है,

जीव (आत्मा) चाहे किसी भी लोक में जाये, धर्म सदैव उसके साथ रहता है। धर्म अविनाशी है।

मैंने अपने छोटे से तांत्रिक जीवन में यह अनुभव किया है, जिसकी मृत्यु अभी नहीं आई है उसे कोई मार नहीं सकता और जिसकी मृत्यु का समय आ पहुँचा है उसे कोई बचा नहीं सकता है। जो मृत्यु का वरण कर चुका है उसे कोई औषधि अथवा तन्त्र-मन्त्र नहीं बचा सकता है। यह सब वस्तुएँ तो केवल जीवन शेष रहने पर ही कार्य करती हैं।

गीता का यह कथन मनुष्य को सदैव स्मरण रखना चाहिए जैसे मनुष्य पुराने मैले हो गए वस्त्रों को उतार कर नए वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार आत्मा भी जर्जर हो गए शरीर को छोड़कर नया शरीर धारण करती है। आत्मा तो अजर अमर है, वह कभी नहीं मरती; अतः मृत्यु का शोक करना व्यर्थ है।

महर्षि पुष्कर का कथन है—संस्कृतस्या संस्कृतस्य स्वर्गो मोक्षो हरिस्मृते मृतक का अग्नि संस्कार हुआ हो, अगर श्री हरि नाम का स्मरण किया जाए तो स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति होती है। प्रिय साधकों! प्रभु नाम और उसकी साधना से बढ़ कर ओर कुछ भी नहीं। इसी नाम के द्वारा जीव को मोक्ष प्राप्त होता है, अशान्त आत्मा को शान्ति मिलती है और अशौच आदि स्थितियों का निवारण होता है। ''कलियुग केवल नाम अधारा, सुमिर-सुमिर नर उतरत पारा।'' रामायण में लिखित महान सन्त गोस्वामी तुलसीदास का कथन व्यर्थ ही नहीं है।

## ५. साधना द्वारा आत्माओं का आह्वान

**सिद्धियों के विषय में आम धारणा यह है कि यह अलौकिक ईश्वरीय विधियाँ है और बिना श्रद्धा विश्वास के नहीं होती हैं। इस सम्बन्ध में मेरा मत एक दम भिन्न है। सिद्धियाँ वास्तव में वैज्ञानिक प्रयोग हैं। इनको करने से अवश्य सफलता मिलती है और प्रत्येक पारिवारिक व्यक्ति इनको बड़ी सरलता के साथ कर सकता है।**

अभी कुछ देर पहले ही बिस्तर पर जाकर लेटा ही था कि उसके सारे शरीर में काँटों की चुभन होने लगी। वह बेचैन हो उठा। उसका शरीर पसीने से भीग गया। प्यास से गला शुष्क हो गया। वह बिस्तर से उठकर चला तो ठोकर खाकर गिर पड़ा। फिर उसमें उठने की शक्ति शेष नहीं रही। उसे ऐसा लग रहा था कि कोई उसे जकड़ कर गला दबाए जा रहा हो। उसने आवाज देकर कमरे से किसी को बुलाने की असफल कोशिश की तो उसके गले से कोई आवाज नहीं निकली। कमरे के दरवाजे पर खड़ी काली छाया को देखकर वह भय से बेहोश हो गया।

ऐसी घटनायें कई बार हो जाने पर उसे डाक्टर को दिखलाया गया। डाक्टरों ने उसको मानसिक रोग बताया, लेकिन काफी उपचार कराने पर भी कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। आखिर एक दिन सत्तरह-अठारह वर्षीय लड़की को नवयुवक के विषय में

पता चला। वह लड़की उस नवयुवक के पड़ोस में अपने किसी परिचित के घर आई थी। उसने नवयुवक पर किसी दुष्ट आत्मा के प्रकोप होने की बात कही। किसी ने उसकी बात पर विश्वास नहीं किया तो उसने प्रत्यक्ष रूप में आत्मा को बुलाकर उनसे बातें करा देने का आश्वासन दिया।

उस लड़की का नाम चित्रा सक्सैना था। चित्रा सक्सैना आत्मा को बुलाने की विद्या से अच्छी तरह परिचित थी। कई बार आत्मा को बुला भी चुकी थी। उसने प्लेनचिट क्रिया द्वारा आत्मा को बुलाकर उस नवयुवक के प्रकोप का कारण पता करके मुक्ति दिला दी।

आत्मा को बुलाकर आप स्वयं भी भूत भविष्य और अनेक रहस्मय बातें जान सकते हैं। आत्माओं का आह्वान बहुत कठिन नहीं है, लेकिन इसके लिए कुछ आत्म विश्वास, एकाग्र मन, एकांत और सच्चे परिश्रम की आवश्यकता है। आत्माओं का आह्वान मात्र हास्य, रोचकता या समय बिताने के उद्देश्य से करना बेहद खतरनाक है। इन प्रयोगों को अति आवश्यक होने पर ही करना चाहिए।

मृत आत्माएँ जहाँ वैज्ञानिकों और तांत्रिकों के लिए और सामान्य प्राणियों के लिए जिज्ञासा का विषय रही हैं वहाँ उन पर तर्क-वितर्क भी कम नहीं हुआ है। काल और परिस्थितियों के अनुसार आत्माओं से सम्पर्क करने की विद्या बदलती और निखरती रही है। मानव समाज को आत्माओं के विषय में जानकारी एवं तथ्य प्राप्त करने की उत्कंठा सदैव से रही है और इसी उत्कंठा ने आत्माओं से सम्पर्क साधने की विद्या को जन्म दिया, आत्माओं के

विषय में जानकारी देने वाली अनेक पद्धतियाँ संसार भर के देशों में लोकप्रिय हैं। इन आत्माओं में सम्पर्क के पीछे एक लम्बा प्रामाणिक इतिहास है जो आदिकाल तक जाता है।

आत्माओं के आगमन पर अधिकांश लोग विश्वास नहीं करते। कुछ शिक्षित स्त्री पुरुष वैज्ञानिक रूप से आत्माओं का आगमन प्रामाणिक नहीं मानते, लेकिन विदेशों में हुए कुछ प्रयोगों में अब आत्माओं के अस्तित्व पर विश्वास किया जाने लगा है। आत्माओं के विषय में यह मत स्पष्ट है कि यह किसी व्यक्ति को दिखाई नहीं देती। ऐसी स्थिति में कुछ लोग यह आशंका प्रकट करते हैं कि आत्मा का आगमन ही नहीं हुआ था, लेकिन आत्मा अपनी क्रियाओं से अपने आगमन का बोध करा सकती है। आत्मा कमरे का दरवाजा खोल बंद कर सकती है, मेज पर रखा पेपरवेट अपने स्थान से सरका सकती है। कटोरी में कंपन हो सकता है और स्टोव अपनी जगह से हटकर कुछ दूर जा सकता है। बिना हवा चले यदि कमरे का परदा हिलने लगे तो शायद आत्मा का आगमन स्वीकार किया जा सकता है। आत्माएँ ऐसा कुछ भी कर सकती हैं।

विदेशों में महापुरुषों की आत्माओं को बुलाकर उनकी आवाज को टेप करने के भी अनेक परीक्षण किए गए हैं। संभव है वह दिन अब दूर नहीं जब बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों की आत्माओं को बुलाकर उनसे राजनीतिक परामर्श लिए जाने लगेंगे। अब हम इन आत्माओं को बुलाने के अनेक तरीकों में से कुछ तरीकों का वर्णन कर रहे हैं।

भारतवर्ष में आत्माओं के वातावरण में विचरने के प्रमाण

बहुत मिल जाते हैं, पर जब पाश्चात्य देश जो कल तक आत्माओं, भूत प्रेतों पर उपहासपूर्ण टिप्पणी करते थे, आज जब टी.वी. रेडियो पर 'मृत आत्माओं' की मूल आवाजों के टेप प्रसारित करने की घोषणा करते हैं तो अजीब सा लगता है। एक पाश्चात्य देश ने जब 'ऐसोसिएशन आफ रिकार्डिड वायस' नामक संस्था बनाई और उसमें अनेक सम्मानित वैज्ञानिकों को एकत्र कर लिया तो मृत आत्माओं पर विश्वास और गहरा बैठने लगा। इस संस्था ने जब यह दावा किया कि उसने अनजानी आत्माओं से सम्पर्क साधने में दक्षता प्राप्त कर ली है, तो इस तथ्य को और बल मिला कि आत्माएँ होती है और उनसे सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है।

मृत आत्माओं से सम्पर्क करने के कई तरीके प्रचलित हैं। देश, काल, साधन और परिस्थितियों के अनुसार मानव समाज ने अनेक और उपाय खोज निकाले हैं, पर इनमें केवल चार ही मुख्य हैं—प्लेनचिट, माध्यम, सम्मोहन और हाजरात। यों तो ध्यान दृष्टि और स्पीरीकोम के द्वारा भी मृत आत्माओं से सफल सम्पर्क हुए हैं पर इनमें एक लम्बी त्रुटि रहित साधना की आवश्यकता होती है। यहाँ हम पाठकों के ज्ञान के लिए केवल चार विषय में ही विस्तृत चर्चा करेंगे।

कूच बिहार की महारानी राजलक्ष्मी देवी दोपहर तक एकदम स्वस्थ एवं प्रसन्न थी। बड़े राजकुमार से खूब बातें की फिर सेविका से बोलीं, 'पानी पिलाना।' सेविका ने पानी दिया। अभी दो घूंट भी नहीं पी पाई थीं कि अचानक उनके हाथ से गिलास छूट कर गिर पड़ा और उन्हें एक हिचकी आई, साथ ही उनकी

गरदन और हाथ लटक गए। नौकरानी चीख उठी, 'रानी माँ।'

पर सारा खेल खत्म था। जब तक लोग आए उनके प्राण पखेरू उड़ चुके थे। महारानी का शरीर निर्जीव हो गया था।

राजमहल पर वज्र टूट पड़ा। महारानी चल बसी। मृत्यु अनिवार्य है, इस कारण यह दुःख राज-परिवार ने झेल लिया पर एक बहुत बड़ी समस्या उत्पन्न हो गई। राज-परिवार की बहुमूल्य सम्पत्ति अत्यन्त मजबूत सीमेंट की चुनी हुई दीवार में दस आदमियों से भी न उठाई जा सकने वाली लोहे की तिजोरी में बन्द थी। उसकी एक विशेष गुप्त चाभी महारानी के पास रहा करती थी। उस चाभी के बारे में वह किसी को न बतला पाई कि वह कहाँ रखी है? दाह संस्कार के बाद चाभी की तलाश जारी रही। महल का चप्पा-चप्पा छान डाला गया, पर चाभी का कहीं भी पता नहीं लगा। तिजोरी का टूटना एकदम असम्भव था। किसी की समझ में न आ रहा था। अब क्या किया जाए। तिजोरी में राज घराने की सारी बहुमूल्य सम्पत्ति और आवश्यक कागजात थे। तिजोरी को काटने, गलाने तोड़ने की राय हो रही थी पर इससे उसमें रखे महत्वपूर्ण कागजों की क्षति का अंदेशा था। सब बेहद परेशान थे कि राज-परिवार के बूढ़े दीवान ने कहा, 'कुँवर जी, रानी माँ की आत्मा को बुलाकर चाभी के विषय में पूछा जा सकता है।'

युवराज ने चकित होकर पूछा, 'यह कैसे सम्भव है?'

युवराज अभी-अभी लन्दन से पढ़कर लौटा था। उसने नई रोशनी में आँखें खोली थीं। इस तरह की बातों पर उसे विश्वास न था।

'आप कहें तो काशिश करूँ।'

युवराज मान गया। मरने के बाद भी आत्मा या किसी को बुलाया जा सकता है, यह उसके लिए आश्चर्य और अविश्वसनीय बात थी।

अनुमति पाकर दीवान एक वृद्ध तांत्रिक को अपने साथ लाया और युवराज से परिचय कराया। वह ताँत्रिक अंग्रेजी पढ़ा-लिखा था। उसके हाथ में टीन का एक गोल घंटा था। उस पर अंग्रेजी में एक से २६ तक अंक लिखे थे और एक नोकदार, दुमदार काँटा लगा था, जो उस पर सरलता से घूम सकता था। दीवार घड़ी और उसके अंकों के समान मिलता-जुलता वह घंटा एक से २६ तक की संख्या से अंकित था।

शाम के समय तांत्रिक, युवराज को कमरे में ले गया और कमरा बन्द कर दिया। फिर प्रकाश के लिए एक छोटी-सी मोमबत्ती जलाकर रख दी और युवराज को अपने सामने बैठा कर घड़ीनुमा विचित्र यंत्र सामने रखकर बोला, 'अब आप ध्यानस्थ हो जायें। आपकी माता की आत्मा का आह्वान मैं आपके ही माध्यम से कर रहा हूँ। वह आपमें ही प्रवेश करेगी।'

कमरे में गहरा सन्नाटा, टिमटिमाती मोमबत्ती का हल्का प्रकाश, तांत्रिक का स्याह होता चेहरा और उसका धीरे-धीरे कुछ बुदबुदाना था। अचानक कमरे में कुछ विचित्र सी सरसराहट हुई। युवराज के काँपते दाहिने हाथ ने उठकर काँटा उठा लिया और एक के बाद एक अंकों पर रखना शुरू कर दिया। ताँत्रिक उनको तेजी के साथ लिखने लगा।

फिर कुंवर का शरीर जोर से काँपा और तंद्रा टूट गई। वह तांत्रिक की ओर आँखें फाड़-फाड़कर आश्चर्य से देखने लगा।

कुछ देर पहले की अपनी दशा उसकी समझ में न आ रही थी। तांत्रिक ने फूँक मारकर मोमबत्ती बुझा दी और कमरे के द्वार तथा खिड़कियाँ खोलकर प्रकाश करता हुआ बोला, 'जवाब आ गया।'

'इट इज इन दी गारडेन अण्डर मैंगो ट्री नोर्थ टू वैस्ट।'

अर्थात् चाभी बगीचे में आम के पेड़ नम्बर दो में है, जो पूर्व से है।

युवराज तत्काल दौड़कर गए। चाभी उसी स्थान पर मिल गई। युवराज हैरत में पड़ गये। तांत्रिक को पुरस्कृत करने के बाद उससे पूछा, क्या सचमुच आत्मायें होती हैं?

हाँ, हर मनुष्य की आत्मा होती है। जब तक उसका किसी योनि में पुनर्जन्म नहीं हो जाता वह भटकती रहती है। उसे बुलाया जा सकता है। मेरे इस यंत्र का नाम 'प्लेनचिट' है। मृतक के किसी नजदीक सम्बन्धी को सामने बैठाकर आत्मा उनके माध्यम से अंकों में उत्तर देती है।

तांत्रिक की बात पर युवराज अत्यन्त आश्चर्य करने लगे।

बात आश्चर्य की है भी। विज्ञान आदमी की मृत्यु के बाद आत्मा का अस्तित्व नहीं मानता। इसके बावजूद संसार के प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय में यह धारणा है कि मरने के बाद आत्मा का अस्तित्व रहता है। भारत के विश्व प्रसद्धि धर्मग्रंथ 'गीता' में तो इसे स्पष्टत: माना गया है।

आत्मा का अस्तित्व मनुष्य की मृत्यु के बाद भी माना गया है, विज्ञान अभी इसे प्रमाणित नहीं कर पा रहा है, पर 'परा-विज्ञान' ने इसे प्रमाणित कर दिया है। ताँत्रिक इसका सबसे सशक्त गवाह है।

सबसे बड़ी समस्या शरीर से निकलकर गई आत्मा से सम्पर्क की है। मंत्रों की साधना कठिन मानकर कुछ विशेष यंत्र बनाए गए, जिनमें प्लेनचिट, स्पीरियो स्कोप प्रमुख हैं। कुछ क्रियाओं ने भी जन्म लिया, जिनमें माध्यम और एक मुस्लिम पद्धति हाजरात भी है।

## प्लेनचिट

प्लेनचिट कोई ११० वर्ष पूर्व इंगलैंड के एक परा-वैज्ञानिक डाक्टर चैटस्मिथ द्वारा आविष्कृत की गई थी। उन्होंने इसे 'प्लान' (योजना) बनाई। वही उनके नाम के साथ जुड़ गई और 'प्लेनचिट' बन गई। आमतौर पर यह तीन प्रकार की होती है। एक का विवरण तो ऊपर आ गया है। दूसरी में एक गोलाकार बड़े कागज पर गोलाकृति में ही अंग्रेजी के 26 अक्षर लिख दिए जाते हैं और बीच में एक कटोरी रख दी जाती है। आत्मा के प्रवेश करने पर कटोरी स्वयं घूम-घूमकर वर्ण पर चलती है और इस प्रकार आत्मा अपना सन्देश दे दिया करती है। 'प्लेनचिट' के और भी कई रूप हैं, पर उनकी कार्य प्रणाली लगभग एक जैसी है। विधियाँ अलग-अलग हैं।

प्लेनचिट का चालन क्या प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है? इसका स्पष्ट उत्तर है, 'नहीं'।

आत्मा का आह्वान करने वाला व्यक्ति सशक्त मन, पवित्र और कम से कम 'हिप्नाटिज्म' में दक्ष हो। उसे अपने मन पर संयम करना आता हो और जो पूर्ण एकाग्रता के साथ आह्वान कर सकता हो।

प्लेनचिट पर आह्वान कर्ता सर्वप्रथम एक साफ स्वच्छ बड़े

कमरे में बैठ जाए। दरवाजा बन्द कर ले, केवल खिड़कियाँ और रोशनदान खुले रखें, अगरबत्ती आदि जलाकर रख ले। इसके बाद प्लेनचिट के समक्ष बैठकर एकाग्रमन से आत्मा का आह्वान करें। यह क्रिया कई बार और कई दिन तक दोहराई जा सकती है। सफलता न मिलने पर हताश या निराश न हों।

यह एक बड़ी ही सरल क्रिया है जिसे कोई भी व्यक्ति बड़ी ही सरलता से कहीं भी कर सकता है। इसमें केवल एक कटोरी और वर्णमाला युक्त एक कागज की आवश्यकता होती है।
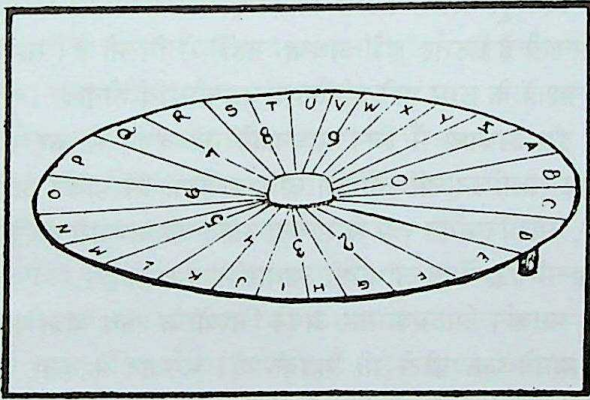
प्लेनचिट में आत्मा का प्रवेश कराने वाला व्यक्ति पूर्ण रूप से शुद्ध होकर एक साफ स्वच्छ स्थल पर सावधान की मुद्रा में बैठ जाता है। इसके पश्चात वह वर्णमाला से युक्त कागज जमीन पर बिछा देता है और उसके कागज के बीचों-बीच वह कटोरी रख देता है। फिर वह अपनी तर्जनी अंगुली उस कटोरी के एक सिरे पर हल्के से रख देता है, उसके बाद वह प्रश्नकर्ता से भी अपनी

तर्जनी अंगुली हल्के से रखने का आग्रह करता है। फिर वह मृत आत्मा का आह्वान मन ही मन करता है। यह आह्वान निरन्तर बार-बार अंतराल में होना चाहिए, जब तक वह आत्मा कटोरी में प्रविष्ट न हो जाए। जैसे ही आत्मा कटोरी में प्रविष्ट होगी, कटोरी स्वयं ही हिलने लगेगी। अब आह्वानकर्ता सामने बैठे व्यक्ति से प्रश्न करने को कहता है। हर प्रश्न के उत्तर में कटोरी हर वर्ण की तरफ घूमेगी। आप उन वर्णों को जोड़कर उत्तर पा सकते हैं। इस सम्पूर्ण क्रिया के मध्य न तो आप हंसें और न ही कटोरी से अंगुली उठाएँ और न ही पूरे बल से कटोरी को दबाएँ अन्यथा आत्मा क्रोधित भी हो सकती है। उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में मिलते हैं। सम्भाषण जैसे प्रश्नों के उत्तर पाने की आशा करना व्यर्थ होगा।

इस अध्याय में जिन साधनाओं का वर्णन मैं कर रहा हूँ उनका लाभ उन तांत्रिकों को अवश्य होगा जो पवित्र आचरण वाले, और नियमित रूप से साधना आदि का अभ्यास करने वाले हैं। इन सिद्धियों के लाभ की आधारशिला श्रद्धा है।

भगवान ईसा एक बार अपने शिष्यों के साथ यात्रा कर रहे थे। सामने एक छोटी सी पहाड़ी थी। भगवान ने कहा, "तुम सामने वाली पहाड़ी को देख रहे हो। तुम्हारे में से कोई भी व्यक्ति अगर इच्छा करेगा कि यह पहाड़ी यहाँ से उड़े और समुद्र में गिरे, और उस इच्छा में तिल भर भी संदेह न हो तो सचमुच वह पहाड़ी उड़कर समुद्र में जाकर गिर पड़ेगी।" श्रद्धा की महानता को स्पष्ट करने वाला यह सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। साधना के द्वारा सब कुछ संभव है। यह सिद्धांत है। साधना के समय अहंकार भाव का त्याग कीजिए। गर्व को प्रकट न कीजिए। श्रद्धा और विश्वास के

द्वारा ही आप इस सिद्धि का अनुभव कर पाएंगे। सन्तुष्ट वृत्ति के बिना सिद्धियाँ प्राप्त नहीं होंगी। मन सदैव भटकता रहता है। मन को हर समय साधना के अभ्यास में लगने से ही सिद्धि प्राप्त होती है। साधना में सफलता साधक के मनोबल पर भी निर्भर रहती है। अब प्रस्तुत हैं कुछ विशिष्ट गोपनीय साधनायें।

अब मैं आपके समक्ष कुछ विशिष्ट ताँत्रिक प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूँ। इन अनूठे प्रयोगों को करने से पहले सामग्री की शुद्धता, साधना में एकाग्रता और श्रद्धा, विश्वास के प्रति पहले आश्वस्त हों अन्यथा हानि की संभावना है।

प्लानचिट यन्त्र पर जो साधक आत्मा बुलाने की इच्छा रखते हों उनका सदाचारी, धर्मात्मा और पवित्र होना परम अत्यावश्यक है। वह सत्यवक्ता हो और सदैव एक समय भोजन करता हो, वह भी पवित्र और हल्का। माँस, मदिरा अथवा अन्य नशीली वस्तुयें दुर्गन्धयुक्त पदार्थ खाने वाले मनुष्य भूल कर भी अभ्यास न करें इससे उनका अहित ही होगा। बवासीर या कुष्ठ रोग से ग्रस्त साधक भी प्राय: सफलता नहीं पाते हैं। प्लानचिट यन्त्र के अभ्यास के लिए चार व्यक्ति होने आवश्यक हैं। तीन साधक कहलाते हैं और चौथे को सिद्ध कहते हैं। उनकी परस्पर एकता होनी चाहिए। साधकों का विश्वास सिद्ध पर और सिद्ध का विश्वास उन पर होना चाहिए। साधकों में कोई साधक सिद्ध की आज्ञा की अवहेलना न करे। सिद्ध और साधक प्लानचिट यन्त्र के चारों ओर बैठें। इसके बाद ध्यान करे और प्रार्थना करे कि ऐसी कृपा हो कि आत्मा इस चक्र में शीघ्र आ जाये और हमारे सब कार्य सरलता पूर्वक पूर्ण हों।

इसके पश्चात इस यन्त्र पर हाथ रखें। अंगूठे से अंगूठा मिला रहे और सबसे छोटी अंगुली यानि कनिष्ठिका एक-दूसरे से परस्पर जुड़ी रहे, यह अंगुली सदैव मिली रहनी चाहिए।

सिद्ध को उत्तरी ध्रुव की ओर मुख करके इस यन्त्र के समक्ष बैठना चाहिए। प्रथम सिद्ध साधकों से कहें कि परमात्मा का ध्यान करो तत्पश्चात साधक और सिद्ध एक ही आत्मा का आह्वान करें। अगर रात्रि का समय हो तो मोमबत्ती की रोशनी करें इसके बाद सब एकाग्रचित्त हो जायें। थोड़ी देर के बाद साधकों के शरीर में एक प्रकार की सनसनाहट उत्पन्न होगी यह आत्मा का प्रवेश उनके शरीर में होगा। यह आत्मा अंगुलियों में प्रविष्ट होगी। उस वक्त साधकों की ऊँगलियाँ काँपने लगेंगी और दृष्टि स्थिर हो जायेगी। साधक चित्रलिखित सा दिखलायी देगा। उस समय सिद्ध यन्त्र से प्रश्न करे कि अगर यन्त्र में किसी भी आत्मा की शक्ति आ गई है तो मेरी ओर का भाग ऊँचा हो जाय। अगर आत्मा आ गई है तो अवश्य उठ जायेगा अगर न उठे तो सिद्ध और अन्य सभी कुछ समय तक फिर आत्मा का आह्वान करें अगर पहले दिन यह यन्त्र सिद्ध न हो तो निराश होकर साधना न छोड़ दें। बल्कि उसी स्थान पर उसी समय फिर अभ्यास करें तो यन्त्र अवश्य सिद्ध हो जायेगा। जब यन्त्र सिद्ध हों जाये और आत्मा उसमें प्रवेश कर जाये तब सिद्ध को चाहिए कि उससे प्रश्न करें कि यदि आप हिन्दू हैं तो तीन बार पाया उठे। अब जितनी बार पाया उठेगा इससे उसकी जाति जाननी चाहिये। अगर हिन्दू हो तो राम राम, मुसलमान हो तो सलाम और अगर ईसाई हो तो शुभ रात्रि कहना चाहिए। यह भी पूछें कि आपकी अवस्था क्या है? जितने वर्ष की अवस्था

हो उतनी ही बार पाए गिरे और जब अवस्था पता हो जाये फिर कहें कि अगर आप पढ़े लिखे हैं तो एक बार पाया गिरे वरना दो बार गिरे, अगर आप हिन्दी पढ़े हैं तो पाया एक बार, उर्दू पढ़े हैं तो पाया दो बार, यदि अंग्रेजी पढ़े हैं तो पाया तीन बार उठे।

आप अपना नाम बतला सकें तो पाया एक बार गिरे वरना दो बार। जो भी भाषा आत्मा बतलाये उसी भाषा में प्रश्न करें।

इसी प्रकार आप जो पूछते जायें उसे लिखिते जाएँ इस प्रकार भूत भविष्य, वर्तमान तीनों काल का हाल मालूम हो जाएगा। ध्यान रहे कि अगर किसी सज्जन मनुष्य की आत्मा होगी तो सत्य हाल बतलायेगी। अगर कोई दुष्ट आत्मा होगी तो असत्य वचन कहेगी।

जब आत्मा से अपने उद्देश्य को सिद्ध कर लें तो आत्मा से आप वापस जाने का निवेदन करें। जब आत्मा वापस चली जायेगी तो प्लेनचिट को हटा दें और अपना हाथ मुंह धोकर १६ बार कुल्ला कर लें।

प्लानचिट यन्त्र पर यह प्रयोग रात्रि के दस बजे शुरू करना चाहिए। लेकिन ध्यान रहे कि जिस समय आँधी चल रही हो या बादल गरज रहे हों उस समय कभी भी प्रयोग नहीं करना चाहिये, क्योंकि ऐसे समय में प्लानचिट यंत्र अपना काम नहीं करता क्योंकि अगर आकाश में बादलों की गर्जना हो रही होगी बिजली चमक रही होगी उस समय प्राय: आत्मायें आ कर भी वापस चली जाती हैं। साधकों को यह बात सदैव याद रखनी चाहिये। एक बात और प्लानचिट यन्त्र का कमरा ऐसा होना चाहिए जो कि न तो बहुत गर्म हो और न बहुत सर्द ही हो। हवा भी कमरे के भीतर बहुत

अधिक न आनी चाहिए, कमरा साफ सुथरा होना चाहिए। कमरे में फर्श भी साफ बिछा होना चाहिए। कमरे में अधिक रोशनी की आवश्यकता नहीं है। जब आत्माओं का आह्वान करना हो उस वक्त कमरे में सुगन्धित वस्तु जला देनी चाहिए और प्लानचिट यन्त्र में सुगन्धित वस्तु अवश्य लगा देनी चाहिए। यदि रात के समय आत्माओं का आह्वान करना हो तो कमरे में हल्की रोशनी करनी चाहिए।

जिस कमरे में प्लानचिट यन्त्र रखा जाए उसकी दीवारों पर देवी देवताओं के सुन्दर चित्र लगे होने चाहियें। आत्माओं के बुलाने वाले मनुष्यों के वस्त्र स्वच्छ सुन्दर व सफेद होने चाहिए। तात्पर्य यह है कि कमरे में किसी प्रकार की दुर्गन्ध आदि न होनी चाहिए वरना हो सकता है कि आत्माएँ वहाँ प्रवेश ही न करें। इन सब बातों का ध्यान रखकर ही आप आत्मा को बुलाने में सफल हो सकते हैं। आत्मा के उपस्थित होने पर केवल निवेदन ही करें, आदेश देने पर अहित भी हो सकता है। यह बात सदैव ध्यान रखें।

प्राय: देखा गया है कि आत्मा शीघ्र ही वापस जाना चाहती है। ऐसी स्थिति में आप अवरोध न बनें—उसे जाने दें कई बार ऐसा भी अनुभव में आया है कि प्रश्न पूरे होने पर भी आत्मा जाने से इन्कार कर देती है। ऐसे जटिल समय में आप धीरज रखें और नम्रता पूर्वक आत्मा को विदा होने को कहें। मेरा स्वयं का अनुभव है कि वह स्वयं ही चली जाएगी। प्लेनचिट का मूल आधार है शुद्ध वातावरण और आपका दृढ़ विश्वास कि आत्मा अवश्य आएगी।

## माध्यम

मृत आत्माओं से सम्पर्क करने की दूसरी सशक्त यह विद्या है। इसमें मृत आत्मा को आह्वानकर्त्ता किसी को माध्यम बनाकर उसमें आत्मा का प्रवेश कराता है। यह विधि थोड़ी जटिल एवं कठिन अवश्य है, पर है काफी रोचक।

इस क्रिया में आह्वानकर्त्ता को एक अच्छे माध्यम की खोज होती है। वह माध्यम कोई भी हो सकता है, वह एक पक्षी या जन्तु हो सकता है या फिर कोई मनुष्य।

माध्यम की उपलब्धि के पश्चात आह्वानकर्त्ता उसे अपने समक्ष एक कुर्सी पर बैठने का संकेत करता है। इसके बाद वह उसे कोई तरल वस्तु पीने के लिए देता है, माध्यम कुछ पीकर शेष किसी चौड़े बर्तन में फेंक देता है। उसके बाद वह आह्वानकर्ता उस पानी को निरन्तर देखने का "आदेश" देता है। धीरे-धीरे माध्यम उस वस्तु में लिप्त हो जाता है। उसे पानी के स्थान पर उस पात्र में कुछ विचित्र सी आकृतियाँ घूमती-फिरती नजर आती हैं। यही वह आकृतियाँ हैं जिन्हें हम मृत आत्माएँ कहते हैं। आह्वानकर्त्ता माध्यम से प्रश्न करता है और माध्यम उन आत्माओं से पूछकर जो भी उत्तर पाता है, बोलता जाता है। इस विधि में माध्यम ही प्रमुख रहता है। यह विधि काफी जोखिम से भरी है काफी रोचक और रहस्यपूर्ण। विधि का मुख्य हिस्सा है माध्यम का एकाग्र मन।

## सम्मोहन

सम्मोहन का प्रयोग करके किसी भी चेतन वस्तु को माध्यम बनाया जा सकता है। इस क्रिया में सम्मोहन करने वाले को लम्बी साधना की आवश्यकता होती है। यह साधना वह त्राटक के माध्यम

से करता है।

सम्मोहन में सम्मोहनकर्ता माध्यम को आदेश कभी आँखों से, कभी हाथों से तो कभी-कभी बोलकर संदेश प्रसारित करता है। माध्यम इन संदेशों को ग्रहण कर उन पर कहे अनुसार अमल करता है। जब वह पूरी तरह सम्मोहित हो जाता है तब सम्मोहित कर्ता के प्रश्नों के उत्तर लिखकर या बोलकर देता है। इसमें सम्मोहन कर्ता प्रमुख भूमिका निभाता है।
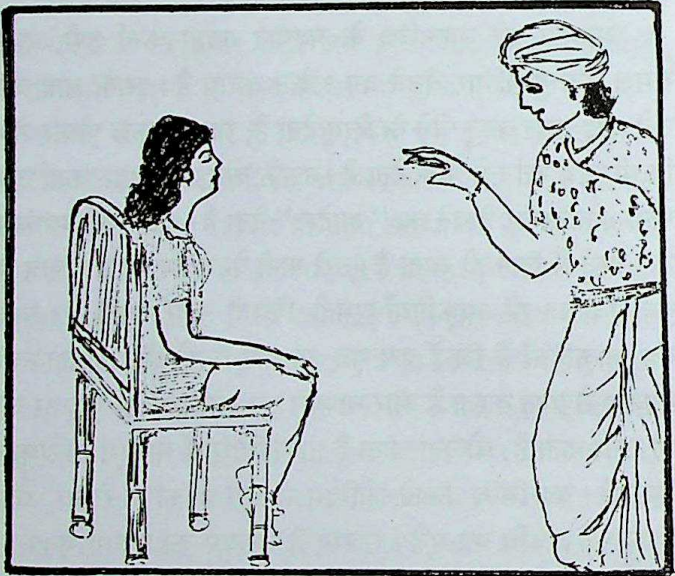
सम्मोहन, चिकित्सा, वशीकरण एवं ध्यान दृष्टि (क्लेपर-वायन्स) में काफी लाभदायक एवं प्रभावी सिद्ध हुआ है। मेरे विचार में तो आँखों को साधने का ही दूसरा नाम सम्मोहन है या

हिप्नाटिज्म है। इस विषय की पूरी पुस्तक 'चमत्कारी हिप्नाटिज्म' लेखक एस.एम. बहल पढ़ें।

### स्पीरियो स्कोप

आत्माओं से सम्पर्क करने का एक और साधन है, वह है स्पीरियो स्कोप! यह एक विशेष प्रकार का कैमरानुमा डिब्बा होता है। केवल एक ओर से खुला होता है। इसमें अनेक छोटे-छोटे
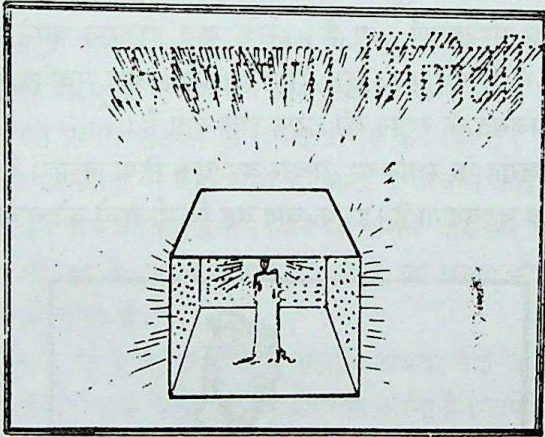
छेद कर दिए जाते हैं तथा एक छोटी-सी मोमबत्ती खुले भाग से भीतर रखकर जला दी जाती है। मृतक का निकटस्थ सम्बन्धी आत्मा का आह्वान करता है और उन छिद्रों का प्रकाश दीवार पर पड़ता है, उस पर शब्द बनते-बिगड़ते नजर आते हैं। इन छिद्रों से निकलकर दीवार पर पड़ने वाला प्रकाश ध्यानपूर्वक देखना पड़ता है। इस क्रिया के नियम और व्यवस्था प्लेनचिट के समान ही हैं। इसमें भी उत्तर संक्षिप्त ही मिलता है।

## हाजरात

यह एक संपूर्ण मुसलमानी तकनीक है पहले की तीन विधाओं में मन्त्रों या सिद्धि की कोई आवश्यकता नहीं होती, जबकि हाजरात पूर्णतः मन्त्रों पर आधारित है। हाजरात में आरम्भ से लेकर अन्त तक मन्त्र-तन्त्र ही कार्य करता है।

हाजरात में सर्वप्रथम हाजरात करने वाला मुवक्किल को न्यौत कर आता है मुवक्किल को स्थान और समय बताना इस विद्या का महत्वपूर्ण अंग है। इसके बाद हाजरात करने वाला हाजरात के लिए पूर्णतः शुद्ध होता है। इसके बाद मुवक्किल को लेकर हाजरात के स्थान की तरफ चल देता है।

हाजरात के स्थान पर आकर वह एक दिया जलाता है और कुछ मन्त्र बुदबुदाता है। इसके बाद वह किसी बच्चे को बुलाता है
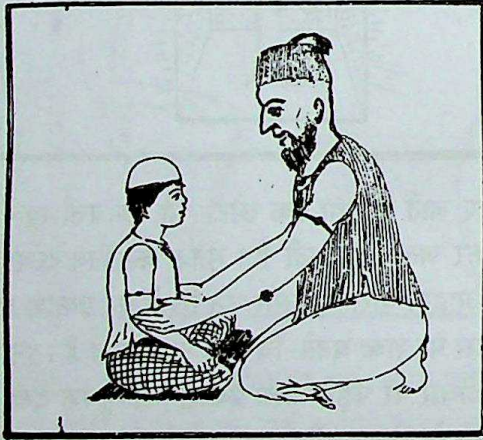
(जो माध्यम होता है) और दीये की लौ में एकटक देखने को कहता है, और स्वयं मन्त्रों से अभिमन्त्रित उड़द लौ पर मारता रहता है। कुछ समय के बाद पूछता है—"कुछ दिखाई दिया?" धीरे-धीरे दिए की लौ में माध्यम को मुवक्किल घूमते फिरते नजर आने लगते हैं। उसके बाद हाजरात करने वाला अपने प्रश्न पूछता रहता है और वह बच्चा उनसे (मुवक्किलों) से पूछकर उत्तर देता रहता है।

हाजरात केवल आसमान साफ होने पर ही किए जा सकते हैं। बारिश या धुन्ध में हाजरात प्रायः असफल रहते हैं। अब मैं हाजरात का प्रयोग पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ।

जब प्रश्नकर्ता के यहाँ चोरी हो जाती है अथवा कोई घर से भाग जाता है तब तांत्रिक प्रयोग किये या कराये जाते हैं। उनमें से हाजरात भी एक है। उनमें दीपक की लौ में, जो प्रयोग होते हैं वे हाजरात कहलाते हैं।

बुधवार के दिन बारह बजे तालाब अथवा नदी के समीप बैठकर शनिवार तक रोज दो माला का जाप करना है। जाप पश्चिम की ओर मुख करके करें। रोज सवा रुपये के बताशे साथ में रखना है। शुक्रवार के दिन एक मटकी में इतर का फाहा, रंगे हुए चावल, शक्कर, घी व बताशे लेकर जाना है। सिद्ध करने के बाद कपूर का काजल बनाकर बच्चे पर प्रयोग करें। पीर साहब का स्मरण करना है। मन्त्र निम्न है—

याबुद्ध मंजुलाल च्यार मोकल को भेजो हाल।
राज सभा को ल्यावो साथ।
मुख से हासिल करो आप।

दूसरा प्रयोग इस प्रकार है शुक्ल पक्ष के बुधवार से जाप शुरू करें। इक्कीस दिन तक रोज दस माला का जाप करें। तालाब या नदी के पास पश्चिम की ओर मुंह कर जाप करे। सवा रुपये के बताशे चढ़ाएँ। इक्कीसवें रोज माटी के बर्तन में पके चावल, घी, शक्कर, अगरबत्ती, गुलाब व इतर ले जाएँ। सिद्ध करने के बाद कपूर का काजल बनाकर बच्चे पर प्रयोग करें। पीर साहब का स्मरण करें।

मन्त्र निम्न है—

ओं बिशमिल्ला बुद्ध की लाट चले।
सात सौ सोटा आगे चले।
सात सौ सोटा पीछे चले।
सीधे बाजू से पीर।
पैगम्बर चले।
नरसिंगीया को पकड़ लेवे।
हड़मान के पाँव में बेड़ी जड़े।
बेतालिया को पटक देवे।
बावनवीन कैद में राखे।
बुद्धू का नख चले एक लाख पीर पैगम्बर चले ये ये ये लाये।

## कुछ अन्य प्रयोग

अब मैं हनुमान जी से प्रश्न पूछने की सरल विधि भी प्रस्तुत कर रहा हूं।

शनिवार से शनिवार तक बारह हजार जाप करना है। हनुमान जी की मूर्ति अथवा चित्र सामने रखे, रोज नैवेद्य, खीर, सवा पाव चने चढ़ाए। ब्रह्मचर्य से रहे। रात को ही जाप करे व दीपक

हनुमान जी की मूर्ति के आगे अखण्ड जलता रहे। दीपक में केवल तेल ही जलाएँ। सिद्ध होने पर कपूर का काजल तैयार कर बच्चे के नाखून पर चढ़ाएँ। हनुमान जी का आह्वान करें। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं नमो आदेश गुरु का।
सजलिया बजरक घोटा बजरकिया।
हांक मारू यति हनुमन्त आवो।
दीपक की जोत में आवो न आवो
तो अंजनी का दूध हराम करो।
महादेव की जटा पर घाव पड़ो।

अन्त में काली देवी के द्वारा प्रश्न पूछने की विधि प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस प्रयोग में साधक को सतर्कता से काम लेना चाहिए। इस प्रयोग में अहित भी सम्भव है। इस प्रयोग को शुक्ल पक्ष की द्वितीया से शुरू कर कृष्ण पक्ष की द्वितीया तक पन्द्रह रोज में सवा लाख जाप करें। जाप के समय दीपक बराबर जलते रखना है। जाप रात को दस बजे से शुरू करना है। शुद्ध वस्त्र पहनकर पूर्व की ओर मुँह करके बैठना है। सिद्ध होने पर कटोरी में कपूर का काजल तैयार कर बच्चे के नाखून पर चढ़ायें। साधना काल में सदैव खीर का भोजन करें। प्रयोग के समय केवल काली माता का आह्वान करें। मन्त्र निम्न है—

ओं ह्रीं क्लीं महाकाली नमः।

इस प्रकार आप अनेक प्रकार के प्रयोग सफलतापूर्वक कर सकते हैं। अब मैं अगले अध्याय में तन्त्र विद्या से सम्बन्धित पक्षों पर चर्चा करूँगा।

———

## ६. पहले इसे पढ़ लें

तन्त्र विद्या सीखने और अभ्यास शुरू करने से पहले आप के लिए नीचे लिखी कुछ बातों को जान लेना अति आवश्यक है। इन बातों में कुछ ऐसी भी हैं जिनका पालन करने से आप शीघ्र सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

बिना श्रद्धा और विश्वास जमाये कभी भी तन्त्र विद्या का अभ्यास आरम्भ नहीं करना चाहिए। जहाँ जिस विद्या को आप सिद्ध करने जा रहे हैं, उसमें निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी। किसी भी प्रकार के भय, निराशा, चिन्ता आदि भावनाओं को अपने पास भी नहीं फटकने देना चाहिए।

अश्रद्धावान, अज्ञानी, वहमी और मूर्खों के साथ तन्त्र के विषय में कभी तर्क न करें। केवल उन्हीं लोगों से बातचीत करो, जो इस पर विश्वास रखते हों और आपको समय पड़ने पर प्रेरणा भी प्रदान कर सकें।

इसके अतिरिक्त सुबह शाम खुली हवा में गहरे-गहरे श्वाँस खींचो और धीरे-धीरे छोड़ो। सोने के स्थान में स्वच्छ वायु आनी चाहिए, सोते समय खिड़की या दरवाजा खुला रखना चाहिए।

धन के लालच अथवा किसी बुरी इच्छा को पूरा करने के लिए तन्त्र-मन्त्र का प्रयोग मत करो।

प्रयोग करते समय तांत्रिक को चाहिए कि रोगी अथवा पीड़ित को किसी प्रकार का कष्ट न हो।

प्रयोग करते समय हृदय में डर पैदा करने वाली कोई क्रिया न करो।

प्रयोग के दिनों में ब्रह्मचर्य का पूरा पालन करें।

किसी का अनिष्ट करने के उद्देश्य से तन्त्र प्रयोग कभी न करें।

अब मैं तन्त्र शास्त्र में वर्णित षट्कर्मों का वर्णन कर रहा हूं।

शांतिकर्म, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन तथा मारण इन छः प्रयोगों को षट्कर्म कहते हैं।

किसी यन्त्र, मन्त्र, तन्त्रादि क्रिया द्वारा किसी को मार देना 'मारण' है किसी को मोह लेना 'मोहन' है। एक देश और स्थान छोड़कर दूसरे स्थान पर चला जाना 'उच्चाटन' है। अपने अधीन किसी को कर लेना 'वशीकरण' है। हाथ, पाँव, जिह्वा बुद्धि अथवा सब अंगों का बंध जाना 'स्तम्भन' है। किसी में परस्पर बैर उत्पन्न हो जाना 'विद्वेषण' है।

इनके अतिरिक्त इन्हीं प्रयोग के अन्तर्गत और भी बहुत से प्रयोग हैं जो यहाँ लिखे नहीं जा सकते। आगे मैं इन्हीं छः कर्मों एवं प्रयोगों का विवरण लिखूंगा।

प्रथम प्रहर में शांतिकर्म। दूसरे पहर में वशीकरण स्तम्भन और मोहन। तीसरे प्रहर में उच्चाटन विद्वेषण और चौथे प्रहर में मारण कर्म किया जाता है। अब मैं हर कर्म की व्याख्या संक्षेप में प्रस्तुत कर रहा हूं।

## षट्कर्मों के करने का चक्र

| कर्म | मरण | मोहन उ० | | वशीकरण | स्तम्भन | विद्वेषण | शांति |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इष्ट | भद्र | अजि० | दुर्गा | सर० | लक्ष्मी | बगला | शांति |
| दिशा | दक्षिण | आग्ने० | वायव्य | उत्तर | पूर्व | नैऋत्य | ईशान |
| शरद | शरद | बसन्त | वर्षा | हेमन्त | शिशिर | ग्रीष्म | हेमन्ती |
| दिन | शनि | रवि | शनि | बुध | शनि | भौम | चन्द्र |
| तिथि | कृष्ण चतु० | अष्टमी | चतु० | त्रयो० | प्रतिपदा | छठ | तीज द्वादशी |
| नक्षत्र | पर० | मघा० | अश्लेषा | ज्येष्ठ | विशाखा | आद्रा | उ०रो० |
| वस्त्र | लाल कृष्ण | पीला | लाल | पीत | धूम्र | लाल | सफेद |

### वशीकरण

'वशीकरण' दो शब्दों से मिलकर बना है। परन्तु विधिवत उसका जाप करना भी परम आवश्यक है, गोस्वामी तुलसीदास जी

ने अपना मत इस पर प्रगट किया है—

'तुलसी' मीठे वचन से, सुख उपजत चहुं ओर।
वशीकरण एक मन्त्र है, तज दे वचन कठोर॥

## उच्चाटन

उच्चाटन मन्त्र से दो व्यक्तियों का उच्चाटन होता है।

## मोहन

मोहन से दूसरे लोगों को मोहित कर अपने आश्रित बनाया जाता है।

## विद्वेषण

इस मन्त्र से दो व्यक्तियों में विरोध पैदा हो जाता है। इसी के अन्तर्गत 'द्रावण' भी आता है जिसके द्वारा स्त्रियों का रज स्थिर किया जाता है।

## आकर्षण

आकर्षण प्रयोग से दूसरे स्थान पर बैठे हुए व्यक्तियों को अपने पास बुलाकर उससे इच्छानुसार कार्य कराया जाता है।

## स्तम्भन

जिस क्रिया से कोई वस्तु कुछ समय तक वहीं पर ठहर जाए, वही स्तम्भन है।

## मारण

**मारणं न वृथा कार्य यरस कस्य कदाचन।
ब्राणन्दु संकटे जाते कर्तव्य भूतिमिचछता॥**

जिस कर्म से किसी का प्राण हरण कर लिया जाये उसे 'मारण' कहते हैं। यह प्रयोग किसी पर वृथा नहीं करना चाहिये। जहाँ पर भीषण संकट उपस्थित हो वहाँ अपने कल्याण की इच्छा से इसका प्रयोग करना चाहिए।

इसी प्रकार सब कर्मों के अलग-अलग गुण धर्म हैं। उन्हें विधिपूर्वक करने से फल की प्राप्ति होती है।

शान्ति कर्म की अधिष्ठात्री 'रति' है। वशीकरण की सरस्वती। स्तम्भन की लक्ष्मी, विद्वेषण की ज्येष्ठा, उच्चाटन की दुर्गा और मारण कर्म की अधिष्ठात्री काली है। जिस प्रकार जैसा प्रयोग करना हो, उसके आरम्भ में उसकी पूजा करे।

**साधना में प्रयुक्त होने वाली माला, दिशा, आसन, जप, तिथि एवं अन्य जानकारी—**

मूंगा अथवा हीरा की माला वशीकरण और दुष्ट कर्म में प्रयोग करें। मनुष्य के बालों से घोड़े के दाँत की माला गूंथ कर उस से विद्वेषण और उच्चाटन कर्म में जप करें। युद्ध के बिना अन्य प्रकार से मृतक पुरुष के दाँत अथवा गधे के दाँत की माला से मारण कर्म में जप करें। शंख व मणि की माला बनाकर धर्म अर्थ सिद्धि के अर्थ उससे जप करें। रूद्राक्ष की माला सब कार्यों में उत्तम फल देती है। स्फटिक मोती, रूद्राक्ष, मूंगा और पुत्र जीवा की माला विद्या प्राप्ति के लिए प्रयोग करनी चाहिए।

वशीकरण मंत्र जपते समय पूर्व की ओर मुख करके बैठना चाहिए मारणादिक कर्म में दक्षिण की ओर मुख करके मंत्र जपे और धन के निमित्त पश्चिम मुख शाँति कर्म में उत्तर मुख बैठ कर मन्त्र जपना चाहिए।

जप तीन प्रकार का होता है वाचिक, उपाँशु, मानसिक।

जिस मन्त्र को जप करते समय दूसरा सुन लेवे उसको वाचिक कहते हैं और जो केवल अपने आपको ही सुनाई पड़े उसको उपांशु कहते हैं तथा जिस मन्त्र जाप में ओंठ और जीभ न चले और केवल मन से जप किया जावे उसे मानसिक जप कहते हैं। मानसिक जप में अक्षर का ध्यान किया जाता है।

मारण आदि प्रयोग में वाचिक जाप सिद्धिदायक होता है और शांति व पुष्टिकर्म में उपाँशु जप तथा मोक्ष के साधन में मानस जप श्रेष्ठ कहा जाता है।

शान्ति और पुष्टिकर्म में पद्मसूत्र के डोरे से माला को गूंथे आकर्षण व उच्चाटन कर्म में घोड़े की पूंछ के बालों से गूंथी माला शुभ होती है और मनुष्य की नसों से गूंथी मारण कर्म में शुभ होती है तथा अन्य कर्म में कपास से गूंथी हुई माला से मंत्र जप करना चाहिए। सत्ताईस दानों की माला समस्त सिद्धियों को प्रदान करती है। अभिचार कर्म में पन्द्रह दानों की माला पूर्ण फलदायक होती है। तांत्रिकों ने एक सौ आठ दानों की माला को उचित माना है।

वशीकरण में भेड़ा के चर्म का आसन, आकर्षण में मृगचर्म, उच्चाटन में ऊँट के चर्म का आसन, मारण में कम्बल के आसन पर तथा अन्य सब मंत्रों को सिद्ध करने के लिए कुशा का आसन होना चाहिए।

शांति कर्म में दूध, शुद्ध घी, तिल, गूलर और पीपल की लकड़ी पर अमरवेलि बौर का हवन करे। पुष्टिकर्म में शुद्ध घी बेलपत्र और चमेली के फलों का होम करे। सन्तान की इच्छा करने वाला खीर से हवन करे। लक्ष्मी की इच्छा करने वाला

कमलगट्टा, दही और घृत से मिले हुए अन्न का हवन करें। सुख समृद्धि के लिए बिल्वपत्र और तिल का, आकर्षण के लिए चिरोंजी और बेलफूल। वशीकरण के लिए राई और नमक का होम करना चाहिए। उच्चाटन में कौए के पंख का, मोहन में धतूरे के बीज का हवन करें।

शांति स्तम्भन और वशीकरण में अंगूठे से माला को फेरे तथा आकर्षण में अंगूठा और अनामिका से, विद्वेषण और उच्चाटन में अंगूठा और तर्जनी से, मारण में कनिष्ठा और अंगूठे से माला के दाने फेरने चाहिए।

साधक को चाहिए कि वह सिंह, तथा मेष राशि में पूर्व तुला, मिथुन एवं कुम्भ राशि में पश्चिम, वृष, कन्या और मकर में दक्षिण तथा कर्क, वृश्चिक और मीन में उत्तर की ओर साधना न करें। धनु, वृष और कन्या में अग्नि कोण, मकर, कर्क और मीन में नैऋत्य कोण, कुम्भ, मेष और धनु में वायव्य कोण तथा सिंह, मीन और कर्क राशि में ईशान कोण की साधना नहीं करनी चाहिए।

रविवार को पश्चिम बुधवार को दक्षिण मंगलवार को उत्तर में साधना नहीं करनी चाहिए। वृहस्पतिवार को नैऋत्य कोण में, शुक्रवार को वायुकोण में, शनिवार को और विशेष सोमवार को ईशान कोण में साधना नहीं करनी चाहिए।

प्रतिपदा तथा नवमी तिथि को पूर्व दिशा में साधना वर्जित है।

चतुर्दशी तथा षष्ठी को पश्चिम दिशा, त्रयोदशी तथा पंचमी को दक्षिण दिशा, द्वितीया तथा दशमी को नैऋत्य कोण, पूर्णिमा तथा सप्तमी को वायव्य कोण अमावस्या तथा अष्टमी को ईशान कोण में साधना नहीं करनी चाहिए।

अब मैं साधकों के समक्ष कुछ गोपनीय एवं चमत्कारी साधनाओं का वर्णन करूँगा, लेकिन इससे पहले तन्त्र-मन्त्र के जिज्ञासु साधकों के ज्ञान वर्धन के उद्देश्य से कुछ जाने-माने ऋषियों के मन्त्र प्रस्तुत हैं।

## ऋषियों के मन्त्र

भारद्वाज ऋषि का मन्त्र—

**ओं ब्रह्म तेजसे ब्रह्मत्व आदित्याय ह्रीं ब्रह्मं ह्री ह्रूं औं फट्॥**

अरुन्धती का मन्त्र—

**औं क्षं मानसे शृं पृथिव्यै घ्रं सूर्याय चरात्मकाय ऐं औं हुँ फट्॥**

ऋषि वशिष्ठ का मन्त्र—

**ओं उत्तिष्ठ श्रं ज्वल ज्वल प्रज्ज्वल प्रज्ज्वल ज्रं ओं फट्॥**

अत्रि ऋषि का मन्त्र—

**ओं लृं पृथिव्यं गंधात्मक क्षं क्षे क्षौं क्षः सूर्याय फट्।**

कणाद् ऋषि का मन्त्र—

**तेजसे श्रौं श्रीं श्रौं अणुवै परमाणुवै श्रियै श्रं फट्॥**

महर्षि विश्वामित्र का मन्त्र—

**भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रें भ्रौं भ्रं भद्राय सूर्य्यं तेजसे आदित्याय फट्॥**

ऋषि पुलत्स्य का मन्त्र—

**घृणां घ्रं घ्रीं घ्रूं घ्रें घ्रौं घ्रं सूर्य्याय फट्॥**

कामाख्या देवी का गायत्री मन्त्र—

**ओं भूर्भुवः स्वः कामाक्ष्यै विद्महे भगवत्यै धीमहि तन्नो**

**गौरी प्रचोदयात्।**

सावित्री का गायत्री मन्त्र—

**ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो तो नः प्रचोदयात्।**

इसी प्रकार लक्ष्मी जी का गायत्री मन्त्र है—

**ओं भूर्भुवः स्वः महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।**

## पूर्व जन्म जानने के लिए साधना

पूर्व जन्म दर्शन २१ दिन की साधना है, और इसमें नित्य एक सौ पांच माला मन्त्र जप कमलगट्टे की माला से सम्पन्न किया जाता है, इसके अतिरिक्त विधि विधान है, जो साधना के लिए आवश्यक होते हैं, यह साधना सिद्ध होते ही साधक को जहाँ अपना विगत जीवन साफ-साफ दिखलाई दे जाता है वहीं उसे किसी भी पुरुष या स्त्री का विगत जीवन भी देखने को मिल जाता है। मन्त्र इस प्रकार है।

ओं ह्रीं पश्य पश्य विगत जीवनाय 'अमुकं' मे दृश्य दृश्य फट्।

वास्तव में यह साधना चमत्कारी है। इसके अतिरिक्त एक और प्रयोग इस आशय के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ।

साधक को चाहिए अमावस्या की रात अपने सिर के ग्यारह बाल तोड़े और प्रत्येक बाल पर निम्न मंत्र पढ़ता हुआ दो गांठ लगावे।

ओं पूर्वजन्म क्लीं भगवती भ्यो नमः।

नित्य ग्यारह माला मन्त्र जप करें और इस प्रकार चालीस दिन तक करें, अन्तिम दिन इन बालों को स्वर्ण के यंत्र में भर कर बांह पर बाँध लें तो अपना पूर्व जन्म दिखलाई देता है, और वह सब कुछ पता चलता है, कि पिछले जन्म में हम कहाँ थे, और किस प्रकार से वह जीवन व्यतीत हुआ था।

## स्वप्न से जन्म जानने के लिए

जीवन के विषय में जानने के लिए साधक को रात्रि को स्नान कर प्रश्न को भोजपत्र पर लिखकर स्वप्नेश्वरी देवी का ध्यान कर वह भोजपत्र तकिये के नीचे रख दें और सो जायें।

उसी रात्रि को उसे स्वप्न में प्रश्न का उत्तर प्राप्त हो जाता है, वह उत्तर एकदम अनुकूल सिद्ध होता है। मन्त्र निम्न है—

ओं ह्रीं मानसे स्वप्नेश्वरि विचार्य विद्ये वद् वद् स्वाहा।

## परकाया प्रवेश

परकाया प्रवेश की केवल दो विधियां प्रचलित हैं, प्रथम योग के द्वारा और दूसरी साधना के द्वारा। योग के द्वारा तो साधक अपने प्राणों का उत्थापन करके उसे जीवात्मा से सम्बन्धित करता है, और उसे मनोवाँछित स्थान पर पहुंचाने की शक्ति प्राप्त करता है, इसके लिए कुछ आसान मुद्राएँ, और क्रियाओं का प्रयोग करना होता है, ऐसा करने पर उसे अपनी आत्मा पर नियन्त्रण प्राप्त हो जाता है, और इसके द्वारा मृत देह को पुनः जीवित कर देता है।

जिस समय वह अपने प्राणों को विसर्जित करता है, तब उसे

एक निश्चित अवधि का संकेत भी दे दिया जाता है, और निश्चित अवधि के बाद बिना सैकिण्ड का भी विलंब किये प्राण अपने मूल देह में आ जाते हैं। इस अवधि तक सूक्ष्म पिण्ड धड़कता रहता है, इस वजह से हृदय की धड़कन रक्त संचार और सूक्ष्म चेतना बराबर बनी रहती है।

यद्यपि यह कार्य अत्यन्त कठिन है, अतः यह किसी योग्य गुरू के मार्ग दर्शन में करना ठीक रहता है।

नीचे मैं जनहितार्थ परकाया प्रवेश से सम्बन्धित एक प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूँ, साधक स्नान-ध्यान कर पुष्य नक्षत्र से यह साधना शुरू करें, सर्वप्रथम गुरू का स्मरण करें, उन पर कुमकुम, अक्षत चढ़ावें और शुद्ध घी का अखण्ड दीपक प्रज्वलित करें।

यह मन्त्र मात्र छः लाख जपना होता है, जप समाप्ति के बाद जब सिद्धि प्राप्त हो जाती है, तो साधक सिद्धासन लगाकर परकाया में प्रवेश कर सकता है। प्रयोग निम्न प्रकार है।

## विनियोग

**ओं ऐं ह्रीं श्रीं अं सत्ये, हं शक्ले, हस्ख्फे खर्वे, क्लीं रामे, हस्ख्फे महापरिवृत्तौ, शून्यं परकाया सिद्धिं नारद ऋषिः गायत्री छन्दः, श्रीं गुरू देवता, गं बीजं ह्रीं शक्तिः, ओं कीलकं परकाया प्रवेश सिद्धिं प्रीत्यर्थे मन्त्र जपे विनियोगः ॥**

## पूजन

**लं पृथिव्यात्मकं गन्धं—समर्पयामि**
**हं आकाशात्मकं पुष्पं—समर्पयामि**

यं वायव्यात्मकं धूपं—समर्पयामि
रं बन्हात्मकं दीपं—दर्शयामि
वं अमृतात्मकं नैवेद्य—निवेदयामि
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं—निवेदयामि

**मन्त्र**

**ओं परात्परायै, विनिर्मुक्तायै परकायै ह्री कुलेश्वर्यै फट्।**

अब मैं आपके लिए कुछ अत्यन्त गोपनीय एवं सिद्ध चमत्कारी साधनाएँ प्रस्तुत कर रहा हूं, साधकों के हित में ही होगा अगर वह इन दुर्लभ साधनाओं का प्रयोग जिज्ञासा, प्रदर्शन अथवा रौब जमाने के लिए नहीं करेंगे।

शून्य में से पदार्थ प्राप्त करें—

यह एक अघोर साधना है जो शीघ्र सिद्ध हो जाती है। कोई भी साधक इस साधना को घर में ही रहकर सिद्ध कर सकता है।

इस साधना में भृंगराज पौधे से बने आसन पर साधक बैठकर अगर निम्न मंत्र का एक लाख जप करें तो निश्चय ही यह सिद्धि प्राप्त हो जाती है, इस साधना में किसी प्रकार की सामग्री विशेष की आवश्यकता नहीं होती है।

मन्त्र इस प्रकार है—

ओं वीर वीर वैताल वश्यं कार्य सिद्धि मनोवांछित पदार्थ कुरु कुरु हुं हुं फट्।

**अदृश्य विद्या साधना**

यह भी एक अघोर साधना है, और इसे सिद्ध करने के बाद साधक अदृश्य हो सकता है अथवा स्वच्छंद विचरण कर सकता

है।

इस साधना को कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी से प्रारम्भ करना चाहिए। यह साधना श्मशान में अथवा वट वृक्ष के नीचे सम्पन्न की जाती है, अंकोल के तेल से दीपक जलायें और अपने पास ही मटकी जल से भर कर रख लें और फिर साधक स्नान कर दीपक से बने काजल का तिलक करें, और अपने सामने खप्पर में दूध और शक्कर को मिलाकर रख दें। दीपक अखंड जलते रहना चाहिए।

नित्य ६१ माला मंत्र जप करें। जप में सर्प अस्थियों की माला प्रयोग करें।

मन्त्र निम्न है—

ओं ह्रीं क्लीं ऐं आसुरी रक्तवाससे अघोर-अघोर कर्ममारिके अदृश्यं कुरु-कुरु ह्रीं ऐं ओं॥

यह केवल सात दिन ही की साधना है और नित्य रात्रि को इसी प्रकार खप्पर में दूध रखकर दक्षिण की ओर मुंह कर मंत्र जाप करना चाहिए। जब साधना सिद्ध हो जाती है तब साधक अलौकिक बन जाता है।

### मारण साधना

'उड्डीश तंत्र' में लिखा है कि किसके लिए इस मन्त्र का प्रयोग करना चाहिए—

**मारणं न वृथा कार्यं यस्य कदाचन।**
**प्राणान्तसङ़ कटे जाते, कर्त्तव्यं भूतिमिच्छता॥**

मारण प्रयोग किसी के ऊपर कभी भी व्यर्थ नहीं करना चाहिए। इसका प्रयोग अपने प्राणों पर संकट आ पड़े, तभी करना

उचित है, जबकि प्राण जाने की आशंका सामने हो।

**मूर्खेण तु कृतं तन्त्र स्वस्मिन्नेव समापयेत्।**
**तस्मात् रक्ष्यं सदात्मानं मारणं न क्वचित चरेत्॥**

मूर्ख द्वारा किया हुआ प्रयोग स्वयं उसी को नष्ट कर देता है। ऐसी अवस्था में जो सर्वदा अपनी रक्षा करना चाहे, उसे भूलकर भी कभी मारण का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

मृत्यु को सामने देखकर उससे अपने बचाव के लिए यह मन्त्र बनाकर साथ में इस मन्त्र का पाठ करना चाहिए। खाली स्थान पर शत्रु का नाम लगा लेना चाहिए।

### मन्त्र

**ओं नमः काल-संहाराय अमुक हन् हन् फट् स्वाहा।**

मारण की विधि बहुत जटिल है। यह भयंकर और व्ययसाध्य भी है। फिर भी तन्त्र-विद्या है। साधकों की जानकारी के लिए यहाँ दी जा रही है।

**निम्बकाष्ठ समादाय, चतुरंगुलमानतः।**
**शत्रुकेशान् समालिप्य ततो नाम समालिखेत्।**

चार अंगुल नाप की नीम की लकड़ी लाकर उस पर शत्रु के सिर के बाल लपेटें। उसी लकड़ी से शत्रु का नाम लिखें। फिर श्मशान में जाकर उस नाम को सावधानी से चिता के अंगारे की धूप देवें। इस प्रकार सात रात तक करें। जिसके नाम पर इस प्रयोग को करें उसका नाम बोलते जाएँ। कृष्ण पक्ष की अष्टमी को, एक सौ आठ बार निम्नलिखित मन्त्र का जाप करें तो मन्त्र की शक्ति को जानने वाला साधक शीघ्र ही अपने मन्त्र के बल से अपने शत्रु

को बाँध लेता है।

**मन्त्र**

**ओं नमो भगवते भूतधिपते विरुपाक्षाय घोरदष्ट्रिने, विकरालिने ग्रहयक्षभूतनाथ शंकर..................। हन् हन्, दह दह, पच पच, गृहण गृहण हुं फट् ठः ठः॥**

इसी मन्त्र का एक सौ आठ बार जाप करना चाहिए और खाली स्थान पर शत्रु का नाम रख देना चाहिए। इसके उपरांत चिता में से मृत की हड्डी की कील लेकर एक हजार एक सौ बार जप करें, फिर खोपड़ी से स्पर्श कराकर वहाँ चिता स्थल पर ही दबा दें। शत्रु का तुरन्त नाश होगा।

# ७. शीघ्रगमन बैताल साधना

यह एक विचित्र साधना है और इस साधना के द्वारा साधक एक घण्टे में कहीं भी आ जा सकता है, इस प्रकार न तो उसे थकावट आती है और न किसी प्रकार का कष्ट होता है। देवरहा बाबा इस विद्या के ज्ञाता थे।

यह साधना किसी भी अष्टमी से प्रारम्भ करनी चाहिए, मध्य रात्रि में स्नान ध्यान कर पीली धोती पहिन कर वही धोती ओढ़ भी लें, सामने एक तेल का दीपक जला लें। फिर लाल आसन बिछाकर उस पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाये तथा लाल हकीक की माला से मन्त्र जाप करें।

यह साधना ४१ दिन की है, नियमित रूप से करने पर यह सिद्ध होती है। मन्त्र निम्न है—

**ओं वीर वैतालाया शीघ्र गमनायै गच्छ गच्छ वेताल हूं हूं फट्।**

### वीर सिद्धि

यह साधना अत्यन्त कठिन और खतरनाक है, मेरा परामर्श है बिना गुरू के यह साधना सम्पन्न नहीं करनी चाहिए, इस साधना के प्रभाव से प्राय: वीर प्रकट हो जाता है।

यह ४१ दिन की साधना है, अमावस्या की रात्रि को श्मशान में जाकर मध्य रात्रि के समय एक ताजा मुर्दा लें और उसे स्नान

करावे फिर उसका सिर दक्षिण की ओर तथा पैर पश्चिम की ओर रखकर लिटा दें और सीने पर श्मशान की राख को गंगाजल में घोल उससे "क्रीं फट्" लिखे और फिर उसके सीने पर पालथी मारकर स्वयं को सिन्दूर का तिलक करें और उस मुर्दे के मस्तक पर भी सिन्दूर का तिलक करें फिर उसका पूजन करें। इसके बाद उस मुर्दे को वीर अभिषेक मन्त्र से अभिमन्त्रित करें, सर्प अस्थियों की माला से उसके सीने पर बैठकर सौ माला का जप करें। मन्त्र इस प्रकार है—

**क्रीं क्रीं वीर वैतालयै ऐं ऐं क्रीं क्रीं हुं हुं क्लीं क्लीं वैताल सिद्धि ह्रीं ह्रीं फट्।**

मन्त्र साधना करने से पूर्व रक्षा कवच करते हुए दसों दिशाओं को बाँधकर फिर यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए। साधक के लिए यह अनिवार्य कृत्य है।

## औघड़ साधना

औघड़ साधना का यह प्रयोग अत्यन्त गोपनीय है। यह प्रयोग मुझे औघड़ से ही प्राप्त हुआ था। इसका प्रयोग बतलाते हुए, उसने बताया कि अमावस्या की रात्रि को किसी ताजे मुर्दे की भस्म लाकर उसका शिवलिंग बनावे और अपने सामने उसको स्थापित कर दें, फिर पश्चिम की ओर मुंह कर भगवान शिव का रौद्र रूप स्मरण करते हुए, लगभग आठ घण्टे निम्न मन्त्र जप करें, ऐसा करने पर सिद्धि प्राप्त हो जाती है। औघड़ सिद्धि को सिद्ध करने के उपरान्त कोई भी औघड़ साधना सम्पन्न की जाये तो उसमें सफलता अवश्य मिलती है।

यह साधना वर्ष में केवल एक दिन अमावस्या की रात्रि को ही सम्पन्न करनी चाहिए इससे शरीर सुरक्षित रहता है, उस पर किसी तांत्रिक क्रिया का प्रभाव भी नहीं होता, मन्त्र जाप में शुद्ध उच्चारण का विशेष ध्यान रखें।

मंत्र इस प्रकार है—

**ओं वीर भूतनाथाय औघड़ महेश्वराय रक्ष रक्ष हुँ हुं फट्।**

## भूत प्रेत वश में करने की साधना

यह सत्य है औघड़ पंथ का आधार ही भूत-प्रतों के बीच रहना और उनसे इच्छित कार्य सम्पन्न कराना है, यों तो भूत साधना के अन्य कई प्रयोग हैं पर यह साधना तुरन्त सिद्धिदायक है। प्रयोग इस प्रकार है—

अमावस्या की मध्य रात्रि को ताजे मुर्दे की भस्म बिछाकर उसके ऊपर सिद्धासन में बैठ जायें और अपने चारों ओर चिमटे से घेरा बना लें फिर भगवान शिव मन्त्र को सात घण्टे तक बराबर जपते रहें तो श्मशान में उपस्थित भूत वश में हो जाते हैं और आपका मन चाहा कार्य सदैव सम्पन्न करते रहते हैं।

दैवयोग से मन्त्र जपते समय कोई उपद्रव अथवा विचित्र दृश्य देखने को मिल जाये तो भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं है, यह प्रयोग मेरा परीक्षित है। मंत्र इस प्रकार है—

**ओं रूद्र भूतनाथाय षटभूत वशं कुरू कुरू आज्ञा पालय रूद्राय हुँ हुँ फट्।**

## श्यामा सिद्धि

अगर मुझसे कोई यह प्रश्न करे—स्त्री साधकों के लिए कौन

सी साधना सबसे उपयुक्त है? तो मैं कहूंगा केवल श्यामा साधना? यहाँ यह आप स्पष्ट समझ लें, स्त्री साधकों से मेरा अभिप्राय महिला तांत्रिकों से है। इस साधना से मन पर कठोर नियन्त्रण होता है और उसका सारा शरीर सुरक्षित हो जाता है, पाँचों कर्मेन्द्रियों और पाँचों ज्ञानेन्द्रियों पर पूरा-पूरा नियन्त्रण हो जाता है।

महिला साधक को चाहिए कि मध्य रात्रि में श्मशान में जाकर अपने गुरु के मार्ग निर्देशन में दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सर्वथा नग्न हो बैठ जाये और सामने किसी विपरीत लिंगी को भी बैठा ले, जो सामने साधक बैठा हुआ हो, उसके लिए आवश्यक है कि वह साधना करता हो, विपरीत योनि में बैठे हुए भी मन पर नियन्त्रण रखने में समर्थ होना तथा मन्त्र जाप करना ही श्यामा सिद्धि की प्रमुख विशेषता मानी गयी है। फिर अभिमन्त्रित हकीक माला से आँखें खुली रखते हुए निम्न मन्त्र की ६१ माला फेरे।

प्राय: तॉंत्रिक गुरु अथवा कौलाचार्य साधना क्षेत्र में प्रवेश देने से पूर्व साधक को इस प्रकार की साधनाएँ कराया करते हैं। मन्त्र इस प्रकार है—

**ओं सोऽहं मणिभद्रे हुँ।**

## भैरव सिद्धि

महिला साधकों एवं पुरुष साधकों के लिए यह समान रूप से उपयुक्त साधना है। पर यह साधनाएँ तीक्ष्ण और कठोर हैं जरा सी चूक होते ही मृत्यु का वरण करना पड़ता है।

इसमें ''भैरव'' को सिद्ध किया जाता है। ऐसी तान्त्रिक साधनाएँ सम्पन्न कर साधक संसार में अजेयता प्राप्त करने में

सक्षम हो पाते हैं।

किसी भी अमावस्या को अर्द्ध रात्रि के समय श्मशान में जाकर किसी स्थान पर मौन बैठ जायें और अपने चारों ओर सुरक्षा मन्त्र पढ़कर लोहे के चिमटे से घेरा बना दें और बकरे का कुछ माँस किसी एक पात्र में भरकर अपने पास रख दें, दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर बैठते हुए, दसों दिशाओं को बाँधकर श्मशान जागरण क्रिया सम्पन्न करें। इसमें नित्य ६१ माला जप सर्प अस्थियों की माला से करना आवश्यक होता है और प्रत्येक माला के बाद भूतों को बलि देना भी आवश्यक होता है। इस प्रकार जब ६१ माला सम्पन्न हो जायें तब उठ कर अपने घर आकर स्नान कर लें। यह ३१ दिन की साधना है, किसी गुरु के निर्देशन में ही इस साधना को सम्पन्न किया जाय तो ज्यादा उचित रहता है।

मन्त्र इस प्रकार है—

**ओं ब्रह्म भूतायै भैरवायै बलि ग्रहण ग्रहण मम वश्यं साधयै क्रीं क्रीं हुँ हुँ फट्।**

## चौकी देने का मन्त्र

*अड़सठ कुर्सी तीस पुराण मोरे बन्धे तू रहमान, डबल लोहे की बारी सरदी पड़ी शरीर आस-पास गेर फिरे रखवाली जहाँ लग बजे मोरी ताली तहां लग बन्द हो बज्र किवाड़ तेरे लैहों मद की धार ऊपर ले दो मुर्गा ढार, अली अलामत की दुहाई।*

सफर के मध्य अगर आप आराम करना चाहें तब अपने बिस्तर के आस-पास उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए एक वृत्त बना दें और ताली बजा दें। जितनी दूर तक ताली की आवाज जाएगी,

वहाँ तक की जगह बन्ध जाएगी और किसी तरह का भय शेष नहीं रह जाएगा।

## अशान्त आत्मा, भूत-प्रेत भगाने का मन्त्र

*सरस्वती की गाड़ी सुन्ने का दिया, रूपे की बाती, गुण बाती अंकिनी डंकिनी शंखिनी जादू टोना तेरी भवानी इसी घड़ी यहाँ से निकल जाय, मेरी आन मेरे गुरु की आन् ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।*

उपरोक्त मंत्र का जाप करते हुए मोर पंख से झाड़ा लगावें।

## आत्मा दिखलाई दे

काले घोड़े की विष्ठा लाकर रुई के साथ लपेट कर बत्ती बना लें फिर तिली के तेल में डालकर दीपक में जलाने से जहाँ तक दिये का प्रकाश जाता है वहाँ तक भूत-प्रेत ही नजर आते हैं।

## भूत प्रेत उतारने का मन्त्र

घुग्घू का माँस और चरबी दोनों को अलग-अलग सुखाकर पीसकर शनिवार और रविवार को मिला लें और जिस स्थान पर प्रेत हों उस स्थान पर धूनी देवें तो भूत-प्रेत चले जाते हैं। अगर आप उपरोक्त दोनों वस्तुओं को निम्न मंत्र से अभिमंत्रित कर लेंगे तो लाभ कई गुणा बढ़ जायेगा। मन्त्र निम्न है—

**'ओं ह्रीं श्रीं ज्वालामुखी ममसर्वशत्रुन् भक्षय भक्षय हुं फट् स्वाहा।'**

## भूत प्रेत भगाने का मन्त्र

*बाँधो भूत जहाँ तू उपजो छाड़ौ गिरे पर्वत चढ़ाई सर्ग दुहेलि तुजभि झिलमिलहि हंकोर हनुमन्त पचारई भीमा जारि–जारि भस्म करें जो चापें सींऊ मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।*

उपले की राख को रोगी के ऊपर से २१ बार उतार कर मन्त्र पढ़ते हुए २१ बार फूंक मारें तो रोगी तुरन्त ठीक हो जाता है।

## भूत-प्रेत बाधा होने पर

*कुल आओ जो बैर बिन्यासे मिले किन्नासे इला हिन्नासे मिन सरिल बस बासिल खन्नाश अलरजी यो बसबिसोफी सुदु रिन्नासे मिनल जिन्नति बन्नास।*

उपरोक्त मन्त्र से गंगाजल अभिमंत्रित करके जिस व्यक्ति पर आत्मा सवार हो पिलायें। रोगी ठीक हो जाता है।

## जीरे द्वारा प्रेत निवारण

*जीरा–जीरा महाजीरा जिरिया चलाय, जिरिया की शक्ति से 'फलानी' चली आय, जीये तो रमटले, मोहे तो मधान टले हमरे जीरा मन्त्र से 'अमुक' अंग भूत चल जाये, हुक्म पाँडुका पीर की दुहाई।*

थोड़ा सा जीरा लेकर मंत्र पढ़ते हुए रोगी के ऊपर ११ बार उतार कर 'अमुक' की जगह उस व्यक्ति का नाम लेवे जिसे प्रेत लगे, आग पर डाल देवे। प्रेत भाग जायेगा।

## हाजरात

न्यौत कर लाये गए अपामार्ग की टहनी में से एक इंच लम्बी पतली टहनी तोड़कर रूई की बत्ती में लपेटकर एक सिरे को दीपक के ऊपर जलने हेतु रखें और दूसरा सिरा दीपक के भीतर रखें। दीपक शुद्ध घी से जलाएँ। फिर किसी बच्चे को जो स्वच्छ हो, दीपक के सामने बैठाकर कहें, कि इस ज्योति के भीतर देखें, उसमें एक सुई दिखलाई देगी। उससे पूछो कि क्या वैसा दिख रहा है? जब वह कहे हाँ दिख रहा है तब आप कहें कि सही रूप में आइये। तब वह बूढ़े बाबा के रूप में हाथ में डण्डा लिए हुए आयेंगे। अब आप उनसे जो भी जानना चाहोगे वह उस लड़के को बतलाते जायेंगे। आपके हर प्रश्न का सही जवाब होगा। यह प्रयोग मेरा परीक्षित है। निम्न मंत्र का बराबर उच्चारण करते रहें।

**ओ कनक कानो आठा बाठ शूल राजा पाँचाल पाँचाल ओं यं यं यं यं।**

## भूत प्रेत उतारने का मन्त्र

*चण्डी वीर मसान भूत प्रेत के औसान भस्मी भूत कुरु कुरु स्वाहा।*

सवा किलो उड़द के आटे का एक पुतला बनाकर उस पुतले पर घी और सिन्दूर लगाकर धूप दें तथा उपरोक्त मन्त्र को २१६ बार पढ़े फिर उस पुतले को पीतल की तश्तरी के ऊपर रखकर उपरोक्त मन्त्र को पढ़ते हुए रोगी के ऊपर उतार कर उस पुतले की गर्दन को एक ही बार में चाकू से काट दें। जैसे ही गर्दन काटी जावेगी, वैसे ही वह प्रेत ग्रस्त ठीक हो जाएगा। अब आप उस

तश्तरी को ले जाकर शाम के चौराहे पर रख आवें।

## प्रेत बुलाने की साधना

अगर प्रेत को आकर्षित करना हो तो नीचे लिखे मन्त्र को दस हजार बार जाप कर सिद्ध कर लें फिर जब कार्य करना हो तब ५०१ बार जाप कर लें मन्त्र **'अल्लम मुल्लम कुला मुल्लाह'** अन्धेरे कमरे में बैठकर बकरी के गोश्त को आग में डालें उससे जो धुआं निकले उसे एक शीशी में भर लेना चाहिए। फिर उस शीशी को गंगाजल के पानी से धोकर धूप दीप दें तथा गंधक की धूनी दें। इतना करने के बाद जो धुआँ उस बोतल में शेष रह जाएगा वही प्रेत है। जब भी काम करवाना हो उसी समय उस शीशी को धूप में रख दें और काम के बारे में कहें कि अमुक कार्य मेरा तुरन्त करो। जब तक काम न हो जाये तब तक शीशी न उठायें। काम हो जाने पर शीशी सम्भाल कर रख दें।

## श्मशान जागरण हेतु

जब भी कोई व्यक्ति मर जाता है तो लोग शव को शमशान ले जाते हैं श्मशान ले जाते समय शव के साथ कफन के कपड़े में कुछ सामान रख देते हैं। इस प्रयोग को करने के लिए आप शव के साथ-साथ जायें और जहाँ पर वह सामान रखा हो वहाँ से उसे चुपचाप उठाकर ले आयें फिर उस सामान की अंगूठी बनवा लें, फिर अगले दिन जब उसकी अस्थियाँ चुनी जाती हैं उस दिन श्मशान की धूल उठाकर किसी जगह पर जाकर उस खिचड़ी को श्मशान के भीतर मटकी में पकावें। पकाने के बाद उस व्यक्ति को

मंत्रों के द्वारा बुलावें, फिर धूप दीप देकर उस आत्मा को बुलायें, वह आत्मा सामने आयेगी वह आपसे छल्ले को मांगेगी। आप उसे देवें नहीं और उससे वचन ले लें कि आप जब भी उसे बुलाओगे वह आयेगी जब वह वचन दे दे तो उसे जाने दें। वह अंगूठी जब तक पास रहेगी वह आत्मा आपके वश में रहेगी। यह प्रयोग बेहद खतरनाक है, इसलिए अत्यन्त सोच समझकर ही करें।

## भूत प्रेत आने पर

*'बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम लाइल्लालिल्लाह मुहम्मदर्रसूलिल्लाह मुसलमानी अबादानी मरी न खाय परी न छोड़े वे मुसलमान बहिश्त को जाया हुआ ईद का रोज गुसल कर सैयद बहाया बाजा बम्ब नगाड़ा बख्तर तोप मंगाय दिया प्याले सहाय वा सब चल खाये चौकी चौकी पै चौकी चली अम्बर हुआ सेत सैयदों से रारि हुई तरवर तारा गढ़ के खेत खिंगसा घोड़ा नहीं मीना सा मर्द वही जिसने सरवार तारा गढ़ तोरा अज़यपाल सा देव नहीं जिसने चक्कर चलाया मीरा पढ़ी नमाज वहां का वहीं ठहराया आतिल कुर्सी बन्द कुरात घाटे बाढ़े तुहि समान आकाश बाँध पाताल बाँधे बाँधे नदी तालाब देह बाँध धड़ को भी बांधे कहा हुए जाय मरघटियामसान हहिया मसान जहि-हिया मसान मिरगिया मसान फलकिया मसान कालका ब्रह्मराक्षस को चुड़ैल पृथ्वी को देवी देवताओं को बाँध बस में न करें तो सूअर काट सूअर की बोटी दाँत तर दबायेगा सत्तर नाड़ी बहत्तर कोठा से बाँध-बाँध मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फले मन्त्र ईश्वरो वाचा छू मन्त्र।'*

यह मुसलमानी मन्त्र है। इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए

गुगल चराग (दीपक) फूल हिनाका इत्र तथा अन्य सुगन्धित सामान हाथ में लेकर जायें। किसी श्मशान में बारह बजे जाके बाघम्बर पर बैठकर सिद्ध करना चाहिए इसी प्रकार ३१ दिन करें।

## हनुमान यन्त्र आत्मा अशान्त होने पर

| | | | |
|---|---|---|---|
| द्रं | द्रं | द्रं | द्रं |
| दं | दं | दं | दं |
| जं | छं | जं | चं |
| छं | नं | जं | हं |

ऊपर दिखलाये गए ढंग से यन्त्र को सिन्दूर और चमेली के तेल से सवा लाख बार बनायें तो हनुमान जी प्रसन्न होंगे और सर्व कार्यों में सहायता प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त निम्न मन्त्र का यथा शक्ति जाप करें और नीम की पत्तियों की धूनी भी देवें। यह क्रिया चार दिन तक नित्य करनी है।

मन्त्र इस प्रकार है—

**ओं ह्रीं क्लीं कंकाल कपाटिनी कुटुम्बरी आडम्बरी हकार बकार धः धः।**

## संजीवनी विद्या मन्त्र

'हों ओं सा ओं भू र्भू वः स्वाहा। ओं त्र्यम्बकं यज्जामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम् उर्वारूकमिव बन्धानान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। हों ओं जूं सः ओं भू र्भु वः स्वाहा।'

इस मन्त्र की कम से कम दो माला जपने से सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। आरोग्य प्राप्ति इसकी विशेषता है।

## नजर जादू टोना झारने का मन्त्र

*ओं नमो कामरू देश कामाक्षा देवी को आदेश नजर काटों बजर काटों मुहूर्त में देकर आप रक्षा करें जय दुर्गा आय, नरसिंह ओना टोना बहाय (अमुक) रोग सागर पार चला जाये आज्ञा हाड़िदासी चण्डी दुहाई। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।*

रोगी को २१ बार उपरोक्त मन्त्र पढ़कर झाड़ना चाहिए।

## आतमा बुलाने का यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ६२ | ६९ | २ | ७ |
| ६ | ३ | ६२ | ६५ |
| ६८ | ६३ | ८ | २ |
| ६४ | ५ | ६४ | ६७ |

उपरोक्त यंत्र को किसी एकांत स्थान पर बैठकर दीवार, रेत अथवा मिट्टी में बीच की ऊँगली से बनावें तो आत्मा उपस्थित होती है। आत्मा के आने के बाद आप प्रश्न पूछ सकते हैं।

## भूत प्रेत बाधा निवारक यंत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| २४ | ३१ | २ | ७ |
| ६ | ३ | २८ | २७ |
| ३० | २५ | ८ | १ |
| ४ | ५ | २६ | २९ |

उपरोक्त यन्त्र को रविवार या अन्य किसी शुभ अवसर प्रर अष्टगन्ध से भोज पत्र पर अनार की कलम से लिखें फिर आसन पर प्रतिष्ठित कर धूप दीप जलाकर अपने इष्ट देव के मन्त्र की एक माला जपकर गूगल के धुयें में से बाहर निकाल कर यन्त्र में डाल कर गले में धारण करवा दें तो भूत प्रेत डाकिनी शाकिनी आदि का दोष दूर होकर लाभ प्राप्त करता है।

## भूत-प्रतों से भय का निवारण

भूत-प्रेत या फिर अन्य अशान्त आत्मा की बाधा होने पर

रविवार को स्नान करके तुलसी के आठ पत्ते काली मिर्च आठ दाने तथा सहदेवी बूटी की जड़ को काले कपड़े की एक थैली बनाकर उसमें भर लें तथा इसी को ताबीज की तरह काले धागे के द्वारा गले में धारण कर लें तो लाभ हो जाता है।

## भूत-प्रेत बाधा

भूत-प्रेत बाधा होने पर एक लाल कपड़ा लेकर उसमें थोड़ा सा गुड़, सिन्दूर, तांबे का पैसा और काले तिल रखकर वस्त्र की पोटली सी बना करके बाधा ग्रस्त रोगी के ऊपर से ११ बार पार करके रेलवे लाईन के पार फेंक कर बिना पीछे मुड़े ही वापस चले आओ। यह प्रयोग केवल मंगलवार या शनिवार की संध्या को करें जब दोनों समय एक हो रहे होते हैं। सामग्री में सिन्दूर का ही प्रयोग करें कुमकुम का नहीं।

## मसान यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ५७ | ५७ | ६ | ५ |
| ६ | ८ | ४५ | ५३ |
| ७२ | ३६ | ९ | ८ |
| ७ | ४ | ७५ | ५९ |

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर गले में बांधे तो मसान रोग नहीं सताता है।

इस यन्त्र को श्मशान की राख से भोजपत्र पर लिखे तथा सफेद वस्त्र में यंत्र बनाकर बाँधें तो मसान का भय नहीं रहता है।

## अशान्त आत्मा हटाने का यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८५ | ५५ | ९ | १ |
| १ | ६१ | ६२ | १४ |
| ६ | ४ | १८ | ९१ |
| ८ | ६८ | ७६ | ५८ |

उपरोक्त यन्त्र को असगन्ध से भोजपत्र पर लिख कर घर में रखने से अशान्त आत्मा का भय समाप्त होता है। इसको अगर चाँदी की तश्तरी पर श्मशान की मिट्टी से लिखकर भूत के सताए रोगी के सिर पर से उतार कर तालाब में फेंक आवे तो भूत भाग जाता है।

## शाकिनी डाकिनी का यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८० | ६४ | ६१ | १७ |
| ३६ | १३ | ६६ | ५३ |
| ६७ | ६ | १२ | ११ |
| ६४ | २९ | ५६ | ६५ |

उपरोक्त यन्त्र को खैर की लकड़ी के कायले से चमड़े पर लिखें तो शाकिनियाँ, डाकिनियाँ लिखने वाले के पास नहीं आती हैं।

और अगर इस यन्त्र को नींबू के रस से कोरे कागज पर लिखकर श्मशान के स्थान में पीपल के पेड़ के नीचे गाढ़ आवे तो तमाम डाकनियाँ उस प्रयोग करने वाले के पास नहीं आती हैं।

## अशान्त आत्मा, भूत-प्रेत भय नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को भोजपत्र पर गोरोचन से गंगाजल में घोलकर स्याही बनाकर लिखना चाहिए और यन्त्र में भरपूर धूप-दीप देकर

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८६ | ९६ | २ | ८ |
| ७ | ३ | ९५ | ९२ |
| ९६ | ९१ | ९ | १ |
| ४ | ४ | ९ | ९४ |

धागे में बाँधकर गले में बाँधे तो भूत-प्रेत का भय दूर हो जाता है।

## डाकिनी भय निवारण यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७० | ७७ | २ | ७ |
| ६ | ७३ | ७६ | ७५ |
| ७६ | ७४ | ८ | १ |
| ९० | ४५ | ३७ | ७६ |

इस यन्त्र को खैर की लकड़ी को जलाकर कोयला बनाकर उस कोयले को गंगाजल में घिसकर स्याही तैयार करके चमड़े पर

लिखकर डाकिनी ग्रसित रोगी के गले में बाँधें तो डाकिनी भय से मुक्त होकर ठीक हो जाता है।

## अशान्त आत्मा या भूत-प्रेत निवारण यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८० | ८७ | २ | ७ |
| ६ | ७ | ८४ | ८७ |
| ८३ | ८ | ८० | १ |
| ४ | ५ | ६० | ६३ |

इस यंत्र को भोजपत्र के ऊपर असगन्ध से लिखकर धूप-दीप नैवेद्य से पूजकर यंत्र को घर में रखें तो भूत-प्रेत का भय न रहे।

## आत्मा को बुलाने का यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ७ | २ | ३ | ८ |
| ६ | ३ | ७६ | ७५ |
| ७७ | ७३ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ७४ | ७७ |

इस यन्त्र को किसी भी मुहूर्त में भोजपत्र के ऊपर चौराहे की धूल को गंगाजल में घोलकर लिखें तो गत आत्मा तुरन्त लौट आवे।

## भूत-प्रेत नाशक यन्त्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८५ | ५६ | १ | १२ |
| ६ | ६० | ६२ | १३ |
| ४६ | ४ | १८ | ९१ |
| ४६ | ६९ | २८ | ५८ |

उपरोक्त यन्त्र को असगन्ध से भोजपत्र पर लिखे तो भूत-प्रेत का भया जाता रहे।

## कटे सर के बोलने का मन्त्र

*ओं नमो वादी प्रायराड़ करने को बैठा बड़ पीपल की छाया और बादीन की जे बाँधूं तेरा कण्ठ अरु काया बाँधूं अरु योगी और मसान की बानी अब तो रह बिन सुजान वाले नरसिंह ऊपर हनुमन्त गाजे तो कटा सिर बोले।*

इस मन्त्र को रोहिणी नक्षत्र में एक लाख बार जप कर सिद्ध कर लें और जब कटे सर से बोलने का प्रयास करना हो तो १००१

बार मन्त्र पढ़ लें और कटे सर पर उड़द मारे तो वह बोलने लगेगा। साधक को निम्न यन्त्र को भी अपने सामने रख लेना चाहिए। यन्त्र को गोरोचन की स्याही और अनार की कलम से भोजपत्र पर (अखण्डित) लिखना चाहिए। यन्त्र निम्न है—

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९० | ४७ | ९ | ७ |
| ६ | ६ | ७१ | ७३ |
| १७ | ८६ | ९ | ९ |
| ४ | ७ | ९१ | ५७ |

## भूत भगाने का यन्त्र

| | |
|---|---|
| ११ | ११ |
| ३ | ३ |

इस यन्त्र को पहले भोजपत्र पर तैयार कर लें फिर यन्त्र में राई भरकर जला दें। आत्मा, जिन्न, मसानें, भूत, प्रेत, चुड़ैल आदि सब दूर भाग जायेंगे।

## भूत प्रेत बाधा दूर करने हेतु

*ओं नमो आदेश गुरु का। लड़गढ़ी सो मुहम्मद पठाण चढ्या श्वेत घोड़ा श्वेत पलाण भूत बाँधि प्रेत बाँधि कालिया मसाण बाँधि चौंसठ जोगिनी बाँधि अड़सठ स्याना बाँधि, बाँधि बाँधि रे चोटवी तुरकीन का पूत बेगि बाँधि जो तू न बाँधे तो अपनी माता की शैया पर पाँव धरे। मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।*

इस मन्त्र को लोबान, दीप, नैवेद्यादि सहित पूर्वाभिमुख कम्बल के आसन पर १०८ मंत्र जप ३१ दिन तक करे।

सवा रुपये की मिठाई मंगाकर, दीपक के सामने रखकर लोबान की धूप जलावें। रोगी के ऐड़ी से चोटी तक डोरा नाप कर उसमें २१ गांठ की जंजीर बनावे तथा प्रत्येक गांठ पर २१ बार मंत्र का उच्चारण करना चाहिए। तत्पश्चात गले में धारण करना देवे। इसके धारण करने से भूत प्रेतादि दोष दूर होते हैं। डोरा शुक्रवार के दिन ही बनावे।

## भूत-प्रेत बाधा निवारण मन्त्र

स्थाने ऋषिकेश तब प्रकीर्त्या। जगत्प्रहुष्यत्नु रज्यते च।
रक्षाँसि भीतानि दिशो द्रवन्ति। सर्वे नमस्यन्ति च सिद्ध संघा॥

इस मन्त्र की सिद्धि ११ हजार जप से होती है। हमेशा स्नानादि करके धूप, दीप नैवेद्यादि सहित ११ माला उत्तराभिमुख कुशासन पर बैठकर जप करे। गंगाजल ले और उपरोक्त मंत्र का २१ बार हाथ की अंगुलियों से छपाके मारे इस जल को रोगी को पिला देना चाहिए बाकी जल को उसके शरीर पर छिड़क देना चाहिए। बाधा

दूर होने तक नित्य तीन बार इस प्रकार प्रयोग करना चाहिए।

## ब्रह्मपिशाच एवं पिशाचिनी हेतु

सर्वप्रथम एक षट्कोण हवन कुण्ड का निर्माण करें। उसके मध्य किसी सुहागिन मृत महिला की दाहिनी जाँघ की हड्डी लाकर उस हवन कुण्ड के मध्य दबा दें। बरगद की समिधा का प्रयोग करें और १००८ आहुति मदिरा की देवें। पूर्णहुति 'सां क्रौं क्रीं' अमुक निधन स्वाहा ही देवें। १००८ आहुति का मंत्र इस प्रकार है—**सां क्रों क्रीं।**

## काला कलवा हटाने की साधना

काला कलवा हटाने के लिए हाथ में सरसों के २१ दाने लेकन निम्न मंत्र पढ़ते हुए चारों ओर फेंको काला कलवा तुरन्त चला जायेगा मन्त्र इस प्रकार है—

"चकती सोंह वरुण कर, बगड़ा पर असवार ये देव रक्षा करे, कलवा भागे राज द्वार।"

## आत्मा आह्वान रत्न

अशान्त आत्माओं को बुलाने के अनेक उपाय भारतवर्ष में प्रचलित हैं। मेरे परम मित्र जो वर्तमान समय में बम्बई में रहते हैं नाम है श्री अशोक माहेश्वरी उन्होंने अपनी तिब्बत यात्रा के मध्य वह रत्न दिखाया और उसका प्रयोग भी किया यह विशेष आत्मा आह्वान रत्न कम उपलब्ध होते हैं। इसकी धातु का नाम गन मैटल है यह चमकीले क़ाले रंग का होता है, इसे शनैश्चरी अमावस्या के

दिन स्वर्ण अंगूठी में जड़वाकर अभिमंत्रित किया जाता है। इस अंगूठी को धारण करने के बाद आह्वान करने पर आस-पास विचरती आत्माएँ स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होने लगती हैं। इसके अतिरिक्त यह अंगूठी रक्षा कवच का भी कार्य करती है। यह मान्यता भी है कि इस अंगूठी को धारण करते ही कोई न कोई अदृश्य शक्ति धारण कर्त्ता के आस-पास बराबर बनी रहती है, जो उसे आने वाले खतरों से बचाती रहती है। इस आत्मा आह्वान रत्न को अभिमन्त्रित करने का मंत्र निम्न है—

**ओं मणि पदमे हुं ह्रीं।**

—o : o—

**द्वितीय खण्ड**

# ८. अलौकिक साधनायें

**"सप्त सप्त सहस्त्राणि संख्यातानि मनीषिभिः।"**

इसके अनुसार लगभग १४००० तंत्र-मंत्र ग्रन्थों के उपलब्ध होने की सूचना प्राप्त होती है, खेद का विषय है आज इसमें से अधिकांश साहित्य लुप्तप्राय: है। तन्त्र के शैव आगम के २८, कौल ग्रन्थ ८, मिश्र के ५, वैष्णव आगम के १०८, शाक्त आगम के ६५ और समय आगम के ५ ही माने जाते हैं, इनमें अनेक गोपनीय चमत्कारी साधनाओं आराधनाओं का विवरण मिलता है।

तंत्र शब्द का पारिभाषिक अर्थ है तत्व। तंत्र में तन और त्र दो अक्षर हैं। तनु का अर्थ विस्तार और तन (स्वयं) है और त्र का अर्थ है त्राण अर्थात रक्षा करना। जो विद्या मन्त्र के विपुल अर्थ का विस्तार है, जो त्राण करता है वही "तन्त्र" है।

अधिकांश व्यक्ति मारण, उच्चाटन, वशीकरण मोहन, स्तंभन, विद्वेषण को ही तंत्र समझ बैठे हैं। तन्त्र विद्या की यह कुछ शाखाएँ मात्र हैं। आज का बुद्धिजीवी वर्ग तन्त्र साधकों को घृणा अथवा उपेक्षा की दृष्टि से देखता है, इसका मुख्य कारण तन्त्र विद्या के ज्ञाता स्वयं हैं। कल का तांत्रिक केवल तांत्रिक (शोधकर्ता) था;

पर आज का तांत्रिक डाक्टर, वैद्य, वकील, ज्योतिषी, हस्तरेखा विद् सब कुछ है। इसके अतिरिक्त आज तंत्र विद्या में जादूगरी, चमत्कार भी उत्पन्न हो गए हैं। तांत्रिक पंच मकारों के बिना सिद्धि को असम्भव मानता है, 'केन्द्र बिन्दु' को ऊर्जा का स्त्रोत बतलाता है। भला शराब, सुन्दरी और भोग का सेवन करने वाला क्या साधना करेगा?

यह सत्य है तन्त्र शरीर का विज्ञान है, वनस्पति की विद्या है, पर तांत्रिक इस विषय के भीतर पहुँच नहीं पाता है। तन्त्र एक पूजा है, उपासना है। यह वह शास्त्र है जो साधक को सच्चे आनन्द की ओर ले जाता है।

तन्त्र विज्ञान में मानसिक शक्तियों पर नियन्त्रण करने पर विशेष ध्यान दिया गया है। जब तक हमारा पूर्ण नियन्त्रण मन पर नहीं हो जाता तब तक साधना करना स्वप्न के समान है। चित्तवृत्तियों पर कठोर नियन्त्रण की क्रिया तन्त्र बतलाता है। साधक जब एक बार चित्त पर नियन्त्रण कर लेता है तब भूत-प्रेत अशान्त आत्मा, डाकनी आदि को सिद्ध करना उसके लिए बहुत सरल हो जाता है। भूत-प्रतों के सम्बन्ध में एक कथा है—

भगवान शंकर के यहाँ जब कार्तिकेय का जन्म हुआ तो उनकी रक्षा हेतु शंकर ने भूतों की उत्पत्ति की, इसलिए ही भूतनाथ नाम पड़ा। ये भूत-प्रेत कार्तिकेय की देह-रक्षा करते थे। भगवान शंकर ने अपनी शक्ति के द्वारा 'विशाला' नाम के भयंकर राक्षस की उत्पत्ति की जो कार्तिकेय का परम मित्र बन गया तथा दोनों साथ-साथ रहने लगे।

एक दिन कार्तिकेय से समस्त भूतों ने इकट्ठा होकर कहा

कि महाराज, शिवजी ने हमारी उत्पत्ति तो कर दी लेकिन जीविका का कोई साधन नहीं बतलाया है। इस बात को सुन कर कार्तिकेय हँसे और बोले तुम्हारी जीविका का एक उपाय है उसे ध्यान से सुनो। तुम उन साधकों को जाकर कष्ट दो जो गुरुओं का आदर नहीं करते, माता पिता की सेवा नहीं करते, उन्हीं लोगों को जाकर परेशान करो। तब से भूत-प्रेत उन लोगों को कभी परेशान नहीं करते जिनकी भगवान में निष्ठा है तथा गुरुओं का मान-सम्मान करते हैं, माता-पिता की सेवा करते हैं तथा जिनमें आत्मबल है।

एक बार राजा इन्द्र की सभा में मेनका नाचते-नाचते बेहोश होकर गिर पड़ी। तब तो चारों तरफ हलचल मच गई, तमाम देवता घबरा गए। चारों तरफ खोज की गई कि इसका कारण क्या है? तब गुरुदेव वृहस्पति से शंका का समाधान कराना चाहा।

गुरु ने कहा—'हे इन्द्र! लंका के रावण ने इस अप्सरा को बेहाश करके तुम्हें नीचा दिखलाया है।'

राजा इन्द्र ने पूछा—पर गुरुदेव! रावण तो सभा में है नहीं और न इस अप्सरा के कोई अस्त्र ही लगा है फिर ऐसा क्यों हुआ?

गुरु हँस पड़े और बोले—'इन्द्र! अस्त्र-बल तो तन्त्र-मन्त्र बल के आगे बेकार है, अस्त्रों का प्रयोग को केवल सामने से ही किया जा सकता है, परन्तु मन्त्रों का प्रयोग सैकड़ों मील दूर बैठने पर भी किया जा सकता है।'

इन्द्र ने कहा—गुरुवर आप मुझे इस विद्या के विषय में बतलायें। तब गुरु वृहस्पतिजी ने सारी बातों का वर्णन करते हुए कहा—एक समय दशकंधर ने शिवजी की घोर तपस्या की। तब

शिवजी उस पर प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे अपने पास बिठा लिया। रावण ने शंकर से कुछ नहीं माँगा इससे शंकरजी और अधिक प्रसन्न हो गये। एक दिन रावण शंकर जी के पैर दबा रहा था तब महादेव जी ने तंत्र विद्या के विषय में उसे बताया कि मनुष्य की साधना से पैदा की हुई शक्ति अस्त्रों की शक्ति से कई गुना तेज होती है। उसकी सिद्धि से कोई भी शक्ति साधक का कुछ नहीं बिगाड़ पाती। मन्त्रों का प्रयोग सैकड़ों मील की दूरी से किया जा सकता है, जिस प्रकार आमने-सामने से।

महादेव जी के मुँह से यह बात सुनकर रावण प्रसन्न हो गया और अपने मन में तंत्र विद्या सीखने का संकल्प कर लिया रावण के मन की बात महादेव जी को समझते देर न लगी, उन्होंने भारी विद्या उसे सिखलाई और कहा कि इस विद्या के द्वारा वह संसार के असाध्य कामों को पूरा करके यश प्राप्त करे। रावण ने उसी गोपनीय विद्या के प्रयोग से आज अप्सरा मेनका को मूर्छित किया है।

तब इन्द्र ने पुनः निवेदन किया गुरुदेव! आप तो मेरे मन की बात तुरन्त समझ लेते हैं, मुझे भी इस विद्या को सीखने की बहुत अच्छा है। मैं चाहता हूं कि आप इस विद्या को सिखलाने की कृपा करें।

गुरु वृहस्पति मुस्कराये और बोले—'इन्द्र!' तू अभी तक स्पर्धा में ही रहा, खैर अगर तेरी यही अच्छा है तो मैं तुझे अवश्य ही विद्या सिखला दूंगा, तू इस बात को अच्छी तरह समझ ले कि इस विद्या को सीखने के लिए मनुष्य को काम, क्रोध, मद, लोभ, राग, द्वेष, ईर्ष्या से दूर रहना पड़ता है। वह मनुष्य इसमें पूर्णतया

सफल हो सकता है जो सादगी से जीवन व्यतीत करता हुआ आडम्बर से दूर इस विद्या को सीखना चाहे, उसे मैं सहर्ष सिखला दूंगा।

इन्द्र एक बार फिर सोच में पड़ गया मगर फिर बोला— 'गुरुदेव' मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जैसा अपने कहा है वैसा ही करूँगा। तमाम बातों से दूर रहकर भी मैं इस विद्या को सीखूंगा, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जो कुछ भी आप कहेंगे, मैं वैसा ही करूँगा।

गुरू वृहस्पति ने इन्द्र का इतना पक्का निश्चय देखकर कहा कि जिस प्रकार मैंने शंकर से यह तन्त्र विद्या सीखी है वही तुझसे वर्णन करता हूँ। इसके बाद गुरु ने इन्द्र को तंत्र का गोपनीय रहस्य बतलाया। अब मैं पाठकों के समक्ष ऐसी ही अत्यन्त गोपनीय अप्सरा साधना प्रस्तुत कर रहा हूँ।

## अप्सरा कामेश्वरी साधना

यक्षिणियों की भाँति अप्सरायें भी सुन्दर और आकर्षक होती हैं, जो साधक उनको सिद्ध कर लेता है, उनके जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती, अप्सराएँ अपने सौन्दर्य और यौवन से साधकों को आपूरित करती हैं।

अप्सरा साधना अत्यन्त सौम्य साधना है, और इस साधना को करने से साधक के जीवन से दुःख सदैव के लिए समाप्त हो जाते हैं।

यह बात उन दिनों की है जब मैं तन्त्र साधना के उद्देश्य को लेकर हिमालय के सुदूर अंचल में भटक रहा था, उन्हीं दिनों एक

औघड़ से मेरा सम्पर्क हुआ उनकी आयु लगभग १०० से भी ज्यादा थी। वह प्राय: जंगल में रहते थे।

मैंने वहीं पर अप्सरा कामेश्वरी साधना की इच्छा प्रकट की तब उन्होंने मुझे वह साधना बतलाई।

इसमें कोई विशेष साधना सामग्री की आवश्यकता नहीं होती, केवल निम्न वस्तुओं की आवश्यकता होती है, जल पात्र, पुष्प, घी का दीपक और पच गन्ध (केशर, कपूर, चन्दन, कुमकुम और रक्त चन्दन) इसके अतिरिक्त स्फटिक की माला भी पास होनी चाहिए।

यह साधना केवल दस दिन की है, इसमें मध्य रात्रि को २१ माला मन्त्र जप करने का विधान है।

सीधे होकर आसन पर बैठकर दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली को अनामिका के पीछे जोड़े और तर्जनी को कनिष्ठा के मूल में लगाने से अप्सरा की प्रिय मुद्रा बन जाती है, मन्त्र जप से पूर्व लगभग पाँच बार इस मुद्रा को सम्पन्न करना चाहिए।

**सान्निध्य मुद्रा**—दाहिने हाथ की मुट्ठी बांधकर उसे खोलने और सिकोड़ने से सान्निध्य मुद्रा बनती है, इस मुद्रा को भी सम्पंन्न करें।

**आह्वान**—ओं ह्रीं आगच्छ शशि देव्य अप्सरा कामेश्वरी स्वाहा।

जब भी अप्सरा को बुलाना हो तो इस मन्त्र की एक माला मन्त्र जप करने से उपस्थित होती है।

**प्रस्थान मन्त्र**—ओं ह्रीं गच्छ शशि देव्य अप्सरा कामेश्वरी

शीघ्रं शीघ्रं पुनरागमनाय स्वाहा।

जब अप्सरा को वापिस भेजना हो तो, तब इस मन्त्र का उच्चारण करें।

*ओं आगच्छागच्छ शशि देव्य अप्सरा कामेश्वरी स्वाहा।*

उपरोक्त मन्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण है, साधक को ३१ माला मन्त्र जप सम्पन्न करना चाहिए।

जब दस दिन पूरे हो जायें और अप्सरा दसवीं रात्रि को प्रगट हो तब उसे पुष्पाहार समर्पित कर उसे वश में करना चाहिए, इसके बाद जब भी किसी रात्रि को उसे बुलाना हो तो आह्वान मंत्र की एक माला मन्त्र जप होना चाहिए, और जब उसे भेजना हो तो एक या दो बार विसर्जन मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए। अप्सरा का दुरुपयोग कभी न करें।

साधक को साधना प्रारम्भ करने से पहले अप्सरा साधना की मुद्राएँ अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए।

साधक को निम्न मुद्राओं का प्रयोग करना चाहिए। क्रम भी इसी प्रकार रहेगा।

**क्रोध मुद्रा**—दाहिनी मुट्ठी बाँध कर दानों हाथों की कनिष्ठा उंगलियों को परस्पर लपेट कर बाँये हाथ की तर्जनी ऊँगली को फैलाने और सिकोड़ने से यह मुद्रा बनती है, इसे क्रोध मुद्रा कहते हैं।

**क्रोध मन्त्र**—ओं जूं हूं कट्ट कट्ट शशि देव्य अप्सरा कामेश्वरी ह्रीं यः यः हुं हुं फट्।

साधक सबसे पहले क्रोध मुद्रा बनाकर लगभग पांच मिनट

तक आँखें तरेर कर क्रोध मन्त्र का उच्चारण करें, उसके बाद साधना शुरू करें।

## रूप परिवर्तन साधना

यह प्रयोग एक लोप होती हुई चमत्कारिका विद्या है।

यह केवल २१ दिन का प्रयोग है अमावस्या से इस साधना को प्रारम्भ करना चाहिए, श्मशान में ठीक आधी रात को किसी मुर्दे के सीने पर बैठकर पश्चिम दिशा की ओर मुख कर रूद्राक्ष माला से निम्न मंत्र जप करना चाहिए। मन्त्र जप से पहले मुर्दे की भस्म लगा लेनी चाहिए। मंत्र जप के मध्य अनेक प्रकार के दृश्य दिखलाई दे सकते हैं पर इससे न घबराना चाहिए साधना करते समय अपने गुरु को भी ले जाना चाहिए। मन्त्र निम्न है—

ओं क्रां क्रां क्रां क्रीं क्रीं क्रीं देह परिवर्तनायै क्रों क्रों क्रों हुं हुं फट्।

इस प्रकार २१ दिन करने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है। स्त्री साधकों को यह साधना अवश्य करनी चाहिए।

## तारा सिद्धि

अमावस्या की रात्रि को श्मशान के भीतर नग्न होकर बैठ जायें और मुर्दे की भस्म को गंगा से गीला कर गारा की गंगाजल मिली मूर्ति बनावें उस पर कामियाँ सिन्दूर का तिलक करें, इसके पश्चात् दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर सर्प अस्थियों की माला से निम्न मन्त्र की ६१ माला जप करें।

जब ६१ माला पूर्ण हो जायें तब तारा को दक्षिण दिशा की ओर किसी पेड़ की छाया के नीचे रखकर प्रस्थान करने की प्रार्थना करें।

यह ३१ दिन की साधना है और इसमें नित्य तारा की नवीन मूर्ति बनाकर उसकी पूजा कर चैतन्यता हेतु पूजन व मंत्र जप सम्पन्न किया जाता है।

वास्तव में ही यह साधना स्त्री पुरुष साधकों के लिए श्रेष्ठ साधना है, जिसे उच्चकोटि के साधक ही सम्पन्न कर पाते हैं। मंत्र निम्न है—

ओं ह्लीं ह्लीं तारायै क्रीं क्रीं फट्।

## अतीन्द्रिय साधना

इस साधना के माध्यम से असम्भव कार्य को सम्भव करने की क्षमता प्राप्त होती है।

यह साधना नित्य सुबह चार बजे प्रारम्भ करनी चाहिए, यह केवल दो घण्टे का प्रयोग है जिस समय कोलाहल कम होता है, और शान्ति अधिक रहती है, तब लगभग एक या दो घण्टे मन्त्र जप करता रहे, इसमें माला की आवश्यकता नहीं है। मन्त्र निम्न है—

ओं ह्लीं मनस् मणिभद्र ह्लीं फट्।

अब मैं अपने सहृद पाठकों की सेवा में कुछ और अनूठी, गोपनीय साधनाएँ प्रस्तुत कर रहा हूं। पाठकों! कृपया इनका दुरुपयोग न करें। यह मेरा नम्र निवेदन है।

## कृत्या साधना

कृत्या उच्चकोटि का तान्त्रिक प्रयोग है, कहा जाता है। जब भगवान शिव ने दक्ष का यज्ञ विध्वंस करने के लिए अपने गणों को भेजा और वीरभद्र जैसे बलशाली गण भी दक्ष के मन्त्रों के आगे लाचार हो गये तब भगवान शिव ने कृत्या का निर्माण किया जो अत्यन्त डरावनी, भयानक और पूरे संसार को नष्ट करने में सक्षम थी, जमीन पर पैर रखते ही पृथ्वी भी नीचे धसकने लगी, दसों दिशाएँ उसकी हुंकार से डोलने लगीं। संसार में खलबली मच गई, वह शिव की आज्ञा पाकर दूसरे ही क्षण दक्ष की यज्ञ शाला में जा पहुँची और सारे यज्ञ को तहस-नहस कर दिया, दक्ष का सिर काट दिया, ऐसा लग रहा था कि मानो कृत्या के रूप में कोई प्रलय हो गया हो जिसके आगे न तो देवताओं की कोई शक्ति चल पा रही थी, और न दक्ष के तांत्रिक मन्त्रों का ही कोई प्रभाव हो रहा था। कृत्या के शरीर से बराबर आग की लपटें निकल रही थीं, जिससे सारा संसार जल रहा था, उसके क्रोध के आगे आकाश पृथ्वी और दसों दिशाएँ थरथर काँप रही थीं, ऐसा लग रहा था क इसको शान्त करना असम्भव है। तब देवी देवता भगवान शिव के आगे हाथ जोड़ कर क्षमा माँगने लगे तब जाकर शिव ने कृत्या को शान्त कर अपने पास बुला लिया। यह सत्य है कि गिने चुने तांत्रिकों को ही कृत्या प्रयोग के विषय में जानकारी है। आज मैं यह साधना आपको बतला रहा हूँ।

यह साधना २१ दिन की है, रात्रिकालीन साधना है। इसमें काली धोती पहिन कर दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर काले आसन

पर बैठकर सामने कड़वे तेल का दीपक जलाकर 'कृत्या' मन्त्र का जप करें। इस साधना में किसी भी प्रकार के यन्त्र की आवश्यकता नहीं होती है।

इस साधना में ब्रह्मचर्य का पालन करना अति आवश्यक है।

कृत्या साधना सिद्ध होने पर साधक अजेय, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला और मन में असीम बल धारण करने वाला हो जाता है। कृत्या का मन्त्र निम्न है—

ओं क्लीं क्लीं शत्रुणाँ मोहये उच्चाटये मारये।
वचन सिद्धि मम आज्ञा पालय पालय कृत्यां सिद्धि फट्॥

## श्मशान शमन साधना

अगर श्मशान जाग्रत करना आ जाये और आप उसे प्रयत्न कर जाग्रत भी कर दें पर अगर उसे शान्त करने की क्रिया ज्ञात नहीं हो तो मुसीबत पड़ सकती है। इसी उद्देश्य को लेकर श्मशान शमन साधना प्रस्तुत है।

यह मात्र तीन दिन की साधना है, त्रयोदशी की रात्रि को धधकते श्मशान में जाकर चिता की भस्म अपने शरीर पर लगा दें और नग्न होकर पश्चिम दिशा की ओर मुँह कर बैठ जायें और फिर भगवान शिव का नाम उच्चारित कर अपने चारों ओर चिमटे से घेरा बना लें। इसके बाद निम्न मन्त्र की ७ माला जपें मन्त्र जाप करने पर श्मशान शान्ति सिद्धि प्राप्त हो जाती है। इसके बाद भूत-प्रेत उपद्रव तथा उसका प्रभाव समाप्त कर सकते हैं। मन्त्र इस प्रकार है—

ओं भं भं भूतनाथाय शान्त रूपायै नमः
शान्तायै भूतनाथाय नमः

## हनुमत साधना

इसमें कोई दो राय नहीं कि हनुमान शक्ति के स्रोत और शीघ्र कार्य सिद्ध करने में सहायक हैं, यह केवल दो दिन की साधना है। इसमें साधक स्नान कर लाल धोती पहनकर लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुख कर बैठ जाय, और सामने बजरंग का चित्र स्थापित कर दें, इस पर लाल पुष्प चढ़ावें, और फिर लाल मूंगे की माला से १०८ माला मन्त्र एक ही रात्रि में पूर्ण करें।

मन्त्र समाप्त होने तक साधक अपने आसन से उठे नहीं, और मन्त्र जप से पूर्व हाथ में जल लेकर अपनी इच्छा प्रकंट करे कि मैं अमुक कार्य के लिए यह साधना सम्पन्न कर रहा हूँ।

साधक को मन्त्र जप से पूर्व हनुमान जी के चित्र के समक्ष मोदक का भोग लगा लेना चाहिए, और उसे दूसरे दिन प्रसाद के रूप में वितरण कर देना चाहिए।

मन्त्र इस प्रकार है—

ओं ह्रौं ह्स्फ्रौं स्फ्रौं ह्स्फ्रौं हुं।

## पूर्व जन्म कृत दोष

हमें यह ज्ञात ही नहीं होता कि हमारे पूर्व जन्म के दोष हैं भी या नहीं। दोष तीन कारणों से होते हैं मुख दोष—असत्य उच्चारण करने से। दृष्टि दोष—किसी भी स्त्री को अश्लील नजर से देखने से। चिन्तन दोष—अपने गुरु के प्रति मन में संशय उत्पन्न करने से।

इन दोषों के परिमार्जन के लिए साधना से पूर्व दोष निवृत्ति मन्त्र का जप कर लेना चाहिए, इस जीवन में किये गए दोष भी

समाप्त होंगे ही अपितु नित्य प्रति जो दोष व्याप्त हो जाते हैं, वे भी समाप्त हो सकेंगे।

मन्त्र इस प्रकार है—

ओं तत्सवितुर्वरेण्यम् सर्व दोष पापान् निवृत्तय धियो योनः प्रचोदयात्।

इसके लिए कोई विशेष जप संख्या निर्धारित नहीं है, यथा सम्भव अधिक से अधिक इस मन्त्र का जप करना चाहिए।

## यक्षिणी साधना

(वशीकरण यक्षिणी साधना)

जिस दिन साधना करनी हो उस दिन शुद्ध होकर नदी के तट पर बैठ २१ हजार जाप प्रतिदिन करें।

इस मंत्र में जाप के पश्चात गुग्गल और घी का हवन करें। देवी प्रसन्न होकर वश में हो जाएगी और इस हवन की भस्म जिसके ऊपर फेंकी जाएगी वही वश में हो जायेगा। इस बात का ध्यान रहे कि यह कार्य पुष्य नक्षत्र में ही शुरू किया जाना चाहिए चाहे किसी मास में भी आरम्भ किया जाए।

मंत्र निम्न है—

ओं द्वार देवतायै ह्रीं स्वाहा

## अदृश्यकरण यक्षिणी साधना

कृष्ण पक्ष की अमावस्या से लेकर पूरे एक माह तक निम्नलिखित मन्त्र का जाप करें।

"ओं कनकवती करजी के स्वाहा।"

इस मन्त्र का प्रतिदिन ५ सहस्त्र जाप करना चाहिए और आखिरी दि़न २००० मन्त्र का हवन करे। हवन के लिए लकड़ी नीम की होनी चाहिए। हवन की भस्म अपने लगाने के बाद साधना सिद्ध मानी जाती है।

## सुनारी साधना मंत्र

"ओं ह्रीं आगच्छ सुन्दरि स्वाहा।"

पवित्र घर में जाकर गुग्गल की धूप प्रातः मध्यान्ह और सायंकाल में सुन्दरी का पूजन करके उपरोक्त मन्त्र का ५००० जाप करना चाहिए इस प्रकार एक माह के भीतर ही सुन्दरी आती है जब वह आये तो जल में चन्दन मिलाकर उसको अर्घ्य देना चाहिए। तो माता, बहिन तथा पत्नी का काम करती है।

तर्पण के लिए हाथ में कुशा और जल लेकर पूर्वोक्त मन्त्र को पढ़ें और मन्त्र के अन्त में जहाँ स्वाहा है वहां 'तृश्यम' कहे और पानी छोड़ता जाये, हवन की विधि भी वही है।

## धन दायिनी यक्षिणी साधना

"ओं ह्रीं ह्रीं हें ह्रहें ह: स्वाहा।"

इस मन्त्र का एक लाख पच्चीस सहस्त्र जाप करें घी और खीर का हवन करें और इतने मंत्र से तर्पण करें तो धनदायिनी वश में होवे। यह जाप सोमवार से शुरू करना चाहिए।

## श्मशान यक्षिणी साधना

"ओं क्लीं भगवतेभ्यो नमः।"

श्मशान में जाकर नग्न होकर निम्नलिखित मन्त्र का जाप करें।

"ओं हं ह्रों फूं श्मशाने वासिनी श्मशाने स्वाहा।"

इस मन्त्र के इक्यावन हजार जप करने से श्मशान यक्षिणी प्रसन्न होकर गुप्ताँग ढाँकने के वस्त्र प्रदान करती है उस वस्त्र को धारण कर पूर्वोक्त मन्त्र का पचास हजार जप करें किन्तु 3 मटकी कच्ची शराब अपने पास रखें और भोजन भी उनके साथ करें। प्रयोग के आखिरी दिन यक्षिणी दर्शन देगी। आप जो फल माँगेंगे वही आपको प्रदान करेगी।

## भोग यक्षिणी साधना

"ओं जगत्रय मातृके पद्मानिधे स्वाहा।"

इस मन्त्र का पच्चीस हजार जाप करने के पश्चात् अढ़ाई हजार मन्त्र से विविध पाँच मेवों का हवन करें तो यक्षिणी सिद्ध होवे।

## महा यक्षिणी साधना

जिस दिन से यक्षिणी की साधना करनी हो उस दिन से कम भोजन करें और आधी रात को निद्रा रहित होकर बेल के पेड़ पर चढ़ जाए फिर उस पर बैठकर निम्नलिखित मन्त्र का जाप करें।

ओं ह्रीं क्लीं रो श्री महायक्षिणी सर्वश्वयै प्रदास्यै नमः।

एक मास तक जितेन्द्रिय होकर और बेल के पेड़ पर बैठकर हर रात को इस मन्त्र का तीन हजार जाप तथा माँस और मदिरा की बलि प्रदान करें और मन में अथवा स्वप्न में आती है। जब यक्षिणी

आये तो उसको देखकर डरना नहीं चाहिए जप में मन लगाये रखना चाहिए। जिस दिन यक्षिणी बलि लेकर वरदान देने को प्रस्तुत हो उस दिन जो माँगना हो उससे माँग लेना चाहिए, क्योंकि निःसन्देह सब कुछ दे सकती है।

## विद्या यक्षिणी साधना

"ओं ह्रीं वेदमातृभ्यः स्वाहा।"

इस मन्त्र को १२ लाख जप करने के पश्चात् एक साथ बीस हजार मन्त्रों से पाँच विविध मेवों के साथ हवन करे तो विद्या यक्षिणी वश में हो जाये यह प्रयोग शुक्ल पक्ष की पंचमी से आरम्भ करना चाहिए।

## सिद्धि यक्षिणी साधना

"ओं नाना चरण पद्मावती स्वाहा।"

इस मंत्र का दस लाख बार जाप करना चाहिए। दस लाख जाप करने के बाद घी गुग्गल और गुल सेवती को मिलाकर हवन करना चाहिए प्रयोग के समय एक मिट्टी के बर्तन में माँस व चावल भरकर सामने रख ले तो यक्षिणी वश में होकर सब इच्छा को पूर्ण करें। यह प्रयोग रेवती नक्षत्र में शुरू करना चाहिये। इस मन्त्र का जाप हर रोज पाँच हजार करना चाहिये।

## वशीकरण यक्षिणी साधना

"ओं नमः सर्व नारी सर्व पुरुष वशीकरण श्रीं ह्रीं स्वाहा।"

यह ७२ हजार मंत्र मंगलवार से आरम्भ करके एक हजार

प्रतिदिन करता हुआ ७२ दिनों में समाप्त करें और सात हजार दो सौ मन्त्र से नारियल का हवन करें तो यक्षिणी सिद्ध होवे। उस हवन की भस्म को अपने मस्तक पर लगाकर जिसके सामने जाये वही वश में हो जाये।

## सर्व फलदायिनी साधना

"ओं श्रीं काक कलल वर्तने सर्व कार्य सर्वस्याम् देहि-देहि सर्व कार्य कुरु परिश्जर्य सर्व सिद्धि पादकाया रक्ष द्वादशनाश दलने सर्व सिद्धि प्रदाय स्वाहा।"

जितने संसार में फल फूल हैं यह यक्षिणी सिद्ध होने पर लाकर दे देती है। इसको बस में इस प्रकार किया जाता है कि मन्त्र का एक लाख जाप करने के पश्चात दस हजार मन्त्रों से चनों का हवन करें तो यक्षिणी वश में हो जाये। यह प्रयोग विष कुम्भ नक्षत्र से आरम्भ करना चाहिये, जाप एक हजार प्रतिदिन करना चाहिए।

## मनोहारी साधना

"ओं आगच्छ मनोहारी स्वाहा।"

नदी के संगम पर एक मास एक नित्य चन्दन का मण्डप बनाकर उस पर मनोहारी का पूजन करके उसको अगर की धूप देनी चाहिए इस प्रकार पूजा करने के पश्चात उपरोक्त मंत्र का चार हजार जाप चन्दन का अर्घ्य देकर पुष्प और फल से एकाग्रचित करके साधना करनी चाहिए। वही आधी रात के समय आती है इस प्रकार से उसको प्रसन्न करके उससे आज्ञा ले मुद्रा दिया करती है।

## मोहिनी यक्षिणी साधना

"ओं नमो पिंगले चपले नाना पशु मोहनी स्वाहा।"

सायंकाल के समय इस मन्त्र का दो हजार जप एक वर्ष तीन मास तक करें। जप के समय सुपारी नारियल व केशर आदि वस्तुएँ अपने सामने रखें और गुग्गल की धूप देकर प्रार्थना करें तो मोहनी प्रसन्न होंगी। यह प्रयोग मघा नक्षत्र में आरंभ करना चाहिये।

## महेन्द्री यक्षिणी साधना

"ओं महेन्द्र दुल स्वाहा।"

इस मंत्र का एक लाख जाप नर चण्डी वृक्ष के नीचे बैठकर करना चाहिए। जाप समाप्त होने पर सहस्त्र मन्त्रों के विविध प्रकार के पांच मेवों से हवन करना चाहिये। इससे महेन्द्री प्रसन्न होती है।

## शखिनी यक्षिणी साधना

"ओं शंख धारणी शंख चारणी ह्रां ह्रां क्लां क्लीं श्री स्वाहा।"

वट वृक्ष के नीचे बैठकर सूर्य डूबने से पहले तीन हजार जाप समाप्त करे और उसी स्थान पर तेल लेकर एक हजार मंत्र से हवन करें तो यक्षिणी सिद्ध होवे।

## चन्द्रिका यक्षिणी साधना

"ओं ह्रीं चन्द्रिका स्वाहा।"

वट वृक्ष के नीचे बैठकर सूर्य डूबने से पूर्व इस मन्त्र का तीन

हजार जाप समाप्त करें और उसी स्थान पर तेल लेकर एक हजार मन्त्र से हवन करें इससे चन्द्रिका यक्षिणी प्रसन्न होती है।

## मदन मेखला यक्षिणी साधना

"ओं मदन मेखले नमः स्वाहा।"

महुवे के वृक्ष के नीचे बैठकर बीस दिन तक पूरा सवा लाख इस मन्त्र का जाप करें तो मेखला एक सुरमा देती है। जो मनुष्य इस अंजन को आँखों में लगाये वह सबको देखे और स्वयं किसी को दिखलाई न दे।

## विकला यक्षिणी साधना

"ओं विकलेरों ह्रीं क्लीं श्री स्वाहा।"

तीन मास तक निरन्तर इस मन्त्र का सवा लाख जाप करें और आखिरी २० हजार मंत्र से कनेर के फूलों में घी मिलाकर हवन करने से विकला यक्षिणी वश में हो जाती है।

## लक्ष्मी यक्षिणी साधना

"श्री लक्ष्मीयं कमला धारिणी स्वाहा।"

इस मन्त्र का सवा लाख जाप कर और उल्लू के पैरों को धूप लगाकर इसके पश्चात् दस हजार मन्त्रों से कनेर के पत्तों व घी को मिला करके हवन करने से लक्ष्मी प्रसन्न होकर रसायन देती है।

## मानिनी यक्षिणी साधना

"ओं रो मानि ह्रीं रों हनेहि सुन्दरी दस दस स्वाहा।"

प्रात:काल को चौराहे पर बैठकर इस मंत्र का सवा लाख जाप करें और गुलाब के फूल और घी मिलाकर ११ हजार मंत्र से हवन करे तो मानिनी यक्षिणी सिद्ध होकर दिखलाई देती है।

## सुलोचना यक्षिणी साधना

"ओं क्लै सुलोचनो द्वि देवी स्वाहा।"

प्रात:काल किसी नदी के तट पर जाकर ४ माह के भीतर सवा तीन लाख जाप सम्पूर्ण करे और इसके बाद एक लाख जाप से घी का हवन करें तो सुलोचना यक्षिणी प्रसन्न होती है। यह प्रयोग बैसाख मास में स्वाति नक्षत्र में आरम्भ करना चाहिये।

## विलासिनी यक्षिणी साधना

"ओं ह्रीं दुरजाक्षिणी विलासिनी आगच्छागच्छ ही प्रिये मेव कले स्वाहा।"

नदी तट पर बैठकर इस मंत्र का इक्यावन हजार जाप किया जाये और इसके बाद घी और गुग्गल को मिलाकर इस मंत्र की दस हजार आहुति से हवन करें तो यक्षिणी प्रसन्न हो जाये।

## नटी यक्षिणी मन्त्र

"ओं ह्रीं नटी सदा कटी स्वरूपवति स्वाहा।"

कार्तिक मास की पूर्णिमा को शीशम के पेड़ के नीचे बैठकर इस विधि को करें। एक सुन्दर मण्डप चन्दन का तैयार करें एक मूर्ति कटी यक्षिणी की बनाकर उसमें बिठलाये और धूप आदि से

पूजा करें और इस मूर्ति के सामने दो मास प्रतिदिन एक हजार जाप इस उपरोक्त मन्त्र का करें और आधी रात को इसी प्रकार पूजा करें इसके बाद भोजन करे और आधी रात को उठकर जाप करें तो नटी यक्षिणी खुश होकर सामने आती है।

## कामेश्वरि साधना

"ओं आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा।"

भोजपत्र के ऊपर गोरोचन से कामेश्वरि का चित्र बनाकर एक माह तक पूजा करे और घी का दीपक जलाया करें उपरोक्त मन्त्र का एकांत शैया पर बैठकर नित्यप्रति जाप करे पुनः मौन होकर उसी पूजा करे। इस तरह अनुष्ठान समाप्त होने पर आधी रात के समय कामेश्वरि आती है और साधना करने वाले की होकर रह जाती है। साधना के मध्य स्त्री का त्याग करे।

## रेखा यक्षिणी साधना

सांयकाल के समय महादेव की मूर्ति सामने रखकर छः मास तक नित्य प्रति करना चाहिये। रेखा प्रसन्न होकर दर्शन देती है।

## लक्षणा यक्षिणी साधना

"ओं ह्रीं प्रदोया स्वाहा।"

रात्रि के समय इस मन्त्र का जाप तीन माह तक करें तो यक्षिणी सिद्ध हो जाये। यह प्रयोग किसी भी तिथि को आरम्भ किया जा सकता है।

## अनुरागिणी साधना

"ओं आगच्छ अनुरागिणी स्वाहा।"

भोजपत्र पर केशर से यक्षिणी का चित्र बनावें चन्दन चावल पुष्प और धूप से एक माह तक तीनों काल में उपरोक्त मन्त्र से तीन सहस्त्र जाप करना चाहिए। फिर अमावस्या के दिन विधिपूर्वक पूजा करके रात को घी का दीपक जलावें और सम्पूर्ण रात जप करता रहे। इस साधना के करने से प्रात:काल अनुरागणी यक्षिणी आती है।

## महा यक्षिणी साधना

"ओं हीं महायक्षिणी भामिनी प्रिये स्वाहा।"

इस प्रयोग को रविवार से शुरू करना चाहिए और अनुष्ठान करने से तीन दिन पूर्व उपवास रखना चाहिए और चन्द्र ग्रहण अथवा सूर्य ग्रहण के आरम्भ से लेकर अन्त तक अर्थात जब तक ग्रहण लगा रहे इस मंत्र का जाप करने से महायक्षिणी वश में हो जाती है।

## चित्रिणी यक्षिणी साधनस

"ओं ह्रीं क्लीं चित्रिणी स्वाहा।"

आम के पेड़ के नीचे बैठकर तीन माह तक एक सहस्त्र प्रतिदिन इस मन्त्र का जाप करना चाहिये और आखिरी दिन किसी भी प्रकार के फूल से दस हजार मंत्र से, हवन करने से, चित्रिणी यक्षिणी वश में हो जाती है।

## पद्मिनी साधना

"ओं आगच्छ ह्रीं पद्मिनी स्वाहा।"

भोजपत्र पर केसर से यक्षिणी का चित्र बना करके चन्दन चावल पुष्प और धूप से एक मास तक तीनों काल में उपरोक्त मन्त्र से तीन हजार जाप करना चाहिये पुनः अमावस्या के दिन विधिपूर्वक पूजा करके रात में घी का दीपक जलावें और सम्पूर्ण रात जाप करता रहे। इस साधना से प्रातःकाल यक्षिणी आती है।

## कालिका देवी साधना

"ओं कालिका देव्यै स्वाहा।"

गौशाला के भीतर जाकर इस मंत्र का सवा दो लाख जाप करें और बीस हजार मन्त्र से घी का हवन करें तो यह यक्षिणी सिद्ध हो और जो माँगे वही देवे। यह प्रयोग केवल मंगलवार से शुरू करना चाहिए।

## कर्ण पिशाचिनी साधना

"ओं कर्ण पिशाचिनी पिंगले लोचन स्वाहा।"

इस मन्त्र का सवा लाख जाप करने के बाद दस हजार मन्त्र से हवन करना चाहिए और केवल एक समय ही गुड़ तेल मिलाकर खाने के कारण पिशाचिनी सिद्ध होकर तीनों कालों की बातों को जानने की शक्ति प्रदान करती है। यह प्रयोग गुरुवार से आरम्भ करना चाहिये।

## नक्षत्र यक्षिणी साधना

"ओं विचित्र चित्र रूपेण सिद्धि कुरु करु स्वाहा।"

प्रात:काल उठकर स्नान करके साफ कपड़े पहिन कर वट वृक्ष के नीचे बैठकर उपरोक्त मन्त्र का सवा लाख जाप करके मधु घी और दूध को मिलाकर बोनि हवन कुण्ड में दस हजार मन्त्रों से हवन करें तो यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक की इच्छा पूर्ण करती है।

## विभ्रमा यक्षिणी साधना

"ओं ह्रीं विभ्रम रूपे कुरु-कुरु एहि-एहि भगवती स्वाहा।"

रात के समय श्मशान में जाकर चार माह में सवा दो लाख जाप समाप्त करें। इसके बाद बीस हजार मंत्र से घी का हवन करें विभ्रता यक्षिणी प्रसन्न होती है। प्रयोग केवल शनिवार को ही शुरू करना चाहिए।

## विशाला यक्षिणी साधना

"ओं ऐं विशाले तां तां क्लीं स्वाहा।"

पवित्रता पूर्वक इमली के वृक्ष के नीचे बैठकर उपरोक्त मंत्र का पाठ करते हुए सौंफ का फूल और घृत मिलाकर हवन करने सें विशाला यक्षिणी प्रसन्न होती है।

## भण्डाराटल यक्षिणी साधना

"ओं नमो रक्तेष्ते चांडालिनी क्षोभिणी दह-दह-द्रवअन्नम।"

मंत्र का २२३ बार जाप करना चाहिए। यह प्रयोग १५ दिन तक शुक्ल पक्ष में और १५ ही दिन तक कृष्ण पक्ष में करना चाहिए, इस तरह दो साल तक निरन्तर करना चाहिए।

## रति प्रिया यक्षिणी साधना

किसी भी वस्त्र के ऊपर हाथ में कमल लिए हुए रति प्रिया का चित्र अंकित करके जायफल से उस मूर्ति की पूजा करनी चाहिये।

## सर्वभक्षण यक्षिणी साधना

"ओं नमो चामुण्डे प्रचण्डे इन्द्राय नमो विप्र चाण्डालिनी यक्षिणी कर्षय द्रुमानव हूं फट् स्वाहा।"

आरम्भ में उपवास रखना, क्रोध को त्यागना, भूमि पर सोना, मीठा भोजन करना फिर किसी एकान्त स्थान में बैठकर इस मन्त्र का इक्कीस हजार जाप करना चाहिए। इस प्रयोग के दो मास तक करने से कुछ दिनों में भयानक सपने दिखलाई देते हैं। यदि भयावने सपने दिखाई देवें तो फिर २१ दिन यही प्रयोग और करना चाहिए। २१ दिन और प्रयोग करने से यक्षिणी प्रसन्न होती है।

## कनकवती साधना

"ओं ह्रीं कनकवती मैथुन प्रिये स्वाहा।"

सात दिन तक वट वृक्ष के नीचे हर रोज उपरोक्त मन्त्र का एक हजार जाप करें। आठवें रोज कनकवती आती है और साधना करने वाले की भार्या होकर रहती है।

## शोभना यक्षिणी साधना

"ओं अश्क पल्लावार कर तले शोभनीय श्री क्षः स्वाहा।"

लाल रंग का वस्त्र तथा माला पहनकर १४ रोज उपरोक्त मंत्र

का जाप करने से भोग देने वाली शोभना यक्षिणी सिद्ध होकर साधक को समस्त सुख दे देती है।

## मदना साधना

"ओं रो मदने मदव्रिदाव के अनंग स्वयं देहि देहि क्रीं क्रीं स्वाहा।"

पवित्रता पूर्वक राजमार्ग पर बैठकर इस मन्त्र का सवाल लाख जाप करें और इसके बाद इसे एक लाख के दसवें अंश तथा हजार मंत्र से खीर और मालती पुष्प तथा घी का हवन करे तो मदना यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को सब कुछ प्रदान करती है।

## भूत नाशक अंजन

काली राई और काली मिर्च इन दोनों को पीसकर बारीक बनावे यह अंजन भूत बाधा नष्ट करता है।

## दुष्ट आत्मा से मुक्ति

जपेदश्वत्थमालभ्य मन्दवारे शतं द्विजः।
भूतरोगाऽभिचारेभ्यो मुच्यते महतो भयत्॥

शनिवार के दिन जो द्विज पीपल के नीचे सौ बार उपरोक्त मंत्र का जाप करें तो अशान्त आत्माओं की बाधाओं से शीघ्र मुक्त हो जाता है।

## माँ कामाख्या औषधि मन्त्र

"क्षौं ओं ओं वषट् ठः ठः।"

यही हवन मन्त्र भी है और यही कामाख्या देवी का जप-

मन्त्र भी है।

## दुष्ट आत्मा बाधा निवारण

ओं धौं ह्रीं ह्रीं 'अमुकस्य' प्रेतबाधा शान्तय शान्तय कुरु-कुरु स्वाहा क्षौं ओं। कामख्यां। तव दासः नमस्तुभ्यं-नमस्तुभ्यं। पढ़कर १०८ बार शमी की लकड़ी से हवन करे तो यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

आत्मा बाधा से पीड़ित मनुष्य उपरोक्त मंत्राभिमंत्रित भस्म खा ले या सिर पर चढ़ा ले तो बाधा से मुक्ति पाकर सुखी हो जाता है।

## भैरव द्वारा मारण मन्त्र

*ओं नमो हाथ फावड़ी काँधे कामरी भैरू वीर मसाणी खड़ा हल की धनुही वज्र की बाए वेग न मारे तो माता कालका की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।*

दीपावली की मध्य रात्रि को चौका लगायें व शुद्ध दीपक घी का जलायें और भैरव के नाम से गूगल देवें। उड़द को एक सौ इक्कीस बार मन्त्र पढ़कर दीपक पर मारें। फिर काले कुत्ते के खून में सानकर राख मिलाकर रखें चिता की भस्म मिलाकर जरूरत पड़ने पर मन्त्र पढ़के उर्द के दानों को सात बार शत्रु को मारें तो मारण होता है।

## शुद्ध मारण मंत्र

*ओं नमः काली कंकाली महाकाली के पुत्र कंकाली भैरों आदेश रहे अजीर मेरा पठामा काल करें भोज रक्षा करे आन बाँधू*

*बान बाँधू दशोसुर बांधो ना नारी बहत्तर कोठा बांधू फल में भेजूं फूल में जाय कोठ जो पड़े थर-थर काँपे हल हल हले मेरा सवा घड़ी सवा पहर को बावला न करे तो माता काली की शय्या पर पाँव धरे बाबा चूके तो कूचा सूरे बाबा छोड़ कुवाँ चाकरे तो धोबी के नार चमार कूड़े पर मेरा भेजा बावला न करे तो महादेव की जटा अूटि भूमि में गिरे माता पार्वती के चीर पे चोट करे बिना हुकुम नहीं मरना हो काली के पुत्र कंकाल भैरू फुरो मन्त्र ईश्वरोवाचा।*

देसी पान सुपारी, दो लौंग, लोहबान, धूप, कपूर और एक ठीकरी में सिंदूर द्वारा सात त्रिशूल बनाकर शत्रु का नाम लिख श्मशान में सब चीजों का हवन कर नित्य 31 बार मन्त्र पढ़के सात दिन तक करे तो अल्प दिनों में दुश्मन का सपरिवार नाश हो।

## अत्यन्त गोपनीय अपराजिता साधना

यूँ तो हर साधना का अपना महत्व है, अपना आनन्द है। पर अगर एक ही साधना के द्वारा अनेक लाभ पाने की इच्छा प्रकट करता है, तब उसे अपराजिता साधना सम्पन्न करनी ही पड़ेगी! इस साधना को सम्पन्न करने के उपरान्त साधक निम्न कार्यों को सम्पन्न करने में सक्षम हो जाता है।

१. इसके द्वारा वशीकरण का प्रयोग कर मनवांछित स्त्री को अपने पास बुलाने के योग्य हो जाता है।

२. इसके द्वारा किसी भी कन्या को जो माँ बाप की इज्जत की परवाह न करते हुए कुमार्गी हो जाती है, उसे ठीक राह पर लाया जा सकता है।

३. घर से भाग गये, अथवा भ्रमित कर दिये गये बालक को सद्मार्ग पर वापस लाया जा सकता है।

४. दो प्रबल शत्रुओं में मित्रता स्थापित कराई जा सकती है।

५. माँ बाप की आज्ञा ना मानने वाले बालक को आज्ञाकारी बनाया जा सकता है।

६. किसी भी दूर बैठे व्यक्ति की वास्तविक स्थिति पता चल सकती है, जैसे कि वह जीवित है अथवा मृत।

इसके अतिरिक्त और भी अनेक लाभ हैं, जो इस साधना के द्वारा प्राप्त हो सकते हैं।

अब मैं 'अपराजिता साधना' न केवल मूल रूप में वरन् उसके प्राचीन रूप में ही प्रस्तुत कर रहा हूँ! साधक को चाहिए कि वह इसे किसी योग्य व्यक्ति के मार्ग निर्देशन में सावधानी पूर्वक सम्पन्न करें।

अपराजिता साधना मध्य रात्रि कालीन साधना है।

यह साधना केवल कृष्णपक्ष की चतुर्दशी से प्रारम्भ करनी चाहिये। शुभ समय का ध्यान रखना भी आवश्यक है। साधक ऊनी पीला आसन, पीली धोती पहन कर उसे ही ओढ़कर सामने सरसों के तेल का दीपक जलाकर साधना प्रारम्भ करे! यह स्मरण रखे बनियान व भोग पीली वस्तु का होना चाहिए। इस साधना को २१ दिन तक नियम पूर्वक करे! साधना काल में भूमि पर शयन करे। साधना में सिद्धि प्राप्त करने के उपराँत उपरोक्त सभी कार्य आप सम्पन्न कर सकते हैं। स्मरण रखें ग्यारह माला नियमित जपनी हैं और हवन भी करना है।

अपराजिता साधना का मन्त्र इस प्रकार है—

श्री गणेशाय नमः यइमाम पराजिताँ अप्रतिहताँ परम-वैष्णवी पठति, सिद्धां महा-विद्यां जपति पठनि श्रृणोति स्मरति-ध्यायति कीर्तियति वा न तस्याग्नि-भयं वायु-वज्रोपलाशनी-वर्षावर्ष-भयं न समुद्र-भयं वा नव-ग्रह भयं न सर्व-चोर-भ्यं श्वापद-भयं वा न भवेत। क्वर्चिद्रात्र्यन्धकार-स्त्री-राज-कुल-विषोपविप-गर गरद-वशीकरण-विद्वेषणोच्चाटनमारण मोहन-स्तंभन-वध-बंधन भयं वा न भवेत्। एतैर्मत्रैहृद्-गतैश्च सिद्धिंः संसिद्धि-पूजितै ओं आं ह्रीं क्रों नमस्ते स्तु अभये अनधे अजिते अमिते अमृते अपने अपराजिते श्रीपठित-सिद्धे स्मरित-सिद्धे एको नाशीति-तम उसमें ध्रुवे अरून्धतीं गायत्री सावित्री जात-वादिनी ब्रह्म-वादिनी काली कपाली पांचाली काली-महाकाली नित्य भद्रे महेन्द्रे महाराजिनी सार्व-भौम-चक्रवर्तिनी सर्व-दुष्ट शमनी सर्व-दुःख विनाशिनी सर्व दारिद्रय प्रशमनी अपमृत्यु-महामृत्यु-निवारिणी इन्दिरा कमला लक्ष्मी पदमे पदमावती नारायणी सत्योपायप्रकाशिनी स्थलगतं जल-गतं अन्तरिक्ष-गतं वा माँ रक्ष रक्ष सर्वोंपद्रवेभ्यः स्वाहा।

# ९. गोपनीय तिलोत्तमा अप्सरा साधना

एक बार एक करोड़पति अपने भावी दामाद से बात कर रहा था। अन्त में उसने पूछा, ''बेटा सच-सच कहना अगर मेरी बेटी किसी भिखारी की लड़की होती तो भी तुम उससे इतना ही प्रेम करते, विवाह करते? 'हाँ' उस नवयुवक ने करोड़पति को प्रसन्न करने के उद्‌देश्य से जोश से कहा। करोड़पति क्रोध में बोला, बस अब मैं अपनी बेटी का विवाह तुमसे नहीं करूँगा, मुझे अपने परिवार में खुशामद करने वालों की संख्या नहीं बढ़ानी है।'' इसी प्रकार तन्त्र का भविष्य उसके साधक होते हैं। साधक अगर खुशामदी अथवा आँख मूँदकर चलने वाले हैं, तब निश्चय ही तन्त्र का भविष्य अन्धकार में है। तन्त्र के साधकों को जागरूक, स्पष्टवादी और कर्तव्य का निर्वाह करने वाला होना चाहिए। कर्तव्य के बिना अधिकार नहीं होते हैं। साधक इस बात को सदैव स्मरण रखे, जिस प्रकार कसौटी पर घिसते ही सोना और पीतल का भेद खुल जाता है, उसी प्रकार तन्त्र सम्प्रदाय में आने के बाद सच्चे सदस्य और कर्मठ साधक का भेद खुल जाता है। मेरा यह कथन सदैव स्मरण रखें—तांत्रिकों, अवधूतों, औघड़ों की अपनी एक अलग ही संस्था होती है, जो सामाजिक नियमों से परे होती है।

स्त्रियों की अपने पति के साथ एकान्त में जो कुछ विशेष बातचीत होती है, वह वे किसी के सामने कहते लजाती हैं। उन बातों को न तो किसी को बताती हैं और न बतलाना ही चाहती हैं,

वे बातें यदि किसी तरह किसी के सामने प्रकट हो जाएं तो स्त्रियाँ क्रोधित हो जाती हैं, परंतु वे अपनी सहेलियों को स्वयं ही वे सब बातें बतलाया करती हैं, इतना ही नहीं, वे उन्हें बतलाने के लिए आतुर रहती हैं और बतला कर आनन्दित होती हैं। इसी प्रकार तांत्रिकों की भी सिद्धि के समय जो बात होती है और उससे उसे हृदय में जिस प्रकार का आनन्द अनुभव होता है, उसके विषय में हर किसी को बतलाना नहीं चाहता, क्योंकि उससे उसे सुख नहीं मिलता, किन्तु यथार्थ तांत्रिक को वह दिल खोलकर सब कुछ बतलाता है, वरन् बतलाने के लिए आतुर रहता है और बतला कर आनन्दित होता है।

आप भी सच्चे कर्मठ तांत्रिक बनें। अपने गुरु भाइयों से वह सब कुछ कहें जो आपको साधना में अनुभव हुआ है। गुरु के महत्व को उजागर करती एक कथा और—

बरसात का मौसम था। भगवान महावीर अपने शिष्य गौशालक के साथ कहीं जा रहे थे। चलते-चलते गौशालक को हंसी सूझी। उसने रास्ते के एक पौधे की ओर इशारा करते हुए पूछा। यह बतलाइये कि भविष्य में यह पौधा जीवित भी रहेगा या नहीं।

प्रभु महावीर अपने शिष्य की शंका का समाधान करने के लिए रुक गये और आँखें बन्द करके ध्यान की स्थिति में चले गये। फिर बोले—यह पौधा अवश्य ही जीवित रहेगा। इस पर फूल ही नहीं, फल भी लगेंगे। इतना सुनना था कि गौशालक ने वह पौधा उखाड़ कर वहीं फेंक दिया और हंसते हुए बोला—''गुरुवर देखते हैं, अब कैसे आते हैं फल इस पर?''

महावीर बिना कुछ बोले आगे बढ़ चले। बात समाप्त हो

गई, इस बीच फिर बरसात हुई। यात्रा पूरी करके दोनों लौट रहे थे। चलते-चलते वे उस स्थान पर पहुंचे जहाँ गौशालक ने पौधा उखाड़ कर फेंक दिया था। गौशालक यह देखकर दंग रह गया कि वह पौधा हरा-भरा होकर लहलहा रहा है। अब इस पौधे को देखकर महावीर मुस्कराए। महावीर जानते थे कि पौधे की कोई जड़ धरती में दबी रह गई थी जो बरसात हो जाने से फिर उग आई थी।

परेशान गौशालक ने फिर पूछा—अब एक बार फिर बतलाइये कि निकट भविष्य में इस पौधे की क्या स्थिति होगी? महावीर शिष्य के मन की बात समझ गए और बोले—मैं अब भी वही बात दोहराता हूँ जो पहले कह चुका हूँ। तुम चाहो तो इसे उखाड़ कर फेंक सकते हो। तुम इसे उखाड़ कर न भी फेंकना चाहो तो भी कोई बात नहीं। यह तुम्हारी इच्छा है। पर मैंने एक बार जो कह दिया वही सत्य है। क्योंकि मैंने जो कुछ कहा है, वह ध्यान करके इस पौधे की भीतरी जीवनी शक्ति को परख कर कहा है।

यह बात सुनने के बाद गौशालक उस पौधे को एक बार फिर उखाड़ फेंकने का साहस नहीं जुटा पाया। अब भगवान महावीर के होठों पर मुस्कान थी। इस मुस्कान ने गौशालक की जिज्ञासा को एकदम समाप्त कर दिया था।

इस कथा का एकमात्र उद्देश्य यही है कि शिष्य को गुरु पर विश्वास रखना चाहिये यही विश्वास साधक को साधना के मार्ग से सिद्धि की ओर ले जाता है। समय का अपना महत्व है, पर गुरु गृह, आश्रम, तीर्थ स्थल, मन्दिर, सत्संग में आने के उपरान्त समय का कोई मूल्य नहीं रहता है। समय अवश्य मूल्यवान है, लेकिन

समय से कहीं अधिक मूल्यवान यह स्थान है, मेरा यह सूत्र सदैव स्मरण रखें साधना के स्थान पर आने में जल्दी करें और जाने में विलम्ब करें। इस सिद्धांत के कारण आप अवश्य ही सफल होंगे।

अब मैं आपके समक्ष अप्सरा साधना प्रस्तुत कर रहा हूँ यक्षिणियों की भाँति अप्सरायें भी सुन्दर आकर्षक, होती हैं, जो साधक उनको सिद्ध कर लेता है, उनके जीवन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रहती है, अप्सराएँ अपने सौन्दर्य और यौवन से साधकों को निरन्तर आपूरित करती हैं।

अप्सरा साधना अत्यन्त सौम्य साधना है, और इस साधना को करने से व्यक्ति के जीवन से दुःख सदैव के लिए समाप्त हो जाते हैं। भोग में तृप्ति प्राप्त होती है। यह बात उन दिनों की है जब मैं तन्त्र साधना के उद्देश्य को लेकर हिमालय के सुदूर अंचल में भटक रहा था, उन्हीं दिनों एक औघड़ से मेरा सम्पर्क हुआ, आयु लगभग १०० से भी ज्यादा थी। वह जंगल में ही रहते थे।

मैंने वहीं पर तिलोत्तमा अप्सरा की साधना की इच्छा प्रकट की तब उन्होंने मुझे यह साधना बतलाई थी।

इसमें कोई विशेष सामग्री की आवश्यकता नहीं होती, केवल निम्न वस्तुओं की आवश्यकता होती है, जल पात्र, पुष्प, घी का दीपक, और पंच गन्ध (केसर, कपूर, चन्दन, कुमकुम और रक्त चन्दन) इसके अतिरिक्त हकीम की माला भी पास होनी चाहिए।

यह साधना केवल दस दिन की है, इसमें मध्य रात्रि को २१ माला मन्त्र जप करने का विधान है।

साधक को साधना प्रारम्भ करने से पहले अप्सारा साधना मुद्राएं सम्पन्न करनी चाहिएँ साधक को निम्न मुद्राओं का प्रयोग

करना चाहिए। क्रम भी इसी प्रकार रहेगा।

दाहिनी मुट्ठी बाँध कर दोनों हाथों की कनिष्ठा उंगलियों को परस्पर लपेट कर बायें हाथ की तर्जनी उंगली को फैलाने और सिकोड़ने से यह मुद्रा बनती है, इसे क्रोध मुद्रा कहते हैं। क्रोध मन्त्र निम्न है—

ओं जूँ हूं कट्ट कट्ट शशि देव्य अप्सरा तिलोत्तमा ह्रीं यः यः हुं हुं फट्।

साधक सबसे पहले क्रोध मुद्रा बनाकर लगभग पाँच मिनट तक आँखें तरेर कर क्रोध मन्त्र का उच्चारण करें उसके बाद साधना शुरू करें।

साधक को सीधे होकर आसन पर बैठकर दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली को अनामिका के पीछे जोड़े और तर्जनी को कनिष्ठा के मूल में लगाने से अप्सरा की प्रिय मुद्रा बन जाती है, मन्त्र जप से पूर्व लगभग पाँच बार इस मुद्रा को बनाना चाहिए।

सान्निध्य मुद्रा दाहिने हाथ की मुट्ठी बाँधकर उसे खोलने और सिकोड़ने से बनती है, इस मुद्रा को भी करें।

ओं ह्रीं आगच्छ शशि देव्य अप्सरा तिलोत्तमे स्वाहा।

अब जब भी अप्सरा तिलोत्तमा को बुलाना हो तो इस मन्त्र की एक माला मन्त्र जप करने से वह उपस्थित होती है।

प्रस्थान मन्त्र—

ओं ह्रीं गच्छ शशि देव्य अप्सरा तिलोत्तमा शीघ्र पुनरागमनाय स्वाहा।

इसके बाद जब भी अप्सरा तिलोत्तमा को वापस भेजना हो तो, तब इस मन्त्र का उच्चारण करें। काम कामेश्वरी अप्सरा तिलोत्तमा

का मन्त्र इस प्रकार है—

ओं आगच्छागच्छ शशि देव्य अप्सरा तिलोत्तमे स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र अत्यन्त महत्वूर्ण है, साधक को ४१ माला मन्त्र जप सम्पन्न करना चाहिए।

जब दस दिन पूरे हो जायें और तिलोत्तमा अप्सरा दसवीं रात्रि को पूरी सजधज के साथ प्रगट हो तब उसे पुष्पाहार समर्पित कर उसे वश में करना चाहिए, इसके बाद जब भी किसी रात्रि को उसे बुलाना हो तो आह्वान मन्त्र की एक माला मन्त्र जप करना चाहिए, और जब उसे भेजना हो तो एक या दो बार विसर्जन मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए। अप्सरा का दुरुपयोग कभी न करें। समस्त अप्सरा का भोग में प्रयोग हानिकारक सिद्ध हो सकता है। साधक इस तथ्य को सदैव स्मरण रखें।

## पाठक ध्यान दें—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र की पुस्तकों में बताये गये प्रयोग किसी योग्य गुरु के निर्देशन में ही करें। किसी भी प्रयोग के सफल या असफल होने के लिए लेखक, प्रकाशक या मुद्रक उत्तरदायी नहीं हैं।

*—लेखक, प्रकाशक, मुद्रक*

## १०. तन्त्र मन्त्र और साधना

आज का चतुर एवं प्रगति पसन्द मानव चाँद की वीरान धरती पर अपने मजबूत कदम रख चुका है। हिमालय की ऊँची-ऊँची बर्फ से ढकी धवल चोटियों को अनेक बार रोंद चुका है तथा समुद्र की असीमित-अपरिमित गहराइयों में उतर चुका है, तो क्यों नहीं तन्त्र के गर्भ में छुपे अनछुए, अनकहे, अनबुझे रहस्यों को भी खोलने की कोशिश करता?

पुरातन काल से ही अनेक त्यागी एवं कर्मठ तांत्रिक इस कार्य में जुटे रहे हैं। उन्होंने अनेक सिद्धियों, मन्त्रों एवं तन्त्रों पर बारीकी से सारगर्भित खोज कर उन्हें जनता के समक्ष रखा, जिनका प्रयोग आज के तांत्रिक, मांत्रिक भी करते आ रहे हैं। हम यह नहीं कहते कि इस दिशा में आज के योग्य तांत्रिकों ने कुछ नहीं किया, पर इस दिशा में अभी और गहरी निष्ठा एवं तर्क पूर्ण खोज की आवश्यकता है। भूत-प्रेत, जिन्न एवं ब्रह्मराक्षस से सम्बन्धित अनेकों प्रश्न आज भी लोगों के लिये जिज्ञासा बने हुए हैं।

भूत कैसे बनता है? हमारा यह प्रश्न हो सकता है मेरे विचार में स्थूल शरीर, और सूक्ष्म शरीर दोनों का मिलन विधि ने एक नियत समय निश्चित कर रखा है, पर कभी-कभी उस 'समय' में व्यवधान पड़ जाता है और अकाल मृत्यु हो जाती है चाहे हत्या, आत्मघात के रूप में हो या किसी जान लेवा दुर्घटना के रूप में। जब 'समय' से पूर्व अकाल मृत्यु के कारण इन दोनों का विछोह

होता है, तो सूक्ष्म शरीर अकेला भटकता रह जाता है, इसे ही भूत-प्रेत माना जाता है।

एक बार मैं प्रेत-सिद्धि हेतु किसी निर्जन स्थान में बैठा था। अभी कुछ हजार ही जाप कर पाया था कि मैंने ऐसा अनुभव किया मानो कोई व्यक्ति मेरे पास आकर खड़ा हो गया हो। कठोर साधना के कारण उसके साथ मेरी संचार व्यवस्था जुड़ गई और मैं उससे प्रश्न कर बैठा था, 'आप कौन हैं, और यहाँ क्यों आये हो?'

मैं एक अशान्त आत्मा हूँ, और बहुत समय से यहीं भटक रहा हूँ, इस समय आपके मन्त्र मुझे यहाँ बाँध कर ले आये हैं।

'तुम्हारी मृत्यु कैसे हुई थी।'

'मैंने आत्महत्या की थी।'

'मेरे लिए कार्य करोगे?'

'करूँगा।'

'अगर मैं तुम्हें छोड़ दूं, तब?'

'तो मैं अपनी खोज में आगे बढ़ जाऊँगा।'

'ठीक है, जाओ मैंने तुम्हें स्वतन्त्र करने का संकल्प लिया।'

इसके साथ ही मेरा उसके साथ संचार सम्बन्ध भंग हो गया।

ऐसी ही पता नहीं कितनी अशान्त आत्मायें इस दुनिया में आज भी यूँ ही भटक रही हैं।

भूत कैसे बनते हैं? इसके साथ ही जुड़ा एक प्रश्न यह भी है कि उनके रहने का स्थान कौन सा है और यह कहाँ बसते हैं।

ऐसा मना गया है कि इनका निवास पीपल, श्मशान या वीरान खण्डहर होते हैं। लेकिन ऐसा भी कहा गया है कि ज़िस घर कमरे

या स्थान में एक वर्ष तक कोई व्यक्ति न गया हो, वहाँ पर भी ये अपना निवास बना लेते हैं। भूत-प्रेत केवल हानि ही करते हैं, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता।

यह आत्माओं के आचरण पर निर्भर करता है। अगर उसका मानव जीवन निर्मल रहा है तो वह केवल भलाई करेगी कभी अहित की बात सोचेगी भी नहीं। और यदि उसका मानव जीवन अपराध पूर्ण रहा है तो वह केवल अहित और अनर्थ ही करती फिरेगी। वश में की जाने वाली आत्माओं से तांत्रिक भी उसी के अनुकूल काम ले सकते हैं, जैसा उसका स्वभाव होगा। यदि वश में की गई आत्माओं से कोई तांत्रिक उसके स्वभाव के विपरीत कार्य लेगा तो ऐसी स्थिति में उनके कोप का शिकार भी हो सकता है।

रामचन्द्र मौर्य जो एक छोटे कार्य से जिविकोपार्जन करते हैं, उन्होंने मेरे पास आकर मुझे अपनी एक आप बीती घटना सुनाई थी जो इस प्रकार है—

एक बार लम्बी रेल यात्रा के दौरान थकान के कारण उन्हें नींद आ गई। शायद वह देर तक सोते रहते, पर किसी का ठण्डा सा स्पर्श पाकर उठ बैठे। देखा तो उनके आसपास कोई नहीं था। हाँ डिब्बे के द्वार से निकलता कोई अपरिचित व्यक्ति उन्हें जरूर नजर आया, जिसके हाथ में उन्हीं की अटैची थी। उन्होंने शोर मचाया तो वह अटैची छोड़कर भाग गया। मेरे विचार से उस डिब्बे में जरूर कोई विचरती निर्मल आत्मा थी जिसने ठण्डा स्पर्श देकर उन्हें सावधान कर दिया, अन्यथा चोर अटैची चुराकर भागने में सफल हो जाता।

कई आत्मायें इतनी बलशाली होती हैं, और उनके ऊपर उनके पूर्व जन्म के संस्कार इतने हावी होते हैं कि वे जब चाहें, जहाँ चाहें निर्बाध रूप से आ जा सकती हैं। वे कोई भी रूप धारण कर सकती हैं।

मेरा स्वयं का संयोग भी एक बार ऐसी ही विचित्र आत्मा से मिलने पर हुआ था।

अपनी श्रद्धा के कारण मैं हर पूर्णमासी पर स्नान करने के लिए नियमित रूप से गढ़ मुक्तेश्वर जाता रहता हूँ।

बैसाख का महीना था। मैं पूर्णिमा से एक दिन पूर्व ही अन्धेरा घिरते-घिरते गढ़ मुक्तेश्वर स्थित बृजघाट पर पहुंच गया था। निश्चित किया था कि धर्मशाला की बजाय इस बार मैं किसी खुले और निर्जन स्थान पर रात गुजारूंगा। सोचा आधी रात तक तो कुछ साधना करूँगा, उसके बाद आराम, अतः एक उपयुक्त स्थान तलाश कर मैंने गमछा रेतीली धरती पर बिछा दिया।

लगभग आठ बजे का समय था। हाथ पाँव ढीले कर अपनी थकान हल्की करने के उद्देश्य से मैं थोड़ी देर के लिए लेट गया, तो मुझे गहरी नींद आ गई। जबकि सोने का मेरा बिल्कुल भी विचार नहीं था।

लगभग चार घण्टे बाद रात १२ बजे तेज भूख के अहसास से मेरी नींद खुल गई। दूर ब्रजघाट की दुकानें भी अन्धेरे में डूब चुकी थीं। भोजन की ओर से निराशा मिलने पर मैं अपनी नींद को कोसने लगा न मैं लेटता न ही नींद आती और न ही मुझे भूखा रहना पड़ता। वाह री गंगा मइया! तेरी छाती पर पड़े हुए भी इस बच्चे को भूखा रहना पड़ गया।

'बच्चा, गहरी नींद का आनन्द भी तो तुमने ही लिया, इसमें गंगा मइया का क्या दोष?'

इस आवाज से मैंने चौंककर देखा मेरे समीप खड़ा एक साधु मुझसे कह रहा था 'थोड़ा सा आगे बढ़कर तो देखो शायद तुम्हें भोजन मिल जाए?'

मैं उठ खड़ा हुआ। चारों ओर चाँदनी रात फैली हुई थी। मैंने कपड़े झाड़े और इस असमंजस के साथ कि किधर जाऊँ, कौन सी दुकान खुली होगी मैं आगे बढ़ा। अभी कुछ ही पग चला था कि अचरज के साथ मुझे रुक जाना पड़ा। मेरी राह में ही पर्याप्त फल आदि रखे हुए थे, मानो उन्हें कोई परोस गया हो।

खाओ! यह केवल तुम्हारे लिए ही हैं, तुम भूखे हो न। उसी साधु ने मुझे आदेश सा दिया।

मैंने पेट भर कर खाया, फिर भी फल समाप्त न हुए। मैं उठकर लम्बी डकार लेते हुए साधु की ओर आभार प्रदर्शित करने के लिए घूमा, परन्तु वहाँ साधु न था। कुछ क्षण पश्चात इधर देखा तो शेष फल भी गायब थे।

मेरी यह धारणा बलवती हो गई कि उस साधु के रूप में जरूर वह कोई पुण्य आत्मा ही थी जो मेरी भूख शान्त करने आई थी।

मेरे एक पुराने परम शिष्य हैं श्री अशोक माहेश्वरी, जिन्होंने अनजाने में किसी पवित्र आत्मा के निवास स्थान पर लघु शंका कर दी थी आत्मा ने क्रोधित होकर उन्हें बहुत कष्ट दिए। मैंने उनका काफी समय तक उपचार किया और मैंने ही अनुष्ठान आदि किए तब कहीं जाकर वह क्रोधित आत्मा शान्त हुई थी।

'सिद्धि' बड़ा ही मोहक एवं चुम्बकीय शब्द है। हर ऐसा व्यक्ति जो तन्त्र-मन्त्र में तनिक भी रुचि रखता है, वह सिद्धि अवश्य करना चाहता है या यूँ कह लीजिए कि सिद्धि उसकी प्रथम एवं अन्तिम इच्छा होती है।

जो लोग सिद्धि करना चाहते हैं या इस दिशा में प्रयत्नशील हैं, मेरे विचार में उन्हें कुछ प्राथमिक बातें सदैव ध्यान में रखनी चाहियें।

सर्वप्रथम ध्यान रखने की बात यह है कि साधक केवल उसी मन्त्र को सिद्ध करने की चेष्टा करें, जो उसे योग्य गुरू से प्राप्त हो।

'सिद्धि' के लिये व्यक्ति को आध्यात्मिक एवं सात्विक होना परम आवश्यक है।

'सिद्धि' प्राप्त करने की राह में तीन वस्तुयें बहुत महत्व पूर्ण योगदान करती हैं। ये तीनों ही एक दूसरे की पूरक हैं मन्त्र, इष्ट और योग्य गुरू। इन तीनों में ही सबसे प्रमुख होता है 'गुरू'।

अस्तु पहले योग्य गुरू की खोज ही प्रमुख है।

मेरा सम्पर्क एक ऐसे सज्जन से तब हुआ जब वह केवल किताबें पढ़कर ही सिद्धि के क्षेत्र में कूद गए थे।

मैं कई सिद्धियों की कठिन साधना करने के पश्चात तन्त्र के आदि गुरू शिव की आराधना हेतु नीलकंठ गया था। नीलकण्ठ का दर्शन कर मैं वापिस आ रहा था, तो मैंने उनको गंगा के तट पर साधना करते देखा। क्या आप सिद्धि के उद्देश्य से साधना कर रहे हैं? मैंने उनसे पूछा।

'हाँ, पर उपलब्धि अभी तक शून्य ही है।'

पर जब मैंने उन्हें तन्त्र मार्ग में योग्य गुरू की आवश्यकता से व्याख्या एवं दृष्टांत सहित अवगत कराया तो उन्होंने अपनी साधना वहीं समाप्त कर दी।

अन्त में सबसे महत्वपूर्ण बात है कि यह कैसे पता चले कि हमें मन्त्र सिद्धि प्राप्त हो गई है?

सिद्धि प्राप्त करने के पश्चात साधक अपने को काफी हल्का अनुभव करता है, उसकी आँखों में तेज और वाणी में ओज आ जाता है। आँखों के आगे का वातावरण प्रकाशवान हो उठता है। वाँछित इष्ट से संचार व्यवस्था जुड़ जाती है। कही हुई बातें सत्य होने लगती हैं। साधक हर चीज प्रत्यक्ष देखता है।

यहाँ मैं अपना स्वयं का अनुभव बतला रहा हूँ। मैं यक्षिणी की साधना करने के लिये देहरादून से पहाड़ों में चला गया।

वहाँ लगभग डेढ़ माह की कठिन और अनवरत साधना के पश्चात अनुरागिनी देवी प्रसन्न हुई और पूछा, मैं किस रूप में तुम्हारे पास आऊँ?

मेरे लिए यह प्रश्न बिल्कुल नया एवं अजनबी था। मैं कुछ जवाब न दे पाया, कई बार यह प्रश्न दोहराने के पश्चात अनुरागिनी यक्षिणी लोप हो गई, यह स्पष्ट संकेत मेरी साधना भंग होने का था।

मैंने अपने प्रेरणा स्रोत पिता श्री से जब यह प्रश्न पूछा तो वह मुस्करा पड़े। मुझे समझाते हुए बोले, रूप से अनुरागिनी जी का तात्पर्य था, माँ के रूप में, पत्नी के रूप में या बहन के रूप में?

सिद्धि भंग हो चुकी थी दुबारा करने की शक्ति अब शेष नहीं थी अस्तु वापिस चला आया।

इच्छुक जन सिद्धि अवश्य करें पर योग्य गुरू के सानिध्य के अभाव में इस जोखिम को न उठायें यह मेरा सुझाव है। आप साधना अवश्य सम्पन्न करें क्योंकि मन तुरियावस्था में आने के पश्चात तांत्रिक अष्ट महासिद्धियों, नवनिधियों का स्वामी बन जाता है। इन सिद्धियों के साथ कुछ क्षुद्र या निम्न कोटि की सिद्धियों का भी लाभ स्वयं हो जाता है। जब तक साधना के द्वारा तांत्रिक सत्-चित्-आनन्द का अनुभव नहीं कर पाता, तब तक अपनी साधना को वह बनाये रखे इस उद्देश्य से साधना के पथ पर बीच-बीच में सिद्धि रूपी विश्राम स्थान रखे गये हैं। एक के बाद एक उच्च कोटि की सिद्धियाँ प्राप्त करता हुआ कर्मठ तांत्रिक आगे बढ़ता जाता है। आत्मानुभव अथवा सत्-चित्-आनन्द सर्वश्रेष्ठ अनुभव है जो इन सिद्धियों को पार करने के बाद ही मिलता है।

## प्रेत चुड़ैल निवारण मन्त्र

''ओं ह्रीं क्लीं कंकाल कपाटनी कुटुम्बरी आरम्बरी हंकार वकार धः धः।''

नीम की पत्ती की धूनी देकर मंगल को इस मन्त्र से झाड़ें तो बाधा शान्त हो।

## भूत-प्रेत बाधा निवारण

सूत्र बनाने वन बीच आनन्द कन्द रघुवीर।
लले सिय सन्मुख महं होय धीर मति धीर।
तेहि समय लषण तहं आये।
पूछहि राम लषण बुलाये।
बोले हरि कथन कारण तुम भाई।

इत आवत बहु विलम्ब लगाई।
लषण बोले गयउं दूरि पहारा।
देखेउ तहां भूत दल झारा।
तह एको मानुष न दिखाये।
निज आश्रम को छोड़ पराये।
इतना सुन हरि बान चलायउ।
भागे भूत आनन्द गिरि भयउ।
'अमुक' के अगनहीं भूत नहीं भार।
राम के नाम से भई समुद्र पार।
आदेश श्रीराम सीता को दोहाई।
उपरोक्त मन्त्र का ३१ बार उच्चारण करके झाड़ें।

## अशांत आत्मा अथवा प्रेत बाधा हेतु

उत्तर बिराजे केदारनाथ नाम के राजा।
हादिक शश पीर पुकार किये पूजा।
शशमीर मक्का मदीना के पीर।
काहे आये हिन्दू के मन्दिर।
अपना नाम रखो तो 'अमुक' को जल्दी छोड़।
इस मन्त्र से ५१ बार झाड़े।

## ब्रह्म राक्षस बाधा के लिए

ऐ सरसों पीला सफेद और काला।
तू चलना फिरना भाई सा चाला।
तोहरे लाण से गगन फट जाय।
ईश्वर महादेव के जटा कटाय।

डाकिनी योगिनी व भूतपिशाच।
काला पीला श्वेता सुसांच।
सब मार काट करूँ खेत खलिहान।
तेरे नजर से भागे भूत लै जान।
आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई।
आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी दोहाई।

थोड़ी सी सरसों लेकर उपरोक्त मन्त्र का ३१ बार उच्चारण करके भूत बाधा से ग्रस्त रोगी पर फेंके और उसमें से थोड़ी सी बचाकर अग्नि में डाल दें।

इसके बाद 'ओं नमोमसाण वरसिने भूत प्रेतानां पलायनं कुरु कुरु स्वाहा।' इस मन्त्र का भूत ग्रस्त रोगी को ५१ बार झाड़ना चाहिए।

## भूत-प्रेत बाधा हेतु

जीरा जीरा महाजीरा जिरिया चलाय।
जिरिया की शक्ति से 'फलानि' चलि जाय।
जिए तो रमटले मोहे तो मशान टले।
हमारे जीरा मन्त्र से अमुक अंग भूत चल।
जाय हुक्म पाड्डाआ पीर की दोहाई।

उपरोक्त मंत्र से थोड़ा सा जीरा २१ बार अभिमन्त्रित करके रोगी के शरीर से स्पर्श करायें और उसे अग्नि में डाल दें। इस प्रयोग से भूत बाधा की निवृति होती है।

## प्रेत-प्रेतिनी बाधा हेतु

भूत सबको भई ठाहे आनन्द अपार।

जिसलो गुमान से 'अमुको' को भार।
हमरे संइको पऊं करो सलाम हजार।
जाते होय भूत आवेश किनार।
जितनी मेथी छोर बड़े आदि से अन्त।
तिसके धूम ग्रंथ ते पल में भूत भगते।
'अमुक' अंग भूत नहीं, यह मेरी के लाय।
उठी के आगे रत क्षण में जाय पराय।
आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई।
आज्ञा हाड़ि दासी चण्डी की दोहाई॥

थोड़ी सी मेंथी को २१ बार अभिमंत्रित करके रोगी के शरीर से स्पर्श करायें और उसे अग्नि में डाल दें। इस प्रयोग से भूत बाधा की निवृति होती है।

## आत्मा बाधा के लिए

''तह कुष्ट इलाही का बान। कुडूम की पत्ती चिरावन भाग भाग 'अमुक' अंग से भूत मारूँ धुलावन कृष्ण वर पूत। आज्ञा कामरू कामाक्षा हाड़ि दासी की दोहाई।''

एक मुट्ठी भर धूल लेकर उसे ३१ बार अभिमंत्रित करें और बाधा ग्रस्त रोगी पर फेंके। इससे बाधा की निवृत्ति होती है।

## डाकिनी शाकिनी निवारण हेतु

''ओं नमः आदेश गुरू को हनुमन्त वीर वीर बजरंगी बज्र धार डाकिनी शाकिनी भूत प्रेत जिन्न सबको अब मार मार, न मार तो निरंजनि निराकार की दोहाई।''

पहले हनुमान की उपासना करें। इसे शनिवार से करना चाहिए।

निरन्तर ३१ दिन तक करने के पश्चात किसी चौराहे की कंकड़ी और उड़द को ३१ बार अभिमंत्रित करके रोगी को झाड़ा दें।

## भूत व पातक दोष निवारण हेतु

'ओं नमः भवे भास्कराय अस्माकं 'अमुक' सर्व ग्रहणं पीड़ा नाशनं कुरु कुरु स्वाहा।'

शनिवार की सन्ध्या को १०८ बार मन्त्रों का हवन करें। हवन सामग्री में घी, दूध, गोमूत्र, चावल, चना, गेहूं, जौ, तिल, सफेद सरसों, कुश, मधु, राम्मी, आम, डुम्बरक के पत्ते, दूर्वा की जड़, अशोक, बरगद, आक, धतूरा, ओंगा की जड़ सम्मिलित है। इससे भूतोपद्रवभय व पातक का निवारण होता है।

'ओं शं श शिं शीं शुं शूं शें शों शं शः स्वः सः स्वाहा।'

१३ अंगुल लम्बी पलाश की लकड़ी का एक कील बना लें और उसे अभिमंत्रित करें। फिर इस अभिमंत्रित कील को गाढ़ दें। भूत व पातक दोषों से सेर्दव सुरक्षा रहेगी।

## चुड़ैल दोष की निवृत्ति के लिए

'बैर बैर चुड़ैल पिशाचिनी बैर निवासी।
कहुं तुझे सुनु सब नासी मेरी गाँसी॥
वर बैल करे तूं कितना गुमार।
काहे नाहीं छोड़ती यह जान स्थान॥
यदि चाहे तूं रखना अपना मान।
पल के कलाश ले अपनी प्रान॥
आदेश देवी कामरू कामाक्षा माई।
आदेश हाड़ि दासी चण्डी की दुहाई॥'

चुड़ैल व प्रेतनी आदि से प्रभावित रोगी को स्वस्थ करने के लिए इकत्तीस बार मन्त्र का उच्चारण करते हुए फूंक मारनी चाहिए।

## जादू टोने के प्रभाव को दूर करने के लिए

'ओं नमो आदेश कामरू कामाख्या देवी लीनो सलोना योगिनी बाँधे टोना आवे राखि में जादू कौन देश फिर पहले अफुल फुलवारी ज्यों ज्यों आवै बास त्यों-त्यों 'अमुक' आवे हमारे पास मोहिनी देवी की दुहाई फिरे।'

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए इक्कतीस बार झाड़े तो टोने के प्रभाव से निवृत्ति हो जाती है।

## भैरों मंत्र

'ओं वन खण्डी की लकड़ी बन खण्ड का तेल धरती ऊपर आकाश। बीज मन्त्र ऐसा कहिए। जो महादेव पार्वती सुखी बीज मन्त्र ऐसा ध्यान काया मध्ये ले विश्राम जगत कोटि पूर्ण तपे तीन शून्य मण्डल में जपे भैरों सादर भैरों बढ़ भैरों नरसिंह वीर पाय संजीवन मन्त्र बीज मन्त्र मन में धरे सोई करे ओं अन्न भैरों श्री श्री।'

वंशलोचन तीन तोला, चने तीन तोले, भाँग तीन तोला, गुड़ बारह तोला, उल्टी चक्की में पीसकर भैरों की मूर्ति बनाये और कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि से आरम्भ करके अमावस्या तक सवा लाख जप समाप्त करके और अन्तिम तिथि को इस मन्त्र से यज्ञ करके उस मूर्ति को कहीं दबा दें।

## भूत वशीकरण

'ओं चन्द्रमौलिक शंकरो भूतनाथौ गिरिजापतिम्।
नीलकंठाय सर्प विभूषित डमरू त्रिशूलधरं नमो॥'

चन्द्रमा के उदयकाल में नदी तट पर जाकर स्नानादि से पवित्र होवे और बाघम्बर बिछाकर दक्षिण की ओर मुंह कर बैठे। उपरोक्त मन्त्र का एक सौ आठ बार जाप करे। इकतीस दिन में सिद्धि प्राप्त होगी।

जिस प्रकार शास्त्रों में भूतों का वर्णन आया है उसी प्रकार प्रेतों का भी आया है।

## प्रेत वशीकरण

'ओं डं डीं डुँग डुंग डीं।
'अमुक' प्रेत ग्रह हूं हुं ठः ठः स्वाहा।'

अभिजित नक्षत्र में श्मशान भूमि में जाकर मुर्दे की हड्डी लावे और उसकी कील बनावे। फिर किसी मुर्दे की खोपड़ी लावें। मन्त्र जाप कृष्ण पक्ष की अष्टमी को आरम्भ करे जब मन्त्र समाप्त हो जावे, तब कील को मुर्दे की खोपड़ी में ठोंक दें। इस प्रकार इकसठ दिन तक प्रयोग करने से मन्त्र सिद्ध होता है।

## भूत उतारने का प्रयोग

'आज नश्चय अक्षीत कामरूपी महाशय वालभ्य लमयौ नैठामेयो सिरक्षतः।'

मोर पंख से इकतीस बार झाड़े तो रोगी अच्छा हो जावे।

## भूत उतारने की धूनी

साँप की केचुली, लहसुन सरसों बलमी की बीट, बकरे

के बाल, मैंढे के सींग, घुड़वच—इससे धूनी दे तो भूत उतर जाता है।

इस मन्त्र को भोज-पत्र पर लिखकर बालक के गले में बाँधे तो भूत भाग जाता है। यह मन्त्र गोरोचन से अनार की कलम बनाकर लिखा जाता है।

मन्त्र निम्न है—

ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ओं गलौ हुं क्लीं जूँ सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।

## रेवती भूत की धूनी

कूट, राल, गूगल, खस, हल्दी इनकी धूनी दे अथवा चौराहे पर हवन करावें।

## भूत उतारने का मन्त्र

'ओं रामबाण हन हन मुच मुच हुं फट् स्वाहा।'

इस मन्त्र को पढ़ता जाय और नीम की टहनी से झाड़ता जाये इकतीस बार झाड़ देने से रेवती भूत शान्त होता है।

## पूतना भूत की धूनी

कुत्ते की बीट, बालक के केश, पीपल की जड़ इनकी धूनी दे।

## गन्ध पूतना की धूनी

केशर, अगर, कपूर, कस्तूरी इन सबको पीसकर धूनी देवे।

## गन्ध पूतना का मन्त्र

'ओं नमो रामायण नौ हन मथ स्वाहा।'

इस मन्त्र का ५१ बार जप कर सिद्ध कर लें फिर रविवार को इकतीस बार नीम के लहरे से झाड़े तो गंध पूतना भूत भाग जाता है।

## भूत की बलि

कुत्ते की बीट, रोगी के बाल, बिनौले इसको इकतीस बार उतार चौराहे पर रख दें।

## शीश पूतना की धूनी

नीम के पत्तों की धूनी देवें।

## उतारा

काली तुलसी, माटेगी जायफल, सिरस को जड़ से धूनी दें।

## शक्तिशाली भूत नाशक मन्त्र

'ओं नमो काली कपाली दही दही स्वाहा।'

उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित तेल भूत-प्रेत बाधा से ग्रस्त व्यक्ति को लगाने से बाधा शांत होती है। उपरोक्त मन्त्र की दस माला जपने से तेल अभिमन्त्रित होता है। आसन के रूप में कोई भी ऊनी काला वस्त्र प्रयोग करें।

—:o:o:—

# मूठ

## जी हाँ! मूठ आज भी चलती है!

भूत-प्रेतों, डाकिनी, शाकिनी एवं मृत आत्माओं के द्वारा शत्रु को कष्ट देने की अनेक सटीक विधियाँ हमारे तन्त्र शास्त्र में वर्णित हैं। मृत आत्माओं के द्वारा शत्रु को मारना, कष्ट देना अथवा उसके घर में अनेक प्रकार के उपद्रव उत्पन्न कर देना तांत्रिकों के लिए साधारण सी बात है। मूठ द्वारा मारण तांत्रिकों के लिए भले ही कितनी जटिल और जोखिम भरी साधना हो, लेकिन यह सत्य है आज भी न केवल अपने देश वरन् विश्व के अन्य विकसित देशों में अनेक तांत्रिक इस क्रिया को सफलता पूर्वक सम्पन्न कर रहे हैं।

मृत आत्माओं द्वारा कष्ट कृत्या अथवा मूठ की परम्परा भारत में प्राचीन काल से ही चलन में रही है तब मारण प्रयोग के लिए साबुत काले उड़द के आटे से पुतला बनाते थे, फिर उसे लक्ष्य कर सुइयां फेंकते थे, कितने ही तांत्रिक मांत्रिक, ओझा आज भी पुतना बनाकर उसमें अभिमन्त्रित सूइयाँ चुभोते हैं पुतले के जिस अंग मे सूई चुभेगी, शत्रु के उसी भाग अथवा अंग में अत्यंत पीड़ा होगी। पुतले के हृदय में सूई चुभोते ही शत्रु की मृत्यु हो जायेगी। मूठ अथवा कृत्या के प्रयोग से की गई हत्या को 'मूठ चलाना' कहा जाता है, भारत से बाहर अफ्रीका में भी मूठ चलाने के अनोखे ढंग प्रचलित हैं। मूठ वापस जाने पर उसका तुरन्त प्रभाव भी पड़ता है घायल तत्काल स्वस्थ हो जाता है। पाश्चात्य विद्वान सर एस.एम. लैबर्ट ने ऐसी एक घटना का उल्लेख किया है। यह घटना आस्ट्रेलिया

में हुई थी। उत्तरी क्वींसलैंड में कई आदिवासियों का बलपूर्वक धर्म-परिवर्तन किया जा रहा था, पर नेवी नामक तांत्रिक ने धर्म परिवर्तन करने से सफ-साफ मना कर दिया। एक दिन डाक्टर लैबर्ट ने सुना कि राब अत्यंत बीमार है। जब डाक्टर लैबर्ट ने उसका परीक्षण किया तो पाया वह बीमारी से कहीं अधिक अस्वस्थ है। डाक्टर लैबर्ट ने राव से पूछा, 'भाई! तुम्हें क्या कष्ट है?'

राब ने कहा—ताँत्रिक 'नेबी' ने मुझे हड्डी दिखलाई है, अब मैं शीघ्र मर जाऊँगा।

डाक्टर ने उसके उपचार का भरपूर प्रयत्न किया पर सफल न हुए, अंतत: लाचार होकर उन्होंने नेबी तांत्रिक को बुलवाया, वह आया तो डाक्टर लैबर्ट ने उसे धमकी दी इस धमकी का अच्छा असर हुआ और नेबी अपनी मूठ वापस लेने के लिए तैयार हो गया, वह तत्काल राब के बिस्तर के समीप गया और झुक कर कुछ मंत्र पढ़ने लगा उससे बोला, मित्र मुझे भूल से ऐसा हो गया है। कुछ समय के बाद ही राव की हालत में सुधार होने लगा। थोड़ी देर बाद वही राब उठकर काम पर चल दिया, डाक्टर लैबर्ट यह देखकर चकित रह गये।

आस्ट्रेलिया के उत्तरी भाग में स्थित आर्नहेम लैंड से एक आदिवासी को डार्विन भेजा गया था, उसका नाम किंजिका था, उसकी हालत अत्यन्त शोचनीय थी, उसे अस्पताल ले जाकर दाखिल कराया गया बहुत उपचार करने पर भी वह वहाँ केवल चार-पाँच दिन ही जी सका, डाक्टर हैरान और परेशान थे, उसमें किसी भी रोग का पता न चल रहा था, कहीं कोई घाव भी न था, अंत में पाँचवें दिन वह मर गया उसे बस एक हड्डी दिखलायी

गयी थी, यह मारण प्रयोग का विचित्र तरीका था यह ऐसा प्रयोग था, जो कभी असफल नहीं होता है। यह एक ऐसा प्रयोग है जिसमें न खून गिरता है न कोई विशेष रोग ही होता है, हाँ कष्ट अवश्य होता है।

मैंने अपनी खोज यात्रा के मध्य ऐसे कबीले भी देखे जो मारण प्रयोग में 'कुँडेला' का प्रयोग करते हैं। कुँडेला का प्रयोग करने वाले तांत्रिक को मुलुगाँवा कहते हैं। 'कुँडेला' बनाने के लिए मानव हड्डी काम में लायी जाती है, हर कबीले का 'कुँडेला'—बनाने का तरीका अलग होता है? वह २३ से. मी. तक लम्बा होता है इसका एक सिरा वृत्ताकार नुकीला रहता है, दूसरे किनारे पर योनि के बालों का एक गुच्छा रहता है, यह गुच्छा छेद करके बाँध दिया जाता है इसका प्रयोग विशेष मारण-मंत्र पढ़कर किया जाता है, जिसके कारण यह अमोघ बन जाता है, 'कुँडेला' तैयार करने की प्रक्रिया और मारण-मंत्र प्राय: किसी को नहीं बतलाये जाते हैं, ऐसा विश्वास है कि इस का भेद बतलाते ही इसकी शक्ति क्षीण हो जायेगी।

'कुँडेला' को अभिमन्त्रित कर उसे सिद्ध मन्त्रों द्वारा घातक बना दिया जाता है जैसे ही यह 'कुँडेला' लक्ष्य की ओर रखा जाता है, यह अदृश्य रूप में जाकर उसे लग जाता है, इसी कारण बिना खून गिरे उसे तड़पा-तड़पा कर मार डालता है, इसमें मौत निश्चित है। यह कभी प्रभावहीन नहीं होता है।

कबीलों में औरतें भी टोना-टोटका करती तथा मूठ चलाती हैं। समाज अथवा वंश परम्परा तोड़ने वाले के विरुद्ध आदिवासी 'कुँडेला' का प्रयोग करते हैं अरूंटा जाति का एलन वेब अपने

कबीले के ही एक व्यक्ति से झगड़ पड़ा। उसने उसे मार दिया उस पर मुकदमा चलाया गया, न्यायालय ने उसे मानव हत्या का दोषी न पाया। अदालत से निर्णय के उपरांत वेब अदालत से बाहर आया तो उसे बतलाया गया फिरंगियों का निर्णय पक्षपात पूर्ण होता है, इसलिए उसे कबीले के सामने आना पड़ेगा बेब को मालूम था कबीले का क्या फैसला होगा? उसे मरना पड़ेगा। उसने चुपचाप शहर ही छोड़ दिया, गाँव वालों ने उसकी गैरहाजिरी में उसे मौत की सजा सुना दी कबीले के तांत्रिकों ने उस पर 'कुँडेला' का प्रयोग किया। यह प्रयोग सफल हुआ अथवा यह आज तक रहस्य ही है। मेरी जानकारी के अनुसार मुलुगांवा (तांत्रिक) काफी समय तक उस पर कुँडेला का प्रयोग करता रहा था। सिद्ध मृत आत्माएँ काफी समय तक उसके पीछे लगी रहीं। प्रिय पाठकों! अगर आप कुछ और अलौकिक सिद्धियों और साधनाओं के विषय में जानना चाहते हैं, तो मेरी पुस्तक पराविज्ञान की साधना और सिद्धियाँ अवश्य पढ़ें!

मिस्त्र मियामी अफ्रीका तथा अन्य कई देशों में आज भी जब कोई स्वस्थ मनुष्य बीमार पड़ जाये तो उसे मन्त्र अथवा आत्माओं का मारा ही समझ लिया जाता है। इस मारण प्रयोग के अनेक रूप हैं कभी पुतला या पुतली बनाकर उसे सूईयाँ चुभोते हैं या उस पुतले को मन्त्र पढ़ते हुए श्मशान में दबा देते हैं, मोम, लकड़ी, मिट्टी, भुस, योनि रक्त आदि का प्रयोग पुतला बनाने के लिए किया जाता है इसमें नाखून अथवा योनि के केवल काले बालों का भी प्रयोग किया जाता है योनि अथवा सिर के बालों का प्रयोग मारण के लिए भारत में भी किया जाता है, यह क्रिया मैंने स्वयं भी

देखी है।

'हाइती' निवासी मूठ चलाकर अपने शत्रु को मारते हैं कुछ तांत्रिक मुर्गी के चूजे की गर्दन काट कर उसके पंख छील देते हैं, फिर उस चूजे को शत्रु के पुतले के आगे धीरे-धीरे काटते हैं, उसके बाद पुतले के सम्पूर्ण शरीर में सुईयाँ चुभोते हैं। एक ऐसा ही पुतला तथा सर कटा चूजा मुझे भी मिला था शायद मंत्र पढ़ कर उस पुतले के अंग में सूई चुभायी गयी थीं।

कभी-कभी मक्के के आटे से विचित्र से पुतले बनाये जाते हैं। तांत्रिक मन्त्र बुदबुदाते हुए पुतले में कोई तेज धार वाली वस्तु ठोक देता है तेज धार दार वस्तु खोंसते ही शत्रु बेतरह तड़पने लगता है और समाप्त हो जाता है मूठ चलाने की प्रथा भारत में ही नहीं, अन्य देशों में भी प्रचलित है।

मूठ चलाने की साधनाएं तो सैकड़ों हैं, पर कुछ साधनाएँ अपने आप में वीभत्स और अत्यन्त गोपनीय मानी गयी हैं। इनमें से 'कृत्या साधना' भी एक ऐसी ही दुर्लभ साधना है। तन्त्र ग्रंथों के अनुसार दस महाविद्याओं की साधना करने से जो शक्ति और सिद्धि मिलती है वह केवल कृत्या साधना करने से प्राप्त हो जाती है। इस एक साधना के द्वारा तांत्रिक जीवन की उस ऊँचाई को प्राप्त कर लेता है, जो उसके जीवन का लक्ष्य होता है।

महर्षि विश्वामित्र ने भी बतलाया है जीवन की सारभूत साधना 'कृत्या साधना' ही है। संसार के श्रेष्ठ तांत्रिक त्रिजटा अघोरी ने मुझे बतलाया था कृत्या साधना के द्वारा शत्रु से सीधा सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है। यही सम्पर्क शत्रु के लिए अत्यन्त घातक सिद्ध होता है। तान्त्रिकों, अघोरियों के लिए मूठ, घायल,

बाण अथवा कृत्या कितना ही अमोघ अस्त्र क्यों न हो, पर यह अवैध है। खेद की बात है मारण प्रयोगों का चलन आज भी हो रहा है। ग्रहण, होली की काली रातों की इनके अवशेष आज भी चौराहों, श्मशानों में देखने को मिल जाते हैं, मानो वह कह रहे हों हम आ गये हैं, हमसे बच सको तो बच लो।

तन्त्र मन्त्र लगभग संसार के हर देश में विद्यमान है, उनके अपने-अपने विश्वास अपनी-अपनी मान्यताएँ हैं। तन्त्र-मन्त्र की दृष्टि से अफ्रीका और तिब्बत सबसे विचित्र हैं। वह अधेड़ बुजुर्ग किस्म के महाशय अपनी खिचड़ीनुमा दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए आगे बतलाते हैं। अफ्रीका के बीहड़ में स्थित फायोम एक उजाड़ इलाका है, ईसा पूर्व से ही अनेक अफ्रीकी नीग्रो-जन जातियां इस क्षेत्र में रहती आई हैं। आज भी नई रोशनी की चकाचौंध इन तक नहीं पहुंची है। भारी-भारी काली शिलाओं से घिरा हुआ यह प्रदेश है। उन्हें शिलाओं को काटकर त्रिभुज आकार की अनेक पर्वताकार आकृतियाँ बनाई हुई हैं। हजारों वर्ष से चले आ रहे इनके विश्वास आज भी यूं ही चले आ रहे हैं। समय का अपना प्रभाव होता है। समय की अनिवार्य क्रिया परिवर्तन है। तंत्र-मंत्र विज्ञान पर भी इस समय ने अपने परिवर्तन का बहुत प्रभाव छोड़ा है। कल तक जो तंत्र मंत्र जनकल्याण हेतु था आज शुद्ध व्यवसाय बन गया है। इस व्यवसाय से दूर आज भी फायोम में स्वच्छन्द विचरने वाले कबीले तंत्र-मंत्र के प्रयोग अपने उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। कुछ कबीले आज भी अभिशाप ग्रस्त हैं। वह जब भी सोई आत्माओं को जगाते हैं, तो वह रहस्यमय ढंग से मृत्यु को प्राप्त होते हैं। बलि देने की प्रथा उनके यहाँ भी है। यह कबीले

मंत्र शक्ति के प्रयोग से एक दम अनभिज्ञ हैं, केवल तन्त्र ( टोटके) ही करते हैं।

प्रिय पाठकों! यह विवरण मुझे कामाख्या (आसाम) की यात्रा करते समय एक बुजुर्ग ने दिया था। जिनका अधिकांश समय अफ्रीका, मध्य यूरोप और मिस्त्र में ही बीता था। वृद्धावस्था में वह शान्ति की खोज में वापस भारत आ गये थे। हरिद्वार, वाराणसी, उज्जैन, गया आदि स्थानों पर भ्रमण कर अब वह तंत्र-मंत्र की तीर्थ स्थली सिद्ध पीठ कामाख्या जा रहे थे। यह केवल संयोग ही था जो मेरी उनसे भेंट हो गई थी। तंत्र-मंत्र टोटकों पर चर्चा शुरू हो गई तो फिर चलती ही गई। वह मुझे टोटके (प्रयोग) बतलाते गये और मैं उन्हें कागज पर ज्यों का त्यों लिखता गया। उन्होंने मुझे सौ से अधिक प्रयोग बतलाये एक से एक अद्‌भुत एक से एक प्रभावी। विषय विस्तार के कारण मैं यहाँ कुछ ही चमत्कारी प्रयोग ही प्रस्तुत कर रहा हूँ।

## कुछ विचित्र वशीकरण तन्त्र

फायोम इलाके के युवा मनवांछित विवाह करने के लिए निम्न प्रयोग करते हैं।

(१.)

कबीले की किसी युवती से प्रेम हो जाने पर उसके दिल में प्रेम जगाने के लिए युवक इस प्रकार के कुछ तन्त्र इस्तेमाल करते हैं।

कबीले का युवा किसी बहती नदी के किनारे जाकर अपनी अंगुली में चीरा लगाता है। फिर किसी पेड़ से तुरन्त एक हरा पत्ता

तोड़कर उसे अपने खून में रंगता है। पत्ते पर रक्त लगाते समय वह एक ओर तो अपना नाम लेता जाता है और दूसरी ओर से जब रंगता है तो वांछित युवती का नाम लेता है जिससे वह विवाह करना चाहता है। रक्त में उस पत्ते को रंगने के उपरांत वह उसे बहते पवित्र जल में प्रवाहित कर देता है। इस टोटके के बाद वह युवती उसके प्रेम में बेचैन होने लगती है। इसके अतिरिक्त युवक प्रियतमा के सिर के तीन बाल लेकर उन्हें किसी पेड़ की खोह में रख देते हैं। ये बाल तीन अलग-अलग स्थानों से उस समय चुपचाप तोड़े जाते हैं जब वह गहरी नींद में सो रही होती है।

इस प्रकार खोह में बाल रखने के इक्कीस दिन के भीतर वह लड़की उसके पास आ जाती है और अपना प्रेम प्रकट कर देती है।

(२.)

इसके अतिरिक्त विवाह की इच्छुक युवती नींबू के कुछ बीज तथा अपने बायें हाथ की कनिष्ठा अंगुली काटकर अपने रक्त की कुछ बूंदें भी इसमें मिला देती है फिर एक पुतला बनाती है उस पुतले को एकान्त में गाढ़ देती है और कहती है, 'मैं अपना माहवारी का खून, बाल, थूक और बीसों नाखून गहरे दबा रही हूँ। इनसे मेरे लिए प्रेम पैदा होगा।' इसके पश्चात वह युवती अपने प्रिय के किसी कपड़े को लुगदी से रंगती है। यह सारी प्रक्रिया पूर्णमासी की रात में ही की जाती है इस प्रक्रिया से वांछित विवाह हो जाता है।

(३.)

मुस्लिम देशों में किसी सफेद कागज पर गन्धक से पन्द्रह का

यंत्र उल्टा बनाया जाता है और फिर इस कागज को किसी (यंत्र) ताबीज में बन्द करके ताबीज को अपने बाजू पर बांध लेना पड़ता है। बाँह पर ताबीज बांध लेने के बाद वह युवक उस लड़की के पास से कुछ इस प्रकार से गुजरता है कि उसकी परछाईं उस लड़की पर पड़े। कहा जाता है कि वह लड़की उस युवक से प्रेम करने लगती है। यह परछाई ३१ बार युवक पर डालनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त प्रेम में पीड़ित युवती ताजा कब्र से अपने दाएँ हाथ की कुछ मिट्टी उठाकर उसे एक सफेद कागज में लपेटती है और फिर उस पुड़िया को अपने प्रेमी के तकिए के नीचे, रख देती है। कहा जाता है लड़का उस युवती से अत्यन्त प्रेम करने लगता है।

(४.)

एक वशीकरण निवेदन सफेद कागज के टुकड़े पर लाल रंग के तकले द्वारा लिखा जाता है। फिर इस कागज को मोड़ कर एक ताबीज के खोल में बंद कर दिया जाता है जब युवक इस ताबीज को अपनी बांह में बाँधता है तो वांछित लड़की उसके वश में हो जाती है। यह प्रयोग भी पूर्णमासी के दिन ही करना होता है।

(५.)

अगर कोई नवयुवती किसी लड़के पर मोहित हो जाए तो वह माहवारी का खून, बाल, थूक और बीसों नाखूनों को मिलाकर एक प्रकार की लुगदी बनाती है फिर एक छोटा सा पर अत्यन्त सुन्दर एक पुतला बनाती है और इस पुतले को चौराहे में गाढ़ देती है। यह प्रयोग केवल पूर्णमासी को ही किया जाता है।

(६.)

पुतला चौराहे पर गाढ़ने के पश्चात वह युवती नियमित रूप

से उस स्थान पर पिशाब करती है और यह भावना देती है, 'मैं तुमसे प्रेम करती हूं, मैं तुम्हारे साथ ही विवाह करूँगी!' कुछ समय बाद वांछित युवक वश में हो जाता है। उन महाशय ने उपरोक्त चमत्कारी वशीकरण प्रयोगों के अतिरिक्त निम्न प्रयोग भी बतलाये—

१. बालछड़ की माला बनाकर गले में पहिना देने से नैगमेय ग्रह से ग्रसित शिशु तुरन्त स्वस्थ हो जाता है।

२. भुई आँवले की जड़ को सफेद सूत की सात गाँठों में बाँधकर गले में धारण करा दें। यह प्रयोग रोग शमन में सहायक है।

३. महुआ अथवा गूलर के नीचे रोगी बालक को ले जाकर स्नान करायें और यह सस्वर कहें 'जिनका मुख बकरे के समान है और जो अनेक रूप धारण करने में समर्थ है, जिनके नेत्र और भौंहें अत्यन्त चंचल हैं वे शिशुओं की रक्षा करने वाले नैगमेय देव इस बच्चे की भी रक्षा अवश्य करें।'

इस प्रकार शिशु स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करता है।

इसके बाद रात अधिक घिर जाने के कारण हम सो गये। दिन निकलने से पूर्व वह महाशय किसी स्टेशन पर चुपचाप उतर गये। वह अब कहाँ हैं और किस स्थिति में हैं मैं कुछ निश्चित रूप से नहीं बतला सकता हूँ, हाँ उनके द्वारा बतलाये गये प्रयोग आपकी सेवा में प्रस्तुत कर दिये हैं। आप इन्हें समय-समय पर प्रयोग करें और अपने अनुभव अच्छे बुरे जैसे भी हैं मुझे अवश्य लिखें। मुझे आपकी प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

—:o:o:—

# ११. मृत आत्मा की शांति हेतु प्रयोग

यह प्रकृति जड़ स्वरूप है, यह शरीर चैतन्य स्वरूप है। यह सत्य है हमारे में शक्ति का आवेश होता है, हम शक्तिमय हैं। इस प्रकार यह निश्चित है कि सजातीय में ही आवेश सम्भव होता है अतः हमारा अस्तित्व उपेक्षा का पात्र नहीं है। हमारे में जड़ता नहीं है चैतन्य है और चैतन्य शक्ति के आवेश की प्रबलतम रूप में होने का आधार है। जिस क्षण हम चेतन की सत्ता से परिचित होते हैं, उसी क्षण हमारा व्यक्तित्व निखर जाता है।

सांसारिक दृष्टि में आकर्षण, प्रेम जैसी अनुभूतियाँ हमें विकर्षण, विस्मरण, द्वेष से भिन्न लगती हैं जबकि ये एक ही भावना के अनेक रूप हैं।

शक्ति के विराट स्वरूप से साक्षात्कार करने के लिए सरल विधि है स्वयं को पहचानो।

वेद पुराणों में जिस यमराज का वर्णन मिलता है उनकी वास्तविकता कुछ भी रही हो उनका यथार्थ ज्ञानमार्ग में उजागर होता है। मनुष्य की चेतना जब बिम्ब रूप धारण कर लेती है तो वही अनेक रूपों में दिखने लगती है।

मेरा आशय यह नहीं है कि धर्मराज का कोई अस्तित्व है ही नहीं, किन्तु जब ज्ञानचक्षु खुल जाते हैं तो ये अपने आप में ही नजर आने लगते हैं।

ज्ञानमार्ग बतलाता है कि व्यक्ति की कर्मयात्रा में इच्छा एक प्रेरक शक्ति है। इच्छा क्या है और इसका दिशा-निर्धारण कैसे होता है, यह रहस्य केवल ज्ञान योग में ही खुलता है।

श्री कृष्ण ने कहा है—कर्मफल को भोगना संसार की अनिवार्यता है, किन्तु ज्ञान योग ऐसा मार्ग है जिसके द्वारा व्यक्ति बिना भोगे ही अपने संचित कर्म को दग्ध कर डालता है। यहाँ हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य की देह केवल मध्यबिंदु है इसके नीचे भी उतने मह लोक हैं जितने ऊपर हैं। इसलिये ही 'क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति' कहा गया है। जो संसारी इस जन्म में लोभान्वित रहते हैं, उनका धन और सम्पत्ति के प्रति लगाव हो जाता है, यह मोह उनको सर्पयोनि भी दे सकता है और प्रेतयोनि भी।

एक सज्जन बोले, 'मैं भूत-प्रेतों में विश्वास नहीं रखता'। मेरा उत्तर था, आप बहुत सुखी हैं, भगवान न करें कभी इन विषयों के कटु अनुभवों से गुजरना पड़े और आपको विचार बदलना पड़े। एक ताजा उदाहरण प्रस्तुत है—

मिस्र की एक अदालत ने माना कि भूत-प्रेत होते हैं। अदालत ने इस आधार पर अबूकाफ को बरी तक कर दिया है। गत सप्ताह एक न्यायाधीश द्वारा सुनाए गए इस फैसले के बाद से मिस्र के न्याय-जगत में तहलका मच गया है। काहिरा की एक अदालत के जज श्री रफात अंकाशा ने ३० वर्षीय अबूकाफ को विभिन्न औषधियों को अनधिकृत उपयोग और धोखाधड़ी करने के आरोप से मुक्त कर दिया है। अबू के खिलाफ शिकायत थी कि वह डाक्टर नहीं है, पर बीमारियों का इलाज करता फिरता है। वह

मरीजों को धोखा देता है।

अबू ने अदालत में कहा कि एक प्रेत मेरे पास आता है। वह रोगों की पहचान और उन्हें दूर करने में मेरी सहायता करता है और अबू ने अपनी बात अदालत में सिद्ध कर दी। जज ने अखबार वालों से कहा कि काफ ने अदालत में अपनी चिकित्सा क्षमता का सबूत देते हुए कहा था कि यहाँ मौजूद चारों वकीलों को मधुमेह है। यह बात ठीक निकली। काफ ने अदालत को पेशकार की बीमारी के बारे में भी पर्याप्त जानकारी दी जो सही साबित हुई। काफ की हर बात सच निकली।

न्यायाधीश श्री रफात अंकाशा ने कहा कि हो सकता है कि अबू का कथन सत्य हो। कानून में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है कि इस तरह जिन्नों के मामले में कोई ठीक-ठाक फैसला लिया जा सके। यह कह पाना बहुत मुश्किल है कि अबू का भूत जिन्नों से सम्पर्क है अथवा नहीं है।

अबू ने अखबारों को बताया है कि मैं बिना पढ़ा-लिखा एक किसान हूँ और युद्ध में अपंग हो गया था। एक जिन्न मेरे पास आया और मुझसे कहा कि अगर तुम मेरी बेटी से शादी कर लो तो मैं तुम्हें ठीक कर दूंगा। मैंने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। मेरी पत्नी जिन्न की बेटी है। हमारे तीन बच्चे और भी हैं।

अबू ने अखबार वालों को बतलाया कि मैं अपनी जिन्न सास के निर्देशों पर चल रहा हूँ। मैं जो कर रहा हूँ वह केवल मानवता की भलाई के लिए है।

काहिरा के एक डाक्टर सादिक का कहना है कि मुझे यह विश्वास नहीं होता कि कोई जिन्न मेरे पास आकर मुझे बतायेगा

कि मुझे क्या करना चाहिए। मैं बस इतना जानता हूँ कि कई लोग ऐसे भी हैं जो बीमार होने पर डाक्टरों के बजाय अबू जैसे लोगों के पास जाना अधिक पसन्द करते हैं।

अबू के बारे में सुनकर डा० सादिक ने अपने एक साथी को अबू के पास भेजा। अबू ने उसे रोज चार मछलियों की तली हुई आँखें, नींबू के दो बीज और सन्तरे के दो बीज खाते रहने की सलाह दी।

डा० सादिक ने बतलाया कि अबू एक मरीज से लगभग ढाई रुपए लेता है। शास्त्रों में भूत-प्रेत और राक्षस, बेताल जैसे नाम उनकी प्रकृति, क्षमता और सीमा के आधार पर तय किए गये हैं, इनके समानान्तर जन रक्षाकारी नामकरण देखने में नहीं आया, किन्तु व्यवहार में पितर, क्षेत्रपाल, सैय्यद जैसी व्यवस्था देखने में आती है।

ये लोग जिस तरह जीवित अवस्था में पीड़ितों और असहाय व्यक्ति की रक्षा करते रहे, उसी तरह मरणोत्तर भी दु:खी लोगों की सहायता ही किया करते हैं। हमारी आँखें इनके सूक्ष्म शरीर को देख नहीं पातीं।

पितर आवेशित होते हैं और अपनी सामान्य आवश्यकताओं के लिए अपने पारिवारिकजनों से आग्रह करते हैं कभी-कभी कठोर रुख भी अख्तियार कर लेते हैं। भूत-प्रेतों, पितरों और अशांत आत्माओं के विषय में और अधिक जानने से पहले हम मृत्यु को समझ लें। मृत्यु एक तकनीकी क्रिया है जो प्रकृति की स्वयं सिद्ध व्यवस्था है। मृत्यु वास्तव में है क्या? और यह होती किसकी है? मृत्यु एक पड़ाव है, देह में रहने वाला जीवात्मा

सनातन तत्व है। वह जन्म मरण से परे होता है। इसलिए मृत्यु आत्मा का लक्षण है, फिर मरण क्या है? मरण वास्तव में पूर्णता है।

उपनिषद और आयुर्वेद दोनों ही व्यक्ति के जीवन और मरण की जैविक प्रक्रिया का विवरण देते हैं।

तन्त्र मार्ग भी मुक्ति को पवित्र उद्देश्य मानता है, मरण की अनिवार्यता को वह स्वीकार करता है।

बात यहीं खत्म हो जाए तो कोई बात नहीं थी किन्तु मृत्यु के बाद उसे अगली देह नहीं मिली और वह प्रेत हो गई।

प्रेत एक वासनामय लोक है जो अपने कर्मकाल में दृढ़ रूप में कल्पित किसी कामना की पूर्ति के लिए उपयुक्त वातावरण बनने तक प्रतीक्षा करने का माध्यम बनता है। मनुष्य योनि जो कर्मक्षेत्र है, के सिवा कोई दूसरी ऐसी योनि नहीं जिसमें अपना मार्ग निर्धारित करने के लिये कर्म करने की स्वतन्त्रता हो। प्रेत भी इसी प्रकार की एक योनि है, प्रत्येक प्रेत अपनी मुक्ति चाहता है, यह बात मेरे अनुभव में अनेक बार आयी है।

प्रेत साधना निकृष्टतम कार्य है। इसमें सनदेह नहीं कि प्रेत-साधक की अधोगति होती है। प्रेतबाधा से मुक्त करने के लिए प्रेत की सहायता ली जाती है। उस प्रेत के बल से वे लोगों को प्रेतबाधा से मुक्त कर देते हैं। तांत्रिक प्रेत के संसर्ग में रहकर, उसको एवं उसकी सामर्थ्य को दासवत अधिकार में रखकर भी अपने पर नियन्त्रण न रख सके। अधिकांश तांत्रिकों को वासना और धन के मरुस्थल में ही भटकते पाया है। उनके चमत्कारों का लोग लोहा मानते हैं, उनके सामने बोलने का साहस किसी को नहीं होता। मैंने निजी अनुभव में भूत-प्रेतों का उपचार करने के

लिए सात्विक प्रयोग भी हैं। आप उन्हीं प्रयोगों को सीखें।

प्रेतलोक के कानून के अनुसार किसी प्रेत को यह छूट नहीं है कि वह किसी भी निरपराध व्यक्ति को वृथा परेशान करे।

प्रेतलोक वासना लोक है। कभी-कभी कोई प्रेत अपनी इस वासना से प्रेरित होकर प्रेत की मर्यादा का उल्लंघन करता हुआ किसी स्त्री पर बेतरह अधिकार कर लेता है। सुगन्धित और मधुर पदार्थ, जूठे मुँह रहना, प्रेत स्थान पर समय-समय पर घूमना—ऐसी स्थितियाँ हैं जो प्रेत को निमंत्रण देने वाली होती हैं। वासनाग्रस्त प्रेतों में अपवादस्वरूप ही ऐसे होते हैं जो सरलतापूर्वक वापस चले जाते हैं किन्तु जो किसी स्त्री के सौंदर्य पर आसक्त होकर घेरते हैं वे तब तक नहीं जाते जब तक उनके साथ कठोरता से पेश नहीं आया जाता।

प्रेत साधना में सफलता के लिये व्रत धारण करना पड़ता है। व्रतधारी का अर्थ है—व्रत धारण करने वाला, प्रतिज्ञाबद्ध जीवन यापन करने वाला, कुछ आदर्शों के लिये पूरी शक्ति के साथ तत्पर रहने वाला। व्रत शीलता एवं प्रतिज्ञा लेने से अन्तःचेतना में शक्ति आती है। तांत्रिक की सारी शक्ति व्रतशीलता में ही सन्निहित है। यदि वह किसी लक्ष्य की पूर्ति की प्रतीक्षा कर लें तो उसकी पूर्णता बहुत अंशों में निश्चित हो जाती है। व्रत एक संकल्प है। संकल्प में महान शक्ति है। संकल्प अपनी सुप्त शक्तियों को जाग्रत करने का विधान है। किसी कठिन कार्य को पूरा करने के लिये जैसे मनुष्य अपनी सारी शक्ति लगा देता है, उसी तरह अपने संकल्प को पूरा करने के लिये वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति को एकत्रित करके उसका प्रयोग करता है।

अनुभवी तांत्रिकों का स्पष्ट मत है कि भूतशुद्धि की क्रिया पूरी तरह सम्पन्न होने पर शरीर और अन्तःकरण पवित्र हो जाता है। चित्त की शुद्धि से वह अपार आनन्द का अनुभव करता है। एक तरह से वह अपने शरीर की दिव्यता का अनुभव करता है। इन्हीं लाभों को ध्यान में रखते हुए संहिता में लिखा है कि भूत शुद्धि के बिना सभी कार्य व्यर्थ हो जाते हैं। भूत शुद्धि में मन्त्र व भावना शक्ति के सहयोग से स्थूल व सूक्ष्म शरीर का शोधन किया जाता है। मन्त्र शास्त्र में इस क्रिया का सर्वोत्तम स्थान है।

आजकल अनेक तन्त्र-मन्त्र जादू-टोना प्रचलन में हैं लेकिन मूठ का प्रयोग कम होता है। राजस्थान, म० प्र० में तो अनेक किस्से प्रचलित हैं। कई जानकार हैं। मूठ उड़द के दानों से चलती है। यह साबुत काले उड़द शव की खोपड़ी में बोए जाते हैं। उगने के बाद ये उड़द फेंके जाते हैं यह जिस पर फेंके जाते हैं, उसका निश्चय ही मारण करते हैं। यह मूठ प्रायः ढाई घड़ी से लेकर, ढाई महीनों तक की होती है। एक मूठ भैंसासुर भी होती है, जिसमें काले साँप के मुख में उड़द बोये जाते हैं। वे जब पक जाते हैं, तब उन्हें मारा जाता है। मूठ स्त्रियों पर कम चलती है। तांत्रिक आयी मूठ को वापस भी कर देते हैं।

डायनों का संसार भी बड़ा अनूठा है। ये हनुमान के मन्दिर में नग्न हो पूजा करती हैं। इसकी नजर बड़ी घातक होती है। डायन के अतिरिक्त एक हींयारी भी होती है, जो मनचाही वस्तु उड़ाने में समर्थ होती है। इसी प्रकार की एक आत्मा सिकोतरी भी होती है। यह दो प्रकार की होती है।

शैशवावस्था में जिसकी मृत्यु हो जाती है वह प्रेत योनि में जाता है।

कई तरह के टोटके भी प्रसद्धि हैं, एक टोटका होता है जिसमें पुतला बनाकर उसे कीलों से कील दिया जाता है। जहाँ-जहाँ से यह पुतला कीला जाता है, उस स्थान पर भयंकर पीड़ा हो जाती है। गला कील देने से बोलना बन्द हो जाता है। जहाँ जोड़ होते हैं, वहाँ से जोड़ दर्द करने लग जाते हैं। यह पुतला अगर पानी में पत्थर के नीचे रख दिया जाता है तो शरीर गलता रहता है। राजस्थान और म० प्र० में शोध यात्राओं में मैंने ऐसे कई टोने-टोटके देखे हैं।

मैंने अपनी यात्राओं के मध्य अनुभव किया है देवी देवताओं की अपेक्षा भूत-प्रेतादि को सिद्ध कर लेना सरल होता है। भौतिक दृष्टि से भूत-प्रतादि का साधन इच्छाओं की पूर्ति का सुगम मार्ग है, परन्तु पारलौकिक दृष्टि से इन सिद्धियों को अच्छा नहीं माना जाता है। साथ ही इनकी साध्रना में अनेक प्रकार के भय भी उपस्थित होते हैं। अत: साधकों को सब बातों पर विचार करने के बाद ही इनकी साधना में प्रवृत्त होना चाहिए।

तान्त्रिक साधना के इच्छुक साधक को निम्नलिखित बातें हमेशा स्मरण रखनी चाहिए—

प्रत्येक साधना की सिद्धि साधक के आधार पर निर्भर करती है। काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, हिंसा एवं दूसरों को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से किए गए प्रयोग निष्फल हो जाते हैं। धर्म एवं कानून विरुद्ध तांत्रिक-साधना नहीं करनी चाहिए। अब कुछ विशिष्ट प्रयोग प्रस्तुत हैं।

## भूत-प्रेत का झाड़ा

ग्रहण अथवा होली की मध्य रात्रि में ११०८ बार जप लेने से यह सिद्ध हो जाता है। तत्पश्चात् आवश्यकता के इस मन्त्र का ३१ बार पाठ करते हुए रोगी को झाड़ा देना चाहिए।

'गुरू सत्यं विल्मिल्लाह का पूज्योमा आवनकर आदि गुरू सृष्टि करतार वेद बहर ताराँहि एकी आइ युग चारि तीन लोक वेद चारि पाँचों पाँडव छव मारग सात समुद्र आठ वसु नव ग्रह दश रावण ग्यारह रूद्र बारह राशि तेरह शोक चौदह लोक पन्द्रह तिथि चारि खानि, चार बानि पाँच भूत चौरासी आत्मा लाषति अयानि अष्ट कुली नाग तैंतीस कोटि देवता आकाश पाताल मृत्यु लोक रात दिन पहर घरी दण्ड पल विपल महारथ सापिधर मेरों अब जो कुछ फलाने के पीरा देव दानव भूत प्रेत राखी सुजानु विनानु किताकरषादितावा क्षागाठिमुठिरष्णी मुखणी विलनी फोठीरीगद्वहीनी नाईक बोलाइ अघौगीकरण मूलवायु सूलुण सुरू ननहरू, वागडहरू बाजगरहू कर रक्तपीत मूल कुछ डाढारह प्रमेह गोला प्लीहा नहरूआ अहोगा सोगा अर्धशीशी कुटी लुती बुवारी मिरगी कमलवाय हुडी अनुवावुहलेलगंडक वायु चोटफेट रिताकिताला पालगायाषर मितीलंघा उलंघा बाट घाट बाहर निसार पसार साँझ सकार कौनहु प्रकार होई हाडउदवार चामनाड़ी अर्द्ध अंग जहारूसी दोहाइ सुलेमान पैगम्बर की तुरन्त विलाही बीन जाही नातरू सवा लाख पैगम्बर की वज्रथाप नवनाथ चौरासी सिद्धि के सराय शेषंकर पूदी अहि आपीर मनेरी की शक्ति आदम की भक्ति जरि भस्म होइ जाय जाहि निहिनिषद्ध जाहि जाइ पिण्ड कुशल दो फिटु फिटु स्वाहा।'

## भूत नाशक सरसों मन्त्र

'ऐ सरसों पीला सफेद और काला।
तू चलना फिरना भाई सा चाला॥
तोहर बाण से गगन फट जाय।
ईश्वर महादेव के जटा कटाय॥
डाकिनी योगिनी व भूत पिशाच।
काला पीला श्वेत सुसाँच॥
सब मार काट दरू खेत खलिहान।
तेरे नजर से भागे भूत लै जान॥
आदेश गुरु गोरखनाथ का।
आज्ञा हाड़ी दासी चण्डी दोहाई।'

इस मन्त्र द्वारा सरसों को ३१ बार अभिमंत्रित करके रोगी को मारें तथा थोड़ी सी सरसों अग्नि में डाल दें तो भूत-प्रेत बाधा दूर हो जाती हैं।

## प्रेतिनी चुड़ैल निवारण मन्त्र

'बैर बैर चुड़ैल पिशाचनी बैर निवासिनी।
कहूं तुझे सुनु सर्वनासी मेरी गाँसी॥
वर बैल करे तू कितना गुमान।
काहे नहीं छोड़ती यह जान स्थान॥
यदि चाहै दूं खना आपसन मान।
पल में भाग कैलाश लै अपनो प्राण॥
आदेश गुरू गोरखनाथ का।
आदेश हाड़ी दासी चण्डी की दुहाई॥'

इस मन्त्र को होली के दिन ११००८ की संख्या में जप कर सिद्ध कर लें। फिर इस मन्त्र को ३१ बार पढ़कर फूँक मारें, तो प्रेतिनी, चुड़ैल, डायन, पिशाचिनी आदि भाग जाती हैं।

# १२. तन्त्र एवं ज्योतिष

ज्योतिष, तन्त्र अथवा अन्य क्षेत्रों में की जा रही व्यापक खोजों से हम आश्चर्यचकित अवश्य हो जाते हैं, पर वह अभूतपूर्व नहीं है। ज्योतिष का आधार गणना एवं समय है। एक दिन-रात की लम्बाई चौबीस घण्टे में नापना और घण्टा-मिनट का हमारे दैनिक जीवन में उपयोग समय की गति को सूचित करने का ज्योतिषीय संकेत था, जिसका आकाश से कोई सम्बन्ध नहीं रहा, वह केवल हमारे कलैण्डरों एवं दैनिक क्रिया-कलापों तक सिमटकर रह गया है। वैज्ञानिक विश्लेषण ऐसी इकाई के लिए एक सैकिण्ड के एक हजारवें भाग तक जा पहुंचे हैं। ज्योतिष में समय की अत्यन्त सूक्ष्म इकाई प्रयोग में आया करती थी—यह बात हमारे प्राचीन ग्रंथों से प्रमाणित है। प्रश्न यह है—उस युग में इतनी सूक्ष्म इकाई को आखिर नापा किस प्रकार जाता था जबकि घड़ी यन्त्र इतना विकसित नहीं था। उस काल में व्यक्ति प्रकृति के अधिक निकट था और उसने जो कुछ खोजा, वह प्रकृति के रहस्यों और क्रिया-कलापों का एक रूप था। इस इकाई को 'त्रुटि' कहा जाता था जिसका व्यावहारिक नाप था—किसी भी हरे पत्ते को सूई से छेदने पर जो समय लगता है वह एक 'त्रुटि' होता है सौ त्रुटि का एक लव और दस लव का एक निमेष होता है। निमेष का अर्थ

हम सभी जानते हैं। यह इकाई स्थूल होते-होते विपल, पल घटी आदि में बदलती जाती है।

आज असीमित आकाश को नाप लिया गया है। इस समूचे ब्रह्माण्ड की आयु का निर्धारण करते समय दिव्य द्रष्टा ज्योतिषियों ने पदार्थ या तत्व की सूक्ष्म अवस्था और प्रकृति को अपने गणित का माध्यम बनाया था। यह निश्चित है कि वैज्ञानिक शैली से विश्लेषण करने वाले हमारे ज्योतिषियों, तांत्रिकों ने ग्रहों को शुष्क पिण्ड माना था। किन्तु जन सामान्य को समझाने के लिए उन्होंने ग्रहों का मानवीकरण किया था और समाज में प्रचलित व्यवस्था के अनुसार उनका विभाजन किया था।

ज्योतिष के निष्कर्षों को कथा रूपों में प्रस्तुत करना ज्योतिष ग्रन्थों, पुराणों, वेदों का कार्य क्षेत्र रहा था। ये कथायें ज्योतिष तन्त्र का पक्ष रही हैं। पुराणों में जिस ब्रह्म का वर्णन है वह आत्मदर्शन का रूप है। जैसे चन्द्रमा को हम विज्ञान की आँख से देखने पर यह पृथ्वी का उपग्रह नजर आता है। ब्रह्मा या विष्णु या रूद्र जैसी इकाईयाँ इन्हीं शब्दों के द्वारा हमें एक निर्लिप्त तथ्य का आभास मात्र देती हैं।

ब्रह्मा सृष्टि का रचयिता है। इस बात को हम ज्योतिष की भाषा में इस तरह भी जान सकते हैं कि ब्रह्मा वह पिण्ड है जो पदार्थ को विकसित होने की शक्ति बराबर प्रदान कर रहा है। ज्योतिष विज्ञान में ब्रह्मा पर अधिक प्रकाश नहीं डाला है। शास्त्रों में ब्रह्मलोक के जो विवरण दिये गए हैं उनको देख कर कहा जा सकता है कि उस पिण्ड में सूर्य से अधिक प्रकाश है और उसका व्यास भी अधिक है। हमारे यहाँ के सैकड़ों वर्ष वहाँ के एक दिन

के बराबर होते हैं। इस पिण्ड को हमने केवल भीतरी शक्ति से ही देखा।

भारतवासियों ने भी चन्द्र की उपासना की थी, उसके विविध रूपों और गुणों को जानने का प्रयास किया था इसलिए अपनी साधना के निष्कर्षों को उसने भिन्न-भिन्न शब्दों के माध्यम से उजागर किया था।

ब्रह्मा जैसे पिण्ड की चाल गुरुत्व और प्रभाव का आकलन करने वाला ऋषि ज्योतिर्विद ही था। ज्योतिष को पुराणों के साथ मिलाकर पढ़ने से ग्रहों के सम्पूर्ण रूप गुण और इतिहास का पूर्ण ज्ञान हो सकता है। तन्त्र अथवा ज्योतिष शास्त्र इतना विशाल है, उसके गणित और फलित में भूल होने की संभावना रह ही सकती है। हमारे ऋषियों के अनुमान को सत्य तक ले जाने में अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी, सभी कोणों से अनेक विधियों से निर्णायक बिन्दु तक पहुंचने के मार्ग बतलाये हैं। इन सबके बावजूद यह सत्य है कि समय के पार देखने के लिए साधक की अपनी अन्तश्चेतना और कठोर साधना की आवश्यकता रहती है। मंत्र के रूप में किया जाने वाला अनुष्ठान तांत्रिक उपयोग ज्योतिष-मुहूर्त के रूप में विचारणीय रहता है। ज्योतिष में तिथियाँ, नक्षत्र लग्न और वार के रूप में जो विभाजन है वह चन्द्र की स्थिति सूचित करता है। इसलिए ज्योतिष के साथ तांत्रिक अनुष्ठान का गहन सम्बन्ध है। हमें इसकी महत्ता स्वीकार करनी ही चाहिए।

## नए कदम

महर्षि वात्स्यायन से काम विकार का प्रारम्भ चक्षु-प्रीति से

ही माना है। प्यार की दुनिया आँखों के इशारे पर चलती है और दर्शन से फलती फूलती है। मन का यह मोह भयंकर रहता है। यह तथ्य गीता में किसी और सन्दर्भ में बतलाया गया है किन्तु वात्स्यायन ने प्रेम की नवीं अवस्था उन्माद और दसवीं मृत्यु बतलाई है।

प्रेम पर किसी का बस नहीं, प्रेम की कोई जाति, धर्म या अवस्था नहीं। कभी भी हो सकता है और किसी से भी हो सकता है। एक बार जब हो गया तो किसी भी प्रकार के बंधन पसन्द नहीं करता। सच तो यह है कि बन्धनों से प्रेम अधिक गहराता है, पाबन्दियों के घेरे में प्रेम अधिक सघन होता है।

आज हमारे में सत्य कहने का साहस नहीं रहा और अगर कोई सत्य कह देता है तो उसे सुनने का साहस नहीं है। वास्तव में हर बुजुर्ग यह आशा रखता है कि सारे लोग उसी की तरह सोचने लग जायें, हर पिता यह कल्पना करता है कि उसका पुत्र उसी की तरह व्यवहार करे। विरोध का प्रारम्भ ऐसे ही एक बिन्दु से होता है। मैंने अपने जीवन में पाप और पुण्य की रेखा को पहचानने का बहुत प्रयत्न किया, किन्तु हर पाप में पुण्य की और पुण्य में सन्देह की झलक दिखती रही है। यहाँ मैं पाप-पुण्य की परिभाषा के विवाद में नहीं जा रहा हूँ, प्रसंगवश अपना विचार प्रकट कर रहा हूँ। पाप-पुण्य की परिभाषा में 'प्रेम' पाप नहीं है। प्रकृति ने प्रेममय होकर इस संचार की रचना की है। प्रत्येक रचना के पीछे केवल प्रेम ही है। इसलिए प्रेम पाप नहीं हो सकता फिर भी प्रेम को पाप माना जाता है। स्त्री और पुरुष का भेद पुरुष प्रधान समाज में अधिक तीव्र रहा करता है। हमारे यहाँ पुरुष-पुरुष और स्त्री-स्त्री के बीच प्रेम होने में कोई आपत्ति नहीं होती किन्तु स्त्री और

पुरुष के बीच प्रेम होने में कई तरह की मर्यादायें सामने आ जाती हैं। ये मार्यादायें उनके ज्ञान के संसार को इतना सीमित कर देती हैं कि स्त्री और पुरुष में प्रेम नाम की अनुभूति केवल रिश्ते में ही दिखलाई देती रहती है।

प्रश्न यह है अगर स्त्री-पुरुष में प्यार हो जाता है तो वह पाप किस तरह हो जाता है? जहाँ उनको मिलने से मना करके एक दीवार खड़ी कर दी जाती है और वे उस पीड़ा को मौन रहकर सदैव भोगते रहते हैं। क्या वह पीड़ा नहीं है? क्या वह अत्याचार नहीं है? मैं पूछता हूं जहाँ दो हृदय मिलने को आतुर रहते हैं, वहाँ दोनों मिलकर सुख, सन्तोष प्राप्त करते हैं वहाँ बुराई कहाँ है? मेरे इस कथन पर अनेक लोग क्रोधित हो सकते हैं क्योंकि वे मेरे वक्तव्य को मुक्त यौनाचार का नारा समझ सकते हैं और मुझे कुतर्की समझकर अपनी ओर से आक्षेप लगा सकते हैं, मैं इससे तनिक भी भयभीत नहीं हूँ। हमें प्रकृति ने जीवन दिया है, उसे स्वतन्त्र रूप से जीने की सुविधा और साधन दिए हैं पर व्यक्ति अकेला नहीं है, वह किसी न किसी प्रकार के समुदाय से जुड़ा रहता ही है इसलिए उनकी व्यवस्था में किसी प्रकार का ऐसा छेद नहीं रहना चाहिए जिससे उनके वैवाहिक, साहचर्य अथवा सह-जीवन में अवरोध उत्पन्न हो। यही सोचकर समाज की संहिता का निर्माण किया गया और उनका सम्मान करना समाज के प्रत्येक प्राणी का पावन कर्त्तव्य है। जहाँ सामाजिक मान्यतायें अपनी रूढ़ता के कारण साधक के जीवन को विषम और यन्त्रणामय बना देती हैं तथा जिसके पीछे कोई तर्कसंगत आधार नहीं होता है वहाँ साधक को अपनी बुद्धि और विवेक से काम लेना चाहिए। स्वयं

वात्स्यायन जैसे विद्वान ने ऐसी परिस्थिति में सम्मोहन और आकर्षण के प्रयोग करने की अनुमति दी है।

यौनाचार और स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों को लेकर भी हम बगावत करना चाहते हैं किन्तु हमारे चारों ओर समाज का घेरा है और संस्कारों की दासता है।

किसी भी स्त्री के प्रति हम सकाम भावना से सोचने की बात ही नहीं करते। यद्यपि ऐसा हो सकना असंभव है फिर भी यह स्थिति समाज के लिए व्यवहार का विषय तो बन ही सकती है। इसी कारण मन्दिर अपना आकर्षण खोते जा रहे हैं। साधु और तांत्रिक विवाह कर रहे हैं। 'यत्र नारि पूज्यन्ते, रमन्ति तत्र देवता' का सिद्धांत अपना अर्थ खोता जा रहा है।

क्या यह अच्छी बात है, किन्तु वे अपने कर्त्तव्य की उपेक्षा क्यों कर रहे हैं? क्या साधना इसलिये है कि वे अपनी विलासिता से समाज को चिड़ावें? वे स्वयं लोभी और व्यवसायी हो गये?

ऐसी विषम परिस्थिति में हम लोगों का कर्तव्य है कि वे मन्दिरों के प्रति, धर्म और आचारसंहिता के प्रति लोगों में श्रद्धा और विश्वास बढ़ावें।

इस ओर संकेत करने के पीछे मेरी यही इच्छा है कि सौभाग्य से यदि कुछेक साधक इस ओर सचेष्ट होने का प्रयत्न करें तो एक उपयोगी काम हो सकता है। तंत्र के द्वारा उदार दृष्टि से देखने पर यह माना जा सकता है कि एक साधिका ने यदि किसी साधक से समागम कर लिया तो क्या बात हो गई? वह समागम किसी और पुरुष के साथ हुआ है तो भी कोई खास बात नहीं क्योंकि इस समागम में जो माँसपेशियों की क्रिया हुई या एक प्राकृतिक संवेग

की जो पूर्ति हुई वह देव-विज्ञान की प्रकृति से न अनपेक्षित घटना थी, न अस्वाभाविक किन्तु इसका एक भावानात्मक पक्ष भी है और वह समागम के औचित्य-अनौचित्य पर गम्भीरता से विचार करता है।

तन्त्र मार्ग स्त्री को केवल स्त्री मानता है शक्ति का रूप समझकर पूजता है, उसे अपनी या पराई नहीं कहता क्योंकि नारी वहाँ एक अंग है, एक मार्ग है इसलिए उसकी बहुत विस्तृत परिभाषा है फिर भी यह निश्चित है 'यद्यपि सिद्धम् लोक विरुद्धम् ना चरणीयम्' यह शास्त्रसम्मत है। तंत्र का विश्वास है कामकुण्ठा नरक है। एक स्थान पर कोई प्रयोग मेरे से ही कराने का इतना आग्रह रहा कि विवश होकर मुझे उसमें बैठना ही पड़ा। प्रयोग सफल रहा।

यह घटना मैं इस उद्देश्य से लिख रहा हूं कि इस प्रकार की दुर्घटनाओं से हम परिचित हो जायें और इनके हर पहलू पर विचार कर लें।

मेरे से पत्र-व्यवहार होता है किन्तु वे छद्मनाम से मुझे बुलाते हैं। उनके शहर में जाकर परिस्थिति को समझने की बात तय होती है। तभी यह रहस्य खुलता है कि आज तक का पत्र-व्यवहार किसी कपोल कल्पित नाम से था। उनके परिवार की स्थिति विचित्र है, वे स्वयं विवाहित हैं। पत्नी जरा मोटी है, लगभग उनके जितनी ही। पत्नी का क्या होगा। इस पर वे कहते हैं मैंने वर्षों से इससे समागम नहीं किया। मैं चाहता हूँ मेरी प्रेमिका अपने पति से तलाक ले ले और मैं भी इसका परित्याग कर दूं।

ऐसी इच्छा से पीड़ित होकर वे परेशान हैं और सारे तन्त्र

शास्त्र की परीक्षा लेते घूम रहे हैं। वे कहते हैं 'देखें इस शास्त्र में कुछ सत्य है तो करके दिखलावें।' अब आप ही बतलायें मैं क्या कहूं?

दूसरे सज्जन हैं वे किसी युवा विधवा से स्नेह-बंधन जोड़ना चाहते हैं तो देश के तांत्रिकों से सम्पर्क साधते हैं। पैसा खर्च कर सकते हैं इसलिये खर्च करते हैं। अब मैं इनके लिए क्या कर सकता हूँ।

ऐसी ही और भी अनेक स्थितियाँ हैं जिनमें स्त्री पुरुष दोनों ही हैं। कुछ कुमारियाँ भी हैं जो अपने प्रेमी से पीड़ित हैं। वह प्रेम के नाम पर अपने प्रेमी के लिए उपभोग की वस्तु बनती रहीं किन्तु वे सम्बन्ध टिक नहीं पाये। अब उसे पाना चाहती हैं। अब उसमें तन्त्र शास्त्र क्या करे?

ये सब कुंठायें ही हैं जिनका क्रम बराबर चलता रहता है और उस सिलसिले का कोई अन्त नजर नहीं आता। अच्छा हो अगर ऐसी घटनाओं को उत्पन्न ही नहीं होने दें।

कई बार मेरे पास कुछ इस प्रकार के भी पाठकों के पत्र आते हैं जिनको साधना के क्षेत्र में सफलता नहीं मिलती। वे कारण जानना चाहते हैं।

सामान्यत: प्रयोग उसी स्थिति में निष्फल रहते हैं जब उन की जप कम मात्रा में किया जाये। शास्त्रों में निर्दिष्ट गणना सही है किन्तु यह संख्या आज के समाज एवं वातावरण में सही नहीं उतरती। हमारा मन केन्द्रित नहीं हो पाता। हमने आज तक कोई भी जप नहीं किया, ऐसी स्थिति में सफलता किसी तरह मिल सकती है?

वास्तव में हमारे पास उपयुक्त ज्ञान नहीं है, हमारे पास आस्था नहीं है तो ऐसी स्थिति में वह मन्त्र ही सारा काम करेगा और इसमें समय लगेगा ही। इस रहस्य को भली भाँति समझने का प्रयत्न करें।

जीवन में उद्देश्य को पाने के लिए आकर्षण, सम्मोहन और वशीकरण ये तीन प्रकार के प्रयोग किये जाते हैं पर इन तीनों में अन्तर है और जैसा इनका प्रभाव और स्वभाव है वैसा ही काम करते हैं।

सम्मोहन का अर्थ है मुग्ध होना, हो जाना, वशीकरण का अर्थ होता है वश में करना और मन की शक्ति उसकी एकाग्रता एवं निर्मलता में ही छुपी है।

किसी भी मंत्र का उपयोग करने के लिये उस मंत्र का और स्वयं का संस्कार करना पड़ता है। संस्कार करने के बाद उस का पुरश्चरण करना पड़ता है। पुरश्चरण के लिए भिन्न-भिन्न मन्त्रों की जप-संख्या भिन्न रहती है।

## शाबर मन्त्रों का सत्य

'शाबर' मंत्र तंत्र का सरलीकरण है। इसके प्रवर्तक शंकर हैं। जिन साधकों सिद्धों ने इसका उपदेश दिया है वे तन्त्र मार्ग के साधक रहे हैं। शास्त्र के समानांतर शास्त्र के समान पद्धति भी चलती है। इसे शास्त्र के बराबर मान्यता नहीं मिलती किन्तु उपयोगिता की दृष्टि से इसमें कोई भी कमी नहीं होती है। यही बात तंत्र विज्ञान में भी है। शाबर मंत्र शाखा की महत्ता को प्राप्त नहीं कर सका पर तंत्र विज्ञान में ठीक बैठ गया इसलिए जन कल्याण हेतु इसका प्रचार प्रसार किया गया। आज भी इसका

प्रभाव है।

जन जातियों यायावर कबीलों के पास शाबर तन्त्र का विपुल रहस्य मिल जाएगा। काला जादू के नाम से जो विद्या असम के आदिवासी लोगों के पास है उसी का परिवर्तित रूप अफ्रीका की जन जातियों तक है। शाबर मन्त्र तन्त्र की शुरुआत मछन्दरनाथ और गोरखनाथ के समय से है। नाथ सम्प्रदाय इसके सबसे बड़े अनुयायी माने जाते हैं।

वामाचार में कौल एक विशेष नाम है जिसे कौलाचार कहते हैं। ये कौल आचार्य आदरणीय हुआ करते हैं। तांत्रिक मन्त्रों के जनक भगवान रूद्र माने जाते हैं। इन अनघड़ (औघड़) मंत्रों के देवता भैरव, काली जैसे हैं और गुरू रूप में मच्छिन्द्रनाथ, गोरखनाथ, जैसे सिद्ध हैं। कई मन्त्रों में इनका नाम तक बोला जाता है। तंत्र जगत में कौलाचार्य एक सम्मानित नाम है।

मारण मोहन आदि षट्कर्मों की छः देवियाँ मानी जाती हैं और किसी भी कर्म के करने से पहले उनकी पूजा करने का विधान है। शाबर मन्त्रों का क्षेत्र उनकी विविधता के कारण कम नहीं है। गोरखनाथ, मछन्दरनाथ जैसे सिद्धों ने इस गूढ़ विज्ञान को साधारण व्यक्ति के लिए उपयोगी स्वरूप दे दिया। शाबर मन्त्रों का रूप विचित्र है। विचित्र इसलिये कि इसमें शुद्ध बीज मन्त्रों के साथ देहाती भाषा की शब्दावली भी उपस्थित रहती है।

शाबर मन्त्रों में संस्कृत, प्राकृत और क्षेत्रीय भाषाओं का प्रयोग प्रचुरता के साथ मिलता है। वास्तव में शाबर मंत्र समग्र तंत्र विज्ञान का सरलीकरण है।

शाबर मंत्रों का सूक्ष्म विश्लेषण करने पर यह तथ्य सामने

आता है कि इनमें श्रद्धा ही प्राण है और इसी के विस्तार एवं दृढ़ता से शाबर तन्त्र अपना प्रभाव दिखलाता है। शाबर मंत्रों में दूसरा प्रभाव सौगन्ध के रूप में भी होता है। उस युग को गये अधिक समय नहीं हुआ जब सौगन्ध एक अमोघ अस्त्र रहा करती थी लेकिन आज हालात बदल गए हैं किन्तु इन मन्त्रों में जिन देवों की आन अथवा सौगन्ध दिलाई जाती है वे आज भी वैसे ही हैं, उन पर समय का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। वेद मंत्रों और तन्त्र में मंत्रों में (सौगन्ध) शपथ नाम की कोई वस्तु नहीं है और न उस युग में इतना अविश्वास ही था कि शपथ जैसी प्रक्रिया का प्रचलन होता। लगता है शाबर मन्त्र के प्रवर्तक मनीषियों ने व्यक्ति की अशक्ति और विवशता को समझकर ही इसका प्रयोग किया। तथ्य यह है कि शाबर मन्त्र केवल षट् कर्मों के लिये हैं अथवा षट् कर्मां तक ही इनकी उपयोगिता है अथवा सामान्य रोगों के लिए इनका प्रयोग सटीक रहता है। सर्व विष निवारण के रूप में भी शाबर मन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। हमारे व्यवहार में टोटका जिसे कहते हैं वह तन्त्र का वास्तविक स्वरूप है।

अवधूत, अघोरी अथवा औघड़ के नाम से प्रसद्धि प्राय: शाबर मन्त्रों के ही ऊपर आश्रित रहते हैं। तन्त्र मार्ग में रज (योनि से छूटा पानी) से भीगा कपास ही नैवेद्य है। शाबर पद्धति वामाचार की शास्त्रीय शैली जितनी उत्कट और उत्कृष्ट नहीं है, न उतनी व्यापक ही है फिर भी यह उससे मिलती-जुलती अवश्य है। शाबर मंत्र स्त्रियां तक सिद्ध कर सकती हैं। मैं तो कहता हूँ स्त्री साधकों को तन्त्र के व्यापक क्षेत्र में केवल शाबर मन्त्र के माध्यम से ही प्रवेश करना चाहिए।

प्राचीन काल में साधक निर्मल था, छल-प्रपंच उसमें नहीं था, बिल्कुल निर्दोष और सरल था। ब्रह्मा और विष्णु जैसे प्रतीक उस युग में सार्थक भी थे और सप्राण भी, किन्तु विकास के साथ-साथ साधक की मनोवृत्ति में सन्देह, ढोंग, चमत्कार, स्वार्थ, अविश्वास, दम्भ, अहंकार जैसी वृत्तियों का उदय हुआ।

चमत्कार को नमस्कार करना आज के युग का नियम है। यह चमत्कार सापेक्षता है। वास्तव में आज का चमत्कार आनन्दपरक नहीं है।

चमत्कार को नमस्कार करने वाले साधक प्रकट रूप से आतंक का आनन्द लेना चाहते हैं किन्तु उससे सुरक्षित रहकर शाबर मन्त्र श्रद्धा को लेकर मन्त्र की सार्थकता सिद्ध कर देते हैं। कुछ मन्त्र इस प्रकार के होते हैं कि उनकी साधना बीच में छूट जाने पर किसी प्रकार का अहित नहीं होता। यह नियम शाबर मन्त्रों पर अवश्य लागू होता है। जो साधक नियम का पालन नहीं कर सकते हैं, वह केवल शाबर मन्त्र साधना ही करें।

शाबर हमें मंत्र ज्ञान की उच्च भूमिका नहीं देता, न वह मुक्ति का माध्यम बनता है। उसमें केवल काम्य प्रयोग हैं। प्रेत-बाधा शांत करने में जहाँ शास्त्रीय प्रयोग कोई तुरन्त या विश्वस्त कार्य नहीं कर पाते वहाँ शाबर मन्त्र अच्छा और पूरा काम करते हैं। उच्चाटन और मारण में भी शाबर मन्त्र सही काम करते हैं।

शाबर मन्त्रों के उद्भव या निर्माण के बारे में दो विधियाँ हैं जो विद्वानों द्वारा बतलाई गई हैं। गुरू गोरखनाथ शाबर मंत्र के जनक हैं। अपनी साधना के कारण वे मंत्र-प्रवर्तक ऋषियों के समान विश्वास और श्रद्धा के पात्र हैं। सिद्ध और नाथ सम्प्रदाय ने मन्त्रों

के मूल सिद्धान्त में तत्व को लेकर बोलचाल की भाषा को मन्त्रों का दर्जा दे दिया। यद्यपि इन मन्त्रों में आन और शाप, श्रद्धा और धमकी दोनों का ही प्रयोग किया जाता है। शाबर मंत्रों में गोरखनाथ, मछन्दरनाथ, भैरव आदि की आन दिलाई जाती है। अधिकांश शाबर मन्त्र टूटी-फूटी हिन्दी में मिलते हैं, शाबर मंत्रों के उर्दू मंत्र भी हैं जो इनकी ही पद्धति पर रचे गये हैं। उनमें इस्माइल जोगी और सुलेमान, अनहल हक जंतान मुख्य माने गये हैं। मुसलमानी मंत्रों की साधना में जुम्मेरात और जुम्मा गुरूवार और शुक्रवार को, पश्चिम की तरफ मुख करे मंत्र जाप को, लोबान की धूप देने को और शीरणी चढ़ाने को केवल मुस्लिम विश्वास और साधना पद्धति के रूप में महत्व दिया गया है साधक चाहे किसी भी धर्म का हो, मुस्लिम मंत्रों की साधना करते समय उन व्यवस्थाओं को माने बिना सफलता नहीं मिलती।

शाबर मन्त्रों के विषय में मेरा अनुभव बहुत है, क्योंकि मैं इनकी खोज में दूर-दूर तक गया हूँ। इसके अलावा अनेक अघोरियों, औघड़ों, अवधूतों से मिला भी हूँ। उनके साथ रहने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है।

शाबर मन्त्रों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये सरलता से सिद्ध हो जाते हैं। शाबर मन्त्रों के सिद्ध गुरू गोरखनाथ हैं इसलिये इसमें गुरू की उतनी आवश्यकता नहीं है, फिर भी साधना करते समय कोई न कोई व्यक्ति अवश्य होना चाहिए।

शाबर मन्त्रों की शास्त्रीयता पर विचार करना बेकार है। केवल उनकी उपयोगिता पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

हमें नाथ सम्प्रदाय का आभारी होना चाहिए कि उन्होंने मन्त्र

की विद्या को सरल-सुगम बनाने के लिए प्रयास किया। उन्होंने केवल तंत्र मंत्र को स्थापित किया। आज हमें इस विद्या को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। मेरा तांत्रिक वर्ग से अनुरोध है वह इस दिशा में प्रयत्न करें और नई खोजें तन्त्र-मन्त्र प्रेमियों के समक्ष रखें।

दैहिक और मानसिक रोगों का निवारण करने के लिए अगर हम कोई मन्त्र सिद्ध कर लें या किसी की अन्य विपत्ति को दूर करने वाला मंत्र हमें सिद्ध हो तो उसके प्रयोग से हम परोपकार का पुण्य लेते हैं। परोपकार के मार्ग से न केवल इहलोक वरन् परलोक भी सुधरता है।

इस प्रकार यह सब अनुपम सत्य है, इसी आधार पर आप इसे ग्रहण करें। आप यह भी अच्छी प्रकार समझ लें और हृदय में भली प्रकार बैठा लें, हमारा यह जीवन सर्वथा अलग नहीं है, वरन् पूर्व जीवन से जुड़ा हुआ है। भारतीय आध्यात्म इसी बात की पुष्टि करता है कि शरीर नश्वर है, परन्तु आत्मा अजर अमर है। अब तो पाश्चात्य विद्वान भी इस बात को मानने लगे हैं। अगर हमें वर्तमान जीवन को सुखमय बनाना है तो आवश्यक है कि हम पिछले जीवन को पहिचानें।

मृत्यु जीवन का अन्त नहीं है, अपितु विश्राम काल है, शरीर का अन्त हो जाता है, वैज्ञानिकों का कहना है कि जब हृदय रक्त को स्वीकार नहीं करता, तब मस्तिष्क शून्य होकर समाप्त हो जाता है, इसी को 'मृत्यु' कहते हैं। परन्तु यह केवल स्थूल शरीर का नाश होना है, इस शरीर से पहले जो हमारा सूक्ष्म शरीर था, उसका ही आगे भी विकास होगा। यह एक सनातन नियम है।

अब यह सिद्ध हो चुका है कि पूर्व जीवन के कर्मों का निश्चित प्रभाव हमारे इस जीवन पर पड़ता है।

पिछले जीवन में जिनसे हमारा सम्बन्ध होता है, जब तक पुनः उनसे मिलना नहीं होता, तब तक आत्मा में छटपटाहट बनी रहती है, ऐसा अनुभव होता है जैसे जीवन में कुछ खाली-खाली सा है, पर उनसे मिलते ही शांति प्राप्त हो जाती है। इसी उद्देश्य और सिद्धांत को लेकर मैंने इस पुस्तक की रचना की है। आत्मा से सम्पर्क को वैज्ञानिक धरातल पर सिद्ध करने का प्रयास किया है। इन्हीं अशान्त आत्माओं, भूत-प्रेतों, अप्सराओं के विषय में अधिक जानने के लिए मेरी पुस्तक 'पराविज्ञान की साधना और सिद्धियाँ' अवश्य पढ़ें।

मन्त्र शाश्वत हैं। हमारे पूर्वजों के पास जो मन्त्रों की असीमित शक्ति थी, वह आज भी है, आवश्यकता है उनकी मूल भावना को समझने की। जब तक मन्त्र को हम भली प्रकार से नहीं समझ लेंगे, तब तक मन्त्र का प्रभाव नहीं हो सकेगा।

हमारे लिए यह दुर्भाग्य की ही बात है कि आज हमारे देश में बहुत ही कम ऐसे लोग बच गये हैं, जो सही प्रकार से मन्त्रों के ज्ञाता हों, या जिन्हें मंत्र का प्रामाणिक ज्ञान हो। मैंने देखा है कि लोग मंत्र को बराबर जपते हैं, परन्तु पाँच-दस लोख मंत्र-जप के बाद भी वे सिद्धि का लाभ प्राप्त नहीं कर पाते, उनका केवल एक ही कथन होता है कि अब मन्त्रों में वह प्रभाव नहीं रहा जो होना चाहिए मेरी निजी विचार भें मन्त्र गुरू मुख ध्वनि है, पुस्तकों से लेकर मंत्र का जप एकदम निरर्थक है।

मनुष्य स्वयं ब्रह्मा है। 'अहं ब्रह्मास्मि' इसी भावना को बतलाता

है। जब वह ब्रह्म से विलग होता है, तभी वह मनुष्य योनि में जन्म लेता है। ब्रह्म में लीन करने का मन्त्र है, 'गायत्री मन्त्र' मूलत: गायत्री ३२ अक्षरों से युक्त हैं, पर जनसाधारण में चौबीस अक्षरों से युक्त गायत्री ही प्रचलित है, इस मन्त्र के द्वारा व्यक्ति निश्चय ही परम तत्व को प्राप्त कर सकता है, जो कि सर्वोच्च सत्ता है।

गायत्री मन्त्र—

'ओं भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो योन: प्रचोदयात्।'

उपर्युक्त मन्त्र २४ अक्षर का है, परन्तु इसकी विशेषता यह है कि लिखते समय यह मन्त्र 'वरेण्यम्' लिखा जाता है, परन्तु उच्चारण करते समय 'वरेणियम्' शब्द उच्चारित होता है। अगर जीवन में शीघ्र पूर्णता चाहें तो साधक को ३२ अक्षरों से युक्त गायत्री मन्त्र का जाप करना चाहिए, इसमें गोपनीय अक्षर निम्न हैं।

'शिवो रजसे शिवातुं'

इस प्रकार यदि साधक ३२ अक्षरों से युक्त गायत्री-मन्त्र का नित्य जाप करे, तो इसके समान अमोघ मन्त्र नहीं है। निश्चय ही ''ओं ह्रीं मम प्राण देह रोम प्रतिराम चैतन्य जाग्रय ह्रीं ओं नम:।'' यह चेतना मंत्र है। यह मन्त्र ही नहीं है, अपितु कुण्डलिनी तक जाग्रत कर देता है।

गायत्री पर मैंने एक 'गायत्री साधना' नामक पुस्तक में पूरी बातें विस्तार से समझाई हैं।

यह सत्य है कि जब जीवन होगा तो इसमें समस्याएँ भी होंगी। 'बगलामुखी मन्त्र' ही ऐसा मन्त्र है जो समस्त जीवन की

समस्त समस्याओं को दूर कर सकता है।

'ओ३म् ह्लीं बगला मुखि सर्व दुष्टानाँ वाचं मुखं पदं।
स्तम्भय जिंह्वा कीलय बुद्धि विनाशय ह्लीं ओं स्वाहा॥'

संसार के समस्त मन्त्रों में यह सर्वाधिक अमोघ मंत्र है। यह मन्त्र मानव-जाति के लिए दैवी वरदान है। इसके अतिरिक्त व्यक्ति तभी शत्रुओं पर हावी हो सकता है, जबकि वह स्वयं सुरक्षित हो। इसके लिए 'नवार्ण मंत्र' है। यह नौ अक्षरों का मन्त्र है। इस मन्त्र की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि साधक को सुरक्षा प्रदान करता है। ऐसे साधक पर तांत्रिक प्रभाव नहीं होता है। मन्त्र निम्न है—

'ऐं ह्लीं क्लीं चामुण्डाये विच्चै।'

तन्त्र को केवल समझने की जरूरत है। तंत्र तो व्यवस्थित ज्ञान को कहते हैं। जनोपयोगी साधना को ही तन्त्र कहा जाता है।

तांत्रिकों के लिए होली दीवाली और ग्रहण का विशेष महत्व है, क्योंकि यह साधना के लिए श्रेष्ठ हैं।

अब मैं कुछ विशिष्ट शाबर मन्त्रों को दे रहा हूँ। शाबर मन्त्र शीघ्र फल देने वाले माने गए हैं। यह तुरन्त प्रभाव युक्त हैं।

## शत्रु नाशक प्रयोग

अगर शत्रु बहुत परेशान कर रहा हो तो इस प्रयोग को किया जा सकता है।

अमावस्या की रात्रि को श्मशान की मिट्टी तथा मुर्दे की भस्म लाकर पुतला बनावें और उसको सिन्दूर से पोत दें, उस पर आक की लकड़ी से शत्रु का नाम लिख दे, और फिर सर्प की

हड्डियों की माला से निम्नलिखित मन्त्र का पचास हजार जप करे, तो निश्चय ही शत्रु मर जाता है।

मन्त्र जप पूरा होने के बाद उस पुतली को किसी स्थान पर जमीन में गाढ़ देना चाहिए, जब तक वह पिण्डी गड़ी रहेगी तब तक शत्रु अनेक कारणों से परेशान रहेगा।

'ओं हं हं हं धृ सिं हुं कालि कालरात्रि अमुकं (शत्रु का नाम) पशु ग्रहा हुं फट् स्वाहा।'

## रोग मिटाने हेतु

दीपावली की रात्रि को निम्न मन्त्र की '५१ मालायें जपें, इसके बाद आक की लकड़ियों से हवन करें, ऐसा करने पर व्यक्ति का रोग समाप्त हो जाता है।

मंत्र निम्न है—

'ओं नमो भगवते शरभसातुवाय सकल रोग संहारिणी चटको इछेकदराय पैशाचिनी दारणाय धे धे शरभाय ग्रसि शरभ सालुवा ग्लौ शरभाय निरोगमाडु मुइल्ल दिद्रे महामायि आशे, महेश्वरे प्राणे प्रलयकालरूद्र पाणे कालभैरव पाणे, निरोग माडु दिद्रे निनग कैलासपति पाणे। ओं गुरुप्रसादश।'

## लक्ष्मी साधना

दीपावली की मध्य रात्रि को भोजपत्र पर केसर से निम्न यंत्र एक कुलड़ी में रख दें, उसके साथ धनिया-हल्दी की गाँठें, एक रुपया तथा छोटी सुपारी रखकर गद्दी के नीचे रख दें तो व्यापार चलता है।

यन्त्र निम्न है—

| | | | |
|---|---|---|---|
| २४ | ३२ | ८ | ७ |
| ६ | ३ | ३८ | २७ |
| ३१ | २५ | ८ | १ |
| ४ | ५ | २६ | ३० |

## वीर साधना

अमावस्या की रात्रि को साधक श्मशान में नग्न बैठकर निम्नलिखित मन्त्र का सर्प की हड्डियों की माला के द्वारा जप करे। पाँच हजार मंत्र जप होते ही वीर प्रत्यक्ष होता है, तब अपने साथ रखी हुई खीर का भोग दे।

मंत्र इस प्रकार है—

'ओं नमो भगवती काल रात्रि कर्मम निलये कांधेश्वरी वीर भद्र वीरमान यात्र आगच्छ आगच्छ हुं।'

## चमत्कारिणी साधना

यह प्रयोग पाँच दिन का है। किसी भी मंगलवार से इस प्रयोग को प्रारम्भ करना चाहिए। प्रातःकाल उठकर स्नान से निवृत्त होकर साधना सम्पन्न करें। इसके बाद मूंगे की माला से निम्न २१

मालाएँ जपें।

मंत्र इस प्रकार है—

'ओं क्लीं मम समस्त शत्रूणां दोषान् निवारय क्लीं फट् स्वाहा।'

## टोना-टोटका दूर करने की साधना

अगर किसी शत्रु ने कोई प्रयोग कर दिया है अथवा टोने-टोटके से लक्ष्मी को बाँध दिया गया है या परिवार पर किसी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग कर दिया हो तो निम्नलिखित प्रयोग से वह दूर हो जाता है।

पूर्णमासी के दिन प्रातःकाल १० बजे से पहले सफेद वस्त्र बिछाकर भोजपत्र पर कुमकुम से निम्नलिखित यंत्र लिखें—

| ० | ० | ० |
|---|---|---|
| ० | ० | ० |
| ० | ० | ० |
| नाम | | |

फिर दिन भर उस यंत्र को उसी स्थान पर रहने दें, दूसरे दिन साफ पानी में धोकर वह जल किसी गिलास या लोटा में ले लें और वह जल छिड़कें तो टोना-टोटका दूर हो जाता है।

## महाकाली साधना

महाकाली कलियुग में शीघ्र फलदायक एवं कामनाओं की पूर्ति में सहायक है। जो साधक इसकी सिद्धि को प्राप्त कर लेता है, उसके जीवन में प्रभाव नहीं रहता है। संसार में यूं तो अनेक साधनाएँ हैं, परंतु काली महाविद्या महत्वपूर्ण और अद्वितीय कही गई है, क्योंकि यह लक्ष्मी, सरस्वती, काली में सर्वप्रथम है।

काली साधना से वाक् सिद्धि तथा इस लोक में मनोवांछित फल प्राप्त करने में साधक सक्षम हो पाता है। इसके अतिरिक्त यह साधना समस्त भोगों को दिलाने में भी समर्थ है, साथ ही काली साधना से मोक्ष भी प्राप्त होता है।

शत्रुओं का मर्दन करने और पूर्ण सुरक्षा के लिए इससे बढ़ कर और कोई दूसरी साधना नहीं।

अतः काली साधना को संसार में अद्भुत और तुरंत सिद्धि देने वाली साधना कहा है।

सही अर्थों में देखा जाये तो काली साधना उत्तम साधना है। इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है।

साधक रात्रि में स्नान कर धुले वस्त्र पहनकर अपने घर में किसी स्थान में काली यंत्र एवं महाकाली चित्र स्थापित करे। काली के सामने पुष्प व प्रसाद चढ़ाकर संकल्प करें कि मैं सिद्धि के लिए काली साधना प्रारम्भ कर रहा हूँ।

प्रथम दिन काली का पूजन कर उसका ध्यान कर मंत्र जप प्रारम्भ कर देना चाहिए। रात्रि को भूमि शयन करना चाहिए भोजन एक समय एक स्थान पर बैठकर करें।

इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करे। मैं 'अमुक' तिथि तक सवा लाख मंत्र जप 'अमुक' कार्य के लिए कर रहा हूँ। ऐसा कहकर हाथ में लिया हुआ जल छोड़ देना चाहिए। इसके बाद नित्य संकल्प करने की जरूरत नहीं है।

### काली ध्यानम्

शवारूढ़ाम्महाभीमांघोरदंष्ट्रा हसंमुखीम्।
चतुर्भुजांखड्गमुण्डवरांभयकरां शिवाम्॥
मुण्डमालाधराँदेवी लोलजिह्वान्दिगंबराम।
एवं सन्चिन्तयेत्काली श्मशानालयवासिनीम्॥

ध्यान के बाद मंत्र का जप प्रारम्भ करें, इस मंत्र को रुद्राक्ष माला से नित्य एक सौ पचास मालाएँ सम्पन्न होनी चाहिए। मंत्र इस प्रकार है—

'क्रीं क्रीं क्रीं हीं हीं हुं हुं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हीं हीं हुं हुं स्वाहा।'

### शून्य साधना

शून्य साधना के लिए पाँच वस्तुओं की आवश्यकता होती है—स्फटिक माला, बिल्ली की नाल, घृत, सफेद सूती आसन, दीपक।

किसी भी रविवार को प्रातःकाल घर के एकांत स्थान में आसन बिछाकर सामने जलपात्र रख दे और घी का दीपक जला ले, फिर केशर से स्वस्तिक चिह्न बना लें, उसके सामने ही बिल्ली की नाल रख दे।

इसके बाद स्फटिक की माला से मंत्र जप प्रारम्भ करना चाहिए। नित्य १०० मालाएँ फेरने का नियम है।

इस साधना में साधक को सात दिन तक केवल दूध पर ही बिताने चाहिए। इसके साथ ही साथ भूमि शयन, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन भी अनिवार्य है।

जब साधना पूरी हो जाय, तब उस काली बिल्ली की नाल को ताबीज में बन्द कर अपनी दाहिनी भुजा पर काले धागे में बाँध ले।

ऐसा करने पर यह साधना सिद्ध मानी जाती है। इसके बाद जब कभी भी कोई आवश्यकता हो तो केवल एक बार मंत्र उच्चारण कर वस्तु की इच्छा की जाती है, तो वह वस्तु तुरन्त उसके सामने आ जाती है।

मन्त्र निम्न है—

'ओं वैताली वैताली इच्छित पदार्थ प्राप्ति क्रीं क्रीं ह्रीं हुं फट्।'

## प्रत्यंगिरा साधना

यह साधना केवल ४१ दिन की है। साधक को यह साधना गुरुवार को पुष्य नक्षत्र में प्रारम्भ करनी चाहिए।

साधक पीले आसन पर उत्तर की ओर मुख कर बैठ जाये सामने कड़वे तेल का दीपक जलाकर माला जप करें, इसमें रूद्राक्ष की माला का ही प्रयोग किया जाता है।

मन्त्र निम्न है।

'ओं ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं वश्यमानाय सम्मोहनाय ह्रीं ह्रीं एं श्रीं फट्।'

जब साधना सिद्ध हो जाये तो अगले चालीस दिनों तक वह माला अपने गले में निरन्तर धारण किये रहे। जब भी प्रयोग करना हो तो चित्र अपनी आँखों के सामने लावे और फिर भावना दें कि यह चौबीस घण्टों के भीतर पूर्णतः मेरे वश में हो और २१ माला मंत्र जप करे पर हर मंत्र के बाद और पहले इस शब्द को अवश्य दोहराये कि 'अमुक मेरे वश में हो' इसे सम्पुटित प्रयोग कहा जाता है। इस प्रकार केवल तीन रात्रि में ही वशीकरण हो जाता है। यह प्रयोग मेरा अनेक बार परिक्षित है। इस प्रयोग के द्वारा घर से गया व्यक्ति भी लौट आता है।

## ज्वालामुखी साधना

साधक को चाहिए सर्वप्रथम निम्नलिखित मन्त्र की इकतीस माला जपकर और ग्यारह सौ एक आहुतियाँ होम की देकर मंत्र सिद्ध कर ले। इसके बाद नित्यप्रति २ माला जाप करता रहे। आवश्यकता अनुभव होने पर साधक ७ दिन रात्रि के समय खुले आकाश के नीचे एक टांग पर खड़ा होकर २ माला जपे! इस साधना से कार्य तुरन्त सिद्ध होता है। आसन में पैर के नीचे ऊनी वस्त्र रखें।

मन्त्र इस प्रकार है—

ओं ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेश्वरी ज्वालामुखी ज्रांभिनी स्थांभिनी मोहिनी वशीकरणी परमन क्षीभीणी सर्वशत्रु निवारिणी ओं औं क्रौं ह्रीं पाहि पाहि अक्षोभ्य अक्षोभय सर्वजनं अमुकं मम वश्यं कुरू कुरू स्वाहा।

## अन्त में...

भूत-प्रतों, डाकिनी, शाकिनी, ब्रह्मराक्षस अथवा अशान्त आत्माओं की प्रामाणिकता पर आज भी आज का पढ़ा लिखा वर्ग विश्वास नहीं करता है, वह इन्हें बहम, बेकार या अर्थहीन मानकर हँसी उड़ाते हैं, पर कुछ लोग आज भी इनका अस्तित्व मानकर इनसे सुरक्षा के साधन अपनाते हैं।

मेरा स्वयं का अनुभव है कि भूत-प्रेत, अशान्त आत्मायें होती हैं। खेद है कि अन्य विद्याओं की भाँति तंत्र विद्या में भी गिरावट आई है। इसका मुख्य कारण है विषय से अपरिचित एवं व्यवसायी व्यक्तियों का इसमें प्रवेश करना ही है। तनिक सोचें, क्या किसी इंजिनियर का दिया बीमारी का प्रमाणपत्र वैध होगा अथवा एक डाक्टर का बनाया गया नक्शा स्वीकार्य होगा? नहीं! लेकिन तन्त्र के क्षेत्र में यही कुछ हो रहा है। आज ज्योतिषी वर्ग यंत्र बना रहे हैं, भूत-प्रेत बाधा शान्त कर रहे हैं! हस्तरेखा विशेषज्ञ जन्म कुण्डलियाँ बना रहे हैं! और तांत्रिक वर्ग रत्न बेच रहा है। स्थिति तब और भी अधिक गम्भीर हो जाती है जब दो पग आगे बढ़कर एक ही व्यक्ति उपरोक्त सारे कार्य करता है। क्या यह एक दूसरे के क्षेत्र में अनाधिकार प्रवेश नहीं है?

एक बात और अगर एक ह्रदय रोग से पीड़ित व्यक्ति या फिर नाक, कान, गले के रोग से परेशान रोगी किसी डाक्टर के पास जाता है और दुर्भाग्यवश वह डाक्टर उन रोगों का विशेषज्ञ नहीं है,

तब वह तुरन्त उसे दूसरे डाक्टर के पास भेज देगा! मान लें एक गंभीर रोग से ग्रस्त रोगी किसी भी डाक्टर के पास जाता है, तब वह डाक्टर तुरन्त अपने परामर्श के साथ उसे हस्पताल भेज देता है, लेकिन तन्त्र-मन्त्र, ज्योतिष, हस्तरेखा, अंक ज्योतिष के क्षेत्र में ऐसा कुछ नहीं है, एक ही व्यक्ति उपरोक्त सभी विषयों का स्वयं को विशेषज्ञ बतलायेगा और पूरा प्रयत्न करेगा कि वह ही उस कार्य को करे! आप तनिक विचार करें कहीं इसके पीछे उस व्यक्ति का उद्देश्य व्यापारिक तो नहीं है?

मेरे निजी विचार में सारा दोष विद्वान का ही नहीं है! इसमें कुछ दोष हमारा भी है। हम जब यह जानते हैं कि अमुक कर्मकांड करता है, या फिर अमुक एक सुप्रसिद्ध ज्योतिषी है तब हम उसी के कार्य क्षेत्र से संबन्धित कार्य लेकर ही जाना चाहिए। इस प्रकार हम न केवल अपना श्रम, समय एवं धन की रक्षा करेंगे, वरन् विद्वान का भी समय नष्ट होने से बचायेंगे! इसके अतिरिक्त कुछ रंगे सियार भी होते हैं, कल तक ज्योतिषी थे आज हस्तरेखा विशेषज्ञ बन गए और अब तन्त्र का क्षेत्र गर्म देखा बन बैठे तांत्रिक! हमें समझ लेना चाहिए जब वह ज्योतिषी थे तब कुछ नहीं कर पाये, केवल धन अर्जित किया, जब वह क्षेत्र निर्बल हो गया, तब हस्तरेखा विशेषज्ञ बन गये, अब तन्त्र का क्षेत्र लाभदायक जानकर उन्हें तांत्रिक बनते देर नहीं लगी ऐसे रंगे सियारों से सावधान रहें। आप उन्हें हतोत्साहित करें।

प्रिय पाठकों! यह तो आज की स्थिति है इसे सुधारने के लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। मेरी यह कृति पूर्ण हो गई है। आप इसे ध्यान पुर्वक पढें और इसमें वर्णित प्रयोगों को समझें तब

ही करें। भूल-चूक असावधानी होने पर हानि के अधिकारी आप स्वयं होंगे।

मैंने इस पुस्तक में नये और पुराने विचारों का समावेश किया है। पुरानी खोजों के साथ-साथ नई खोजों को भी प्रस्तुत किया है। इनमें से जो समय की कसौटी अथवा मेरे अनुभव में सही उतरे हैं, केवल उन्हें ही स्थान दिया गया है।

आपको मेरा यह विनम्र प्रयास कैस लगा? लिखना ना भूलें। आपके पत्रों का उत्तर देना मेरा प्रथम नैतिक दायित्व होगा। धन्यवाद!

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा किंचित दुख भाग्भवेत॥

**तांत्रिक बहल**
(तन्त्र सबके लिए मिशन)
डी-४, राधे पुरी, कृष्णा नगर
(जमुनापार) दिल्ली-११००५१

# रत्न और रुद्राक्ष

*लेखक— तांत्रिक बहल*

प्रत्येक वस्तु वह चाहे निर्जीव हो या सजीव, धातु हो, द्रव्य हो या गैस हो उसका मानव शरीर की रक्त संचार व्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है। शरीर की रक्त संचार प्रणाली ही मनुष्य के क्रिया कलाप, विचार शक्ति और उसकी ऊर्जा को प्रभावित करती है। शरीर का नियन्त्रण और नियोजन करने वाले इसी वैज्ञानिक सिद्धान्त के कारण मनुष्य पर रुद्राक्ष और रत्नों का भी प्रभाव होता है। प्रत्येक मनुष्य की संरचना भिन्न-भिन्न होती है। अत: उसी के अनुसार रत्नों और रुद्राक्ष का मेल बैठता है—इसी तालमेल की वैज्ञानिक विधि पर यह 'रत्न और रुद्राक्ष' प्रस्तुत की जा रही है। प्रत्येक व्यक्ति इससे तदनुकूल लाभ उठा सकता है।

# सुखी जीवन के लिए—टोटके और मन्त्र

*लेखक— तांत्रिक बहल*

**टोटके**—नियमित और परम्परागत ऐसी क्रियाएँ जिनके संतुलित, समयबद्ध और निरन्तर प्रयोग से जटिल समसयाओं का निराकरण एवं असम्भव कार्य को सरल तथा सम्भव बनाया जा सकता है।

**मन्त्र**—पूर्णश्रद्धा और विश्वास से नियम पालन करने पर फलदाई होते हैं। इसमें बेतुकी क्रियायें भी नहीं करनी पड़तीं तथा सरलता से जाप करके उपयोग-प्रयोग कर सकते हैं।

**सुखी जीवन के लिए**—सामान्य जन जीवन में प्रयोग करके जिन टोटकों और मन्त्रों से लाभ प्राप्त किया जा सकता है उनका जांच-परखा संकलन 'तांत्रिक बहल' की ओर से।

प्रकाशक

**रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार**

# सुगम तांत्रिक क्रियायें

*लेखक— तांत्रिक बहल*

दुकानदारी के तन्त्र-मन्त्र से साधारण जनता का विश्वास उठ गया है और प्रबुद्ध वर्ग भी इससे कतराने लगा है। यह सब कुछ पाखण्ड की श्रेणी में इसलिए आ गया है कि लोग आधी-अधूरी जानकारी, आधी सामग्री तथा बिना श्रद्धा और विश्वास के अपवित्रता से अपनी क्रियाओं की पूर्ति करना चाहते हैं। वास्तविकता तो यह है कि मंत्र-तंत्र का सही रूप ही पाठकों के सम्मुख नहीं रखा जा रहा है।

लेकिन प्रस्तुत पुस्तक के पृष्ठों में जीवन के प्रत्येक पहलू को तांत्रिक क्रियाओं के अन्तर्गत देखा समझा गया है और प्रत्येक कार्य सुगमता से सम्पन्न करने के लिए विभिन्न प्रयोग पूर्ण विधि-विधान से करने पर सफल होते हैं।

# पराविज्ञान की साधना और सिद्धियाँ

*लेखक— तांत्रिक बहल*

भूत-प्रेत का अस्तित्व, विवाद और व्यापक चर्चा का विषय है। यह न केवल मनोवैज्ञानिक रूप से होते हैं वरन् अनेकों घटनायें इनके अस्तित्व का प्रमाण हैं। इनका एक आकार (स्वरूप) भी होता है जिनसे सम्पर्क का विधान पराविज्ञान में प्रचुरता से पाया जाता है। इसके उत्पातों को शान्त कर, इनको वशीभूत करके बरपूर लाभ भी उठाया जा सकता है और ये मानसिक साधना द्वारा होता है जिसकी साधना और सिद्धियों के उपाय इस पुस्तक में दिए गए हैं।

प्रकाशक

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार
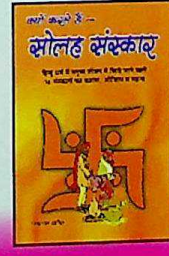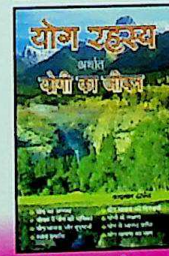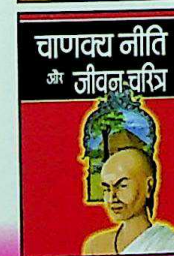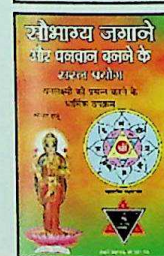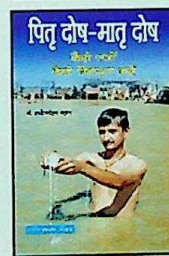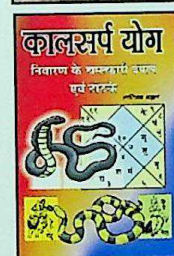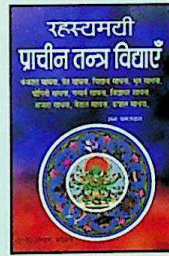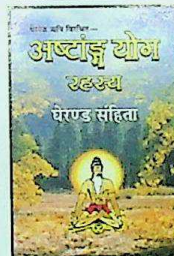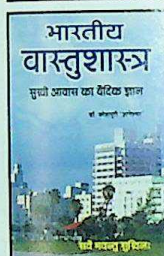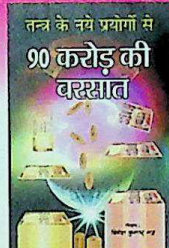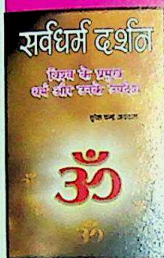
# मन्त्र, तन्त्र, यन्त्र एवं रत्न विषयक पुस्तकें
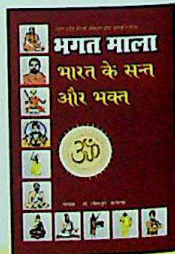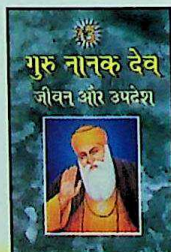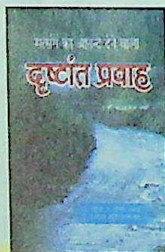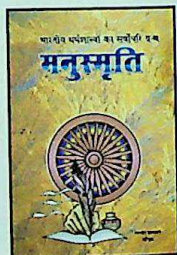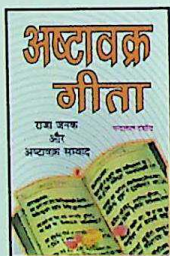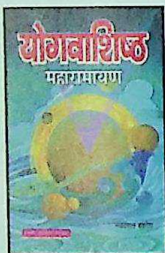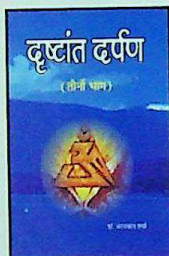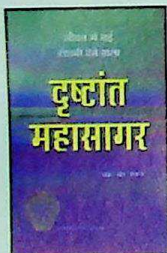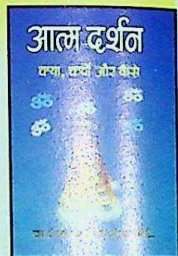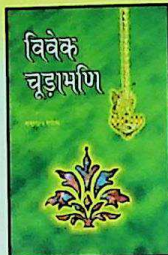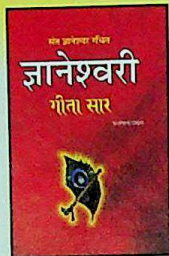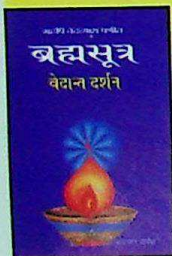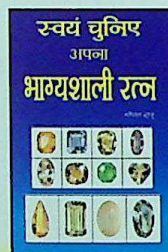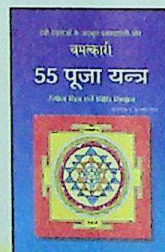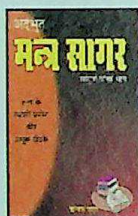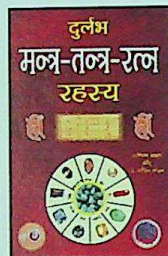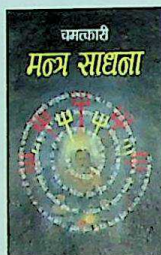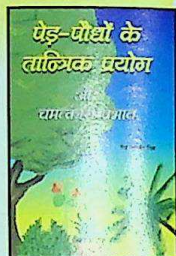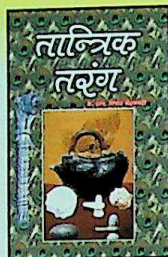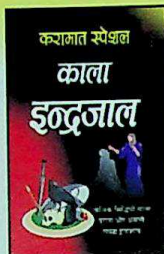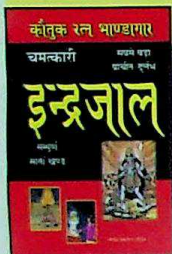
रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार PH: (01334) 226297 MO: 0 9012 1818 20